प्रकाशक—
गंगाशहर निवासी
धनसुखदास हीरालाल आंचलिया।

मुद्रक—
महालचन्द बयेद।
ओसवाल प्रेस।
१९, सीनागोग स्ट्रीट, कलकत्ता।

भूमिका

श्वेताम्बर जैन धर्मावलम्बियों में तेरापन्थी सम्प्रदाय वालों के लिये इस पुस्तक का परिचय प्रदान अनावश्यक है।

प्रातः स्मरणीय श्रीमदाचार्य्य स्वामी भिक्षुजी महाराज एक क्षण जन्मा महापुरुष थे। पुरातन शिथिलाचारों को दूर करके सनातन सत्य प्रकाश के लिये उन्होंने जो सङ्कल्प किया उसको कितनी बाधा विपत्तियां सहते हुए पूर्ण किया सो इस पुस्तक में वर्णन किया गया है।

यह पुस्तक महापुरुष का अलौकिक जीवन वृत्तान्त तो है ही, साथ साथ उनके सम-सामयिक धर्ममतों का पता भी इस से चल सकता है। इस के कर्त्ता श्रीमद् जीतमलजी स्वामी हैं। जो आचार्य्य श्री के चतुर्थ पट्टधर हुए।

भाषा मारवाड़ी है। वर्त्तमान काल के ढंग से यह नहीं लिखा गया है। पर हमारी समझ में यही इसका विशेषत्व है। ऐतिहासिक वा भाषा तत्वविद् पण्डितों के लिये इस पुस्तक का समादर इसी लिये होना चाहिये। क्योंकि कोई धर्म मत के प्रचारक महात्मा की जीवनी उनकी जीवनकालिक घटनावली तथा उनकी उपदेशावली यथा सम्भव उसी समय की भाषा में होने से उसका यथार्थ स्वरूप ठीक २ मालूम हो सकता है।

तेरापन्थी मात्र इस पुस्तक को सादर अपनावेंगे इसमें कोई शङ्का नहीं, परन्तु अन्यान्य मत वाले इस पुस्तक से तेरापन्थी मत के प्रतिष्ठाता के धार्मिक जटिल प्रश्नोंपर सरल व सहज दृष्टान्त द्वारा समाधान की शैली देख के मुग्ध होंगे।

स्थानक वासी सम्प्रदाय से अलग होने के वक्त पूज्यपाद श्रीमद् भिक्षु स्वामी के अनुयायी साधु व श्रावक बहुत ही थोड़े थे। साम्प्रदायिक व धार्मिक मत भेद से भारत के जल वायु के प्रभाव से भीषण ईर्षा द्वेष उत्पन्न होता है, यह इस देश के लोगों का स्वभाव सा ही है। परन्तु प्रबल बाधा के सम्मुखीन होकर जो महापुरुष अपने ध्येय व लक्ष्य पर अटल अचल रहकर पहुंचते हैं वे क्रमशः लोगों के वन्दनीय व नमस्य हो जाते हैं। भारत के या जगत के प्रसिद्ध २ जितने धर्म मत प्रचारक महापुरुष आविर्भूत हुए हैं प्रायशः प्रथम जीवन में उनको विषम बाधाओं का सामना करना पड़ा है। पर यह सब बाधायों उनका अन्तर्निहित अदम्य तेज को अधिकतर प्रज्वलित किया। ज्यों ज्यों बाधायें बढ़ी है त्यों त्यों महापुरुषों के महत्व का अधिकाधिक परिचय मनुष्य मात्र पाकर चकित विस्मित व पुलकित हुए हैं। जो अदम्य अध्यवसाय, दृढ़चित्तता सत्य पर आस्था और अलौकिक भावों से मुग्ध हो उनके भक्तों में सम्मिलित हुए हैं ऐसे दृष्टान्त इतिहास में बहुत मिलते हैं और यह पुनः आचार्य्य प्रवर श्रीमद् भिक्षु स्वामी के जीवन में भी परिस्फुट है।

भारत की आर्य्य-भूमि आध्यात्मिक उन्नति प्रयासी महापुरुषों का आविर्भाव क्षेत्र है। युग युगान्तर से यह बात बार बार सिद्ध हो चुकी है। अवश्य कुछ लोकमान्य महापुरुष नवीन मत के प्रवर्तक होकर अनेक शिष्य व भक्त पाये हैं। और अब भी उन लोगों का मत प्रचलित है। परन्तु जैन धर्म जैसा "अहिंसा" की दृढ़ भित्ति पर स्थापित सनातन शाश्वत धर्म को शताब्दियों का शिथिलाचार से मुक्त करके प्रबल प्रतिद्वन्द्वियों के सामने खड़ा होनेका साहस अकेला भिक्षु

स्वामी ही किया था। सिंह विक्रम से उन्होंने सबका कुतर्क-जाल छिन्न भिन्न करके अपना मत का प्रचार किया। जहां पहले पहल १३ साधु व इतने ही श्रावक थे आज वहां सैकड़ो श्रमण श्रमणी व लाखों श्रावक श्राविका श्री पूज्य भिक्षु स्वामी के मार्ग को अङ्गीकार किये हुये हैं।

जैन आगमोंका रहस्य सरल सुबोध्य भाषा में साधारण मनुष्य के समझाने के उद्देश्य से ढाल दोहा चौपाई आदि नाना छन्दों में आचार्य्य प्रवर के भाषणों का सार संग्रह करके रचा गया है। साधारण अल्प ज्ञान वाले निरक्षर व्यक्ति भी सुललित पद्यबंध धर्म ग्रन्थ को सहज में कण्ठस्थ रख सके इस लिये प्रायशः साधारण जनता में इसका आदर होता है। हिन्दी में तुलसीदासजी की रामायण, बङ्गला में कृत्तिवासी रामायण काशीराम दास का महाभारत, चैतन्य चरितामृत आदि ग्रन्थ जैसा आबाल वृद्ध वनिता आदर की दृष्टि से देखते हैं वैसे ही जैन समाज में भी धार्मिक कथा व उपदेशावली अधिकतर पद्य में ढाल दोहा चौपाई आदिमें होने के सबब आदरनीय है।

इस ग्रन्थ के कर्त्ता परम पूज्य श्री १००८ श्री जीतमलजी स्वामी (जो 'जय गणि" नाम से प्रख्यात है) का संक्षेप में परिचय देना यहां अप्रासंगिक न होगा। अतः आपका शुभ-जन्म "मारवाड़ में रोयट ग्राम में ओसवाल वंश में गोलेछा जाति में सं० १८६० आश्विन शुक्ला २ को हुआ था। श्रीमद् भिक्षु स्वामी का स्वर्गवास १८६० भाद्र शुक्ला १३ को हुआ था। अतः ग्रन्थकर्त्ता श्री मज्जयाचार्य भिक्षु स्वामी के जीवन चरित्र 'जो भिक्षु यश रसायण" नाम से प्रकाशित किया वह प्रमाणिक होने में कोई सन्देह नहीं हो सकता। साधुओं की रीति अनुसार आचार्य्य के जीवन की प्रधान प्रधान घटनावली का उल्लेख करके रखा जाता है इसके अलावे श्रीमद् भिक्षु स्वामी के समसामयिक साधु मुनिराजों से श्रवण करके ग्रन्थ रचा गया इस लिये इसमें वर्णित घटनावली बड़ी ही प्रमाणिक मानी जाती है।

श्री मज्जयाचार्य्य का पाण्डित्य का वर्णना करना मादृश अल्प बुद्धि वालों के लिये असंभव है। इनका रचा हुआ "भ्रम विध्वंसन" ग्रन्थ जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी मत का एक बड़ा ही अमूल्य ग्रन्थ है। तेरापन्थी मत से दूसरे सम्प्रदाय का जो जो वातों में फरक है उसका समाधान शास्त्रीय प्रमाणों से वड़ा ही विस्तार से करके हरएक की शङ्का दूर करने का सहज व सरल उपाय रख गये। आप श्री भगवती सूत्र की भाषा में जोड़ करके अपनी अपूर्व प्रतिभा व पाण्डित्य का निदर्शन रख गये हैं। आपका रचा हुआ लगभग ३—३॥ लाख गाथा होगा इसीसे आप का विद्वत्व कवित्व व पाण्डित्य का सामान्य दिग्दर्शन हो जायगा।

इस ग्रन्थ की भाषा मैंने ऊपर में ही कहा है कि "मारवाड़ी" है। इसलिये शुद्ध संस्कृत वहुल हिन्दी भाषा जाननेवाले इसके वहुत से शब्दों के वर्णविन्यास से चौंक न उठें मारवाड़ी भाषा के अनुसार ही शब्दों के वर्ण विन्यास है। व्याकरण दोष नहीं है।

हिन्दी व वङ्ग-भाषा के विद्वानों से प्रार्थना है कि वे मारवाड़ी भाषा के इए महापुरुष की जीवनी पठन व अध्ययन करके अन्यान्य भाषा के चरित्र ग्रन्थ से इसकी तुलनात्मक समालोचना करें। धर्म मत की परीक्षा के लिये नहीं परन्तु मत प्रचार के जीवन से उनके उपदेशावली से लाभ उठाने के उद्देश्य से अपनावें। जैनमत के खास कर तेरापन्थी सम्प्रदाय के आचार्य तथा साधु महाराजों के वनाये हुए वहुत से ग्रंथ विद्वानों के देखने व मनन करने लायक है। इन ग्रंथों से ऐतिहासिकों को भाषा तत्वविदों को धर्म मत समालोचकों को दार्शनिकों को वहुत सी सामग्री उनके गवेषणा के लिये मिलेगी। तेरापन्थी सम्प्रदाय के वर्त्तमान आचार्य्य श्रीमद् भिक्षु स्वामी के अष्टम पट्टधर परमपूज्य श्री १००८ श्री कालूरामजी स्वामी का व उनके शिष्य वर्ग का दर्शन सेवा करने से अन्य मतावलम्वी विद्वान जैन श्वे० तेरापन्थी सम्प्रदायके अमूल्य ग्रन्थराजि का परि-

चय पा सकेंगे। साथ साथ साधुओं का दैनन्दिन कार्य कलाप व उपदेश व्याख्यान सुन कर कृतार्थ होंगे। जिन महापुरुष की जीवन कथा को दृष्टान्त में रखके जिनका जश रसायण से उत्तरोत्तर अधिकतर पाण्डित्य व प्रतिभाशाली अधिक तर तपस्वी वैरागी, त्यागी मुनिराजों ने वर्तमान में तेरापन्थी सम्प्रदाय को अलंकृत कर रखा है उनके दर्शन की आकांक्षा इस वर्त्तमान पुस्तक के पठन से होगा यह स्वभाविक है। तेरापन्थी सम्प्रदाय केसाधु-मुनिराज संसार से बिलकुल विरक्त रहते हैं। पुस्तकादि कुछ छपवाते नहीं। समस्त ग्रन्थ हस्तलिखित रखते हैं। कोई कोई श्रावक अध्यवसाय पूर्वक उनको कण्ठश कर दूसरा हस्तलिखित प्रति बनवा के पीछे छपाते हैं। श्रीयुक्त महालचन्दजी बड़ा ही परिश्रम व उद्योग करके यह पुस्तक छपाया है। आशा है समाज में तो उनका इस पुस्तक का आदर होगा ही परन्तु दूसरे समाज वाले इसका यथोचित पठन व आलोचना करके इसपर योग्य सम्मतियां देंगे एवं तेरापन्थी समाज के अन्यान्य प्रकाशित हस्तलिखित ग्रन्थराजि पर औतसुक्य प्रगट करेंगे।

निवेदक—

छोगमल चोपड़ा।

संशोधक के दो शब्द ।

इसका प्रथम संस्करण बम्बई के किसी छापाखाने में छपा था। किन्तु अशुद्धियों की भरमार के कारण स्वामीजी की जीवन-कालिक घटणा और शिक्षा-वाक्य ठीक २ समझ में आना एक प्रकार दुर्लभसा हो गया था। ऐसे उपादेय ग्रन्थ की ऐसी दुरावस्था देखकर मैंने विक्रम सम्वत १९८३ में इसका नियमानुसार संशोधन करके श्रीयुक्त बाबू ईशरचन्दजी चौपड़ा, मगन भाई जवेरी, दानचन्दजी चौपड़ा, रायचन्दजी सुराना, कस्तूरचन्दजी सूरजमलजी चौधरी और कुम्भकरणजी टीकमचन्दजी चौपड़े की सद् प्रेरणा और थोक पुस्तकों का आर्डर पाकर इसका द्वितीय संशोधित संस्करण प्रकाशित किया था। यद्यपि इसका सर्वाधिकार ओसवाल प्रेस को स्वरक्षित है। तथापि मैं इस ग्रन्थरत्न का अधिकाधिक प्रचार चाहता हूं। इसीलिये यह सहर्ष तृतीय संस्करण गंगाशहर निवासी श्रावक धनसुखदासजी हीरालालजी आंचलिये की तरफ से प्रकाशित कर रहा हूं।

प्रूफ संशोधन में यथा शक्ति सावधानी से काम लिया गया है, तव भी भूल करना मनुष्य का स्वभाव है। अतः थोड़ी बहुत भूलें मनुष्य से हो ही जाती है। यदि प्रमादवश या मेरी अलपज्ञता के कारण कुछ भूल चूक, या त्रुटियां रह गई हों तो उदार हृदय पाठक मुझे क्षमा करें।

निवेदक—

महालचन्द बयेद।

॥ श्रीजिनाय नमः ॥

भिक्षु यश रसायण ।

॥ दोहा ॥

सिद्ध साधु प्रणमी सखर, आणी अधिक उलास ।
सुख दायक आखूं सरस, चारू भिक्खु विलास ॥१॥
गुणवंतना गुण गावतां उत्कृष्ट रसायण आय ।
पद तीर्थंकर पामिये, कह्यो सु ज्ञाता मांय ॥२॥
शासन वीर तणी शमण, कह्या अधिक अधिकाय ।
गुण बुद्धि तप अरु ज्ञान करि, चउदश सहंस सुहाय ॥३॥
सर्वज्ञ जिन मुनि सप्त सय, अवधि तेर सय आण ।
मन पज्जव सय पञ्च मुनि, चिउंसय वादी पिछाण ॥४॥
पूर्वधर त्रिण सय पवर, वैक्रे सप्त सय वाघ ।
समणी सहंस छतीस शुद्ध, चउदश सय निरुपाधि ॥५॥
सुधर्म्म जम्बू तिलक शिव, अन्य मुनि अमर विमाण ।
हिवडां पञ्चम कालमें, भिक्खु प्रगट्या भाण ॥६॥
चतुर्थ आरा ना मुनि, नयणां देख्या नांय ।
धन २ भिक्खु चरण धर, प्रत्यक्ष दर्शन पाय ॥७॥

किहाँ उपना जन्म्या किहाँ, परभव पद किहाँ पाय।
किया चौमासा किण विधे. सांभलज्यो सुखदाय ॥८॥
चिउंसग सत्तर वर्ष लग, नन्दीवर्द्धन निहाल।
त्यां पीछे विक्रम तणो, साम्प्रत संवत् संभाल ॥९॥

॥ ढाल पहली ॥

सुण बाई म्हारा मणहेलो लागे ॥ ए देशी ॥

सकल द्वीप शिरोमणिरे लाल। जम्बू द्वीप सुतंत। अष्टमी चन्द्रकला इसोरे लाल भरत क्षेत्र भलकंत। भवजीवांरे॥ रूड़ो लागे भिक्खु ऋष-राय। रूड़ो लागे स्वामी सुखदाय ॥१॥ बतीस सहंस देशां मभैरे लाल। नरधाम मरुधर देश। कांठे नगर कंटालियोरे लाल, कमधज राज करेस ॥ २ ॥ साह बलूजी तिहां वसैरे लाल, ओसवंश अवतंस। जाति संकलेचा जाणज्योरे लाल, वड़े साजन सुप्र-शंस ॥३॥ दीपांदे तसु भारज्यारे लाल, सरल भद्र सुखकार। उदरे भिक्खु उपनारे लाल, देख्यो सुपन उदार ॥ ४ ॥ मृगपति महा महिमा निलोरे। पुण्य-वंत सुत सुपसाय। सफल स्वप्न सुखदायकोरे लाल, देखी हरषी माय ॥५॥ यशधारी सुत जन्मियोरे लाल, अनुक्रम अवसर आय। सम्वत् सतरैसे तियासिये रे लाल, पञ्चाग लेखै ताहि ॥ ६ ॥ आषाढ़ सुदी

पख ओपतोरे लाल, तेरस तिथ जणाय। सर्व्व सिद्धा त्रयोदशीरे लाल, कहै जगत् में वाय ॥ ७ ॥ दशां मांहिलो दीपतोरे लाल, नक्षत्र मूल निहाल। पायो चौथो परवरोरे लाल, जन्म थयो तिण काल ॥ ८ ॥ जन्म कल्याण थयां पछैरे लाल, वाल भाव मुकाय। उत्पत्तिया वुद्धि अति घणीरे लाल, विविध मेलवै न्याय ॥ ६ ॥ सुन्दर इक परणया सहीरे लाल, सुख-दाई सुविनीत। भिक्खु ने परभव तणीरे लाल, चिन्ता अधिकी चित्त ॥ १० ॥ केता दिन गछवास्यां कन्हेरे लाल, जाता कुल-गुरु जाण। पाछे पोत्यावंध कन्हेरे लाल, सुणवा लाग्या वखाण ॥११॥ पछै भाख्या रुघनाथजीरे लाल, छोड्या पोत्यावंध। ते हिवडां संजम सरधै नहींरे, न सरधै सामायक संध ॥ १२ ॥ काल कितोक विल्यां पछैरे लाल, शील आदरियो सार। भिक्खु ने तसु भारज्यांरे लाल, चारित्रनी चित्त धार ॥ १३ ॥ लेवां संजम त्यां लगैरे लाल, एकान्तर अव्रधार। अभिग्रह एहवो आदर्योरे लाल, विरक्त पणै सुविचार ॥ १४ ॥ तठा पछै त्रिया तणौरे लाल, पड़ियो ताम वियोग। वर सगपण मिलता वहुरे लाल, भिक्खु न वंछ्या भोग ॥ १५ ॥ दीक्षा ने त्यारी थयारे लाल, अनुमति न दिये माय। रुघ-

नाथजी ने इम कह्योरे लाल, म्हे सिंह स्वप्न देखाय ॥ १६ ॥ तव बोल्या रुघनाथजीरे लाल, सांभल बाई वाय। सिंह तणी पर गूंजसीरे लाल, ए स्वप्नो छै चवदां मांय ॥१७॥ अनुमति मा आपी तदारे लाल, सहंस रोकड़ उन्मान। भिक्खु दिया जननी भणीरे लाल, चारित लेवा ध्यान ॥ १८ ॥ दीख्या महोछव दीपतोरे लाल, बगड़ी शहर वखाण। द्रव्ये चारित्र धारियोरे लाल, भावे चरण म जाण ॥ १९ ॥ सम्वत् अठारै आठै समैरे लाल, घर छोड्यो विप जाण। द्रव्य गुरु धार्‌या रुघनाथजीरे लाल, पिण नाईं धर्म्म नी छाण ॥२०॥ प्रथम ढाल प्रगट पणैरे लाल, कह्यो भिक्खु नो जन्म कल्याण। वलि द्रव्य दीक्षा वरणवी रे लाल, वारुं आगै वखाण ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

अल्प दिवसरे आंतरे, सिख्या सूत्र सिद्धन्त।
तीव्र बुद्धि भिक्खु तणी, सुखदाई शोभन्त ॥१॥
विविध समय-रस वांचतां, वारुं कियो विचार।
अरिहंत वचन आलोचतां, ए असल नहीं अणगार ॥२॥
यां थापिता थानक आदरया, आधाकर्म्मी अजोग।
मोल लिया मांहें रहे, नित्य पिण्ड लिये निरोग। ३॥

पडिलेह्यां विण रहे पड्या, पोथ्यां रा गज पेख ।
विण आज्ञा दीक्षा दिये, विवेक विकल विशेष ॥४॥
उपधि वस्त्र पात्र अधिक, मर्य्यादा उपरन्त ।
दोष थापे जाण जाण ने, तिणसूं ऐ नहीं सन्त ॥५॥
सरधा पिण साची नहीं, असल नहीं आचार ।
इण विध करे आलोचना, पिण द्रव्य गुरु सूं अति प्यार ॥६॥
पूछ्यां जाब पूरो न दे, काल कितो इम थाय ।
पीत द्रव्य गुरुसूं परम, ते करे शोभ सवाय ॥७॥
पूछे बात आचारनीं, जाणे वैरागी जेह ।
तिण सूं पूछे वलिवली, पिण नहीं ओर सन्देह ॥८॥
पटधारक भिक्खु प्रगट, हद आपस में हेत ।
इतले कुण विरतन्त हुवो, सुणज्यो सहू सचेत ॥९॥

॥ ढाल २ जी ॥

परभवो मन में चिन्तवै मुभ आंग ॥ पदेशी ॥

इह अवसर मेवाड में, राज नगर सुजाण। राज समुद्र पासे वस्यो, अधिका त्यां आइठाण ॥ १ ॥ त्यां वस्ती घणी महाजनां तणी, जाण सूत्रांना जेह। वंदणा छोडी निज गुरु भणी, दिल में पड़ियो संदेह। मुरधर में रुघनाथजी ॥ २ ॥ सांभली सहु वात, भिक्खु ने तिहां भेजिया। शङ्का मेटण साख्यात ॥ ३ ॥ बुद्धिवंत विण भ्रम ना मिटै, तिण सूं थे बुद्धि-

वान। जाय शङ्का मेटो जेहनीं, इम कहि मेल्या ते स्थान ॥ ४ ॥ टोकरजी हरनाथजी, वीरभाणजी साथ। भिक्खु आप भारीमालजी, दीक्षा दी निज हाथ ॥ ५ ॥ ऐ साथ लेई भिक्खु आविया, राज नगर मझार। सम्वत् अठारैं पनरैं समैं; चौमासो गुणकार ॥ ६ ॥ चूंप धरो चरचा करी, भायांथी तिण वार। ते कहै वात भिक्खु भणी, आप देखो आचार ॥ ७ ॥ आधाकरमी-थानक आदस्या, मोल लिया प्रसिद्धि। उपधि वस्त्र पात्र अधिकही, आ पिण थे थाप कीधी ॥ ८ ॥ जाण किंवाड़ जड़ो सदा इत्यादिक अवलोक। म्हे वन्दना करां किण रीतसूं, थेतो थाप्या दोष ॥ ९ ॥ द्रव्य गुरुनो वैण राखवा, भिक्खु बुद्धिना भण्डार। अकल चतुराई करी तदा, दिया जाव तिवार ॥ १० ॥ कला विविध केलवी करी, त्यांने पगां लगाया। ते कहै शंक मिटी नहीं, पिण निसुणो मुझ वाया ॥ ११ ॥ आप वैरागी बुद्धिवन्त छो, आपरी परतीत। तिण कारण वन्दना करां, आप जगत में वदीत ॥ १२ ॥ इम कहिने वन्दना करी, इह अवसर मांय। भिक्खु रे असाता वेदनी, उदय आवी अथाय ॥ १३ ॥ अधिक ताव अति आकरो, सीओदोहरो सहणो। उत्तम नर ने ते

अवसरे, रूड़े चित रहणो ॥ १४ ॥ अधम पुरुष दुःख उपनां. करै हायतराय। समचित्त वैदन ना सहै, पापे पिण्ड भराय ॥ १५ ॥ तीव्र तापनी वेदना, भिक्खु ने अधिकाय। तिण अवसर में आविया, एहवा अध्यवसाय ॥ १६ ॥ म्हे साचां ने तो झुठा, किया, श्री जिन वचन उठाय। आउ आवे इह अवसरै, तो माठी गति पाय ॥ १७ ॥ द्रव्य गुरु काम आवै कदी, तो हिवे वात विचारूं। कारण मिटियां निर्पक्षसूं, साचो मारग धारूं ॥ १८ ॥ जेम सिद्धन्त में जिन कह्यो, चूंपधरी तिम चालूं। काण न राखूं केहनी, झट जिन मारग झालूं ॥१६॥ एहवो अभिग्रह आदर्यो, भिक्खु ताव मझार। उत्तम पुरुष ने आवै घणो, भय परं भवनो अपार ॥ २० ॥ दूजी ढाले आविया, राज नगर सुरीत। आंख अभ्यन्तर उघड़ी, निर्मल धारी नीत ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

तुरत ताप तव उतर्यो, विधसूं कियो विचार।
हिवै साचो मत आदरी, करूं आतम तणो उद्धार ॥१॥
रखे चूक लागेलां मो भणी, तो करणी पकी पिछाण।
इम चिंतवि सिद्धंतने, वांच्या अधिक सुजाण ॥२॥

जो साचा ने झूठा कहूं, तो परभवरे मांय ।
जीभ पामणी दोहिली, विविध पणें दुख पाय ॥३॥
पख राखी द्रव्य गुरु भणी, जो कहूं सांचा सोय ।
तो पिण परभवने विषे, काम कठिन अति होय ॥४॥
ओ दूधारोखांडो अछै, एहवो मन में धार ।
दोय वार सूत्रां भणी, वांच्या धर अति प्यार ॥५॥
सूत्र विविध निर्णय करी, गाढी मन में धार ।
सम्यक्त चारित विहुं नहीं, एहवो कियो विचार ॥६॥
गायां ने भिक्खु भणो, थे तो साचा सोय ।
म्हे झूठा गुरु सूं मिली, शुद्ध मग लेस्यां जोय ॥७॥
गाया सुण हरख्या घणा, बोल्या एहवी वाय ।
अब म्हारी शंका मिटी, दिल में रही न कांय ॥८॥
प्रतीत आप तणी हुंती, जिसी म्हांरा मन मांय ।
तिसी दिखाडी तुरत ही, इम कही हरषित थाय ।९।

॥ ढाल ३ जी ॥

(राणी भाषै सुणरे सूड़ा ॥ एदेशी ॥)

राजनगर थी कियो विहार । चौमासो उतरियां सार । आवै मुरधर देश मझाररे । मन प्यारा भिक्खु यश रसायण सुणिजै ॥ १ ॥ साधां में सहु वात सुणाई, सरधा किरिया ओलखाई । ते पिण सुण हरख्या मन मांहिरे ॥ २ ॥ टोकरजी हरनाथजी ताय

भारीमाल घणा सुखदाय। समझी लागा पूजरे पाय रे॥ म०॥ ३॥ वीरभाणजी पिण तिणवार। आदस्या भिक्खु वयण उदार। आवै सोजत शहर मझार रे॥ मा०॥ ४॥ वीचै गाम नान्हा जाणी सोय। दोय साथ किया अवलोय। सीख इण पर दीधी जोयरे॥ म०॥ ५॥ वीरभाणजी ने कहै वाय। जो थे पहिलां जावो गुरु पाय। तो या वात म करज्यो कांय रे॥ म०॥ ६॥ पहिलां वात सुण्यां भिड़काय। मनखञ्च हुवै मन मांय। तो पछै सम-झाया दोरा जाय रे॥ म०॥ ७॥ नेम तो ते आपां रा गुरु है। मन खंच्यां समझणा दुकर है। विग-ड़ियां पछै काम न सरहै रे॥ म०॥८॥ कला विनय करी हूं कहस्यूं। दिल श्रद्धा वैसाड़ी देसूं। युक्ति सूं समझाई लेसूं रे॥ म०॥ ९॥ स्वामी एम त्यांने समझाया। वीरभाणजी आगूंच आया। रुघनाथजी सोजत पाया रे॥ म०॥ १०॥ करजोड़ी ने वन्दना कीधी। पूछै द्रव्य गुरु प्रसिद्धि। भायांरी शङ्का मेट दीधी रे॥ म०॥ ११॥ वीरभाणजी वोल्या वायो। भाया तो साचो भेदज पायो। मन शङ्क हुवै तो मिटायो रे॥ म०॥ १२॥ आधाकर्मी थानक अशुद्ध आहार। विन कारण नित्यपिण्ड वार। आपें भोगवां

ए अणाचार रे ॥ म० ॥ १३ ॥ वस्त्र पात्र अधिका सेवां। बिन आगन्या दीख्या देवां। विवेक विकल ने मूंड लेवां रे ॥ म० ॥ १४ ॥ दिन रात्रि में जड़ां किंवाड़। इत्यादिक बहु दोप विचार। त्यांरी थाप आपांरे धार रे ॥ म० ॥ १५ ॥ भाया तो कहे साची साख्यात। तिणमें झूठ नहीं तिलमात। द्रव्य गुरु निसुणी ए बात रे ॥ म० ॥ १६ ॥ द्रव्यगुरु कहे यूं कांई बोलै। वीरभाणजो पाछो झखोले। कूड़ो तो भिक्खु पास अतोल रे ॥ म० ॥ १७ ॥ म्हारे कन्हें तो बानगी तास। कूड़ो रास भीखणजी पास। इम सांभल हुवा उदास रे ॥ म० ॥ १८ ॥ वीरभाणरे नहीं समाही। तिणसूं आगूंच बात जणाई। हिवै आया भिक्खु ऋषराई रे ॥ म० ॥ १९ ॥ तंत ढाल कही ए तीजी। वीरभाण नी बात कहीजी। ऋप भिक्खु नी बात रहीजी रे ॥ म० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

हिव भिक्खु द्रव्य गुरु भणी, वन्दे वेकर जोड़।
माथे हाथ दियो नहीं, चश्मा देख्या ओर ॥१॥
जब भिक्खु मन जाणियो, आगूंच आली बात।
पहिली मनड़ो फिर गयो, तो पूछूं साख्यात ॥२॥
कर जोडी ने इम कहे, यूं क्यूं स्वामी नाथ।

चित्त उदास तिण कारणे, माथे न दियो हाथ ॥३॥
द्रव्य गुरु भाखे तांहरे, शंक पड़ी सुविचार।
तिण सूं कर शिर ना दियो, मन पिण फाटो धार ॥४॥
वलि थारे ने मांहरे, मेलो नहीं आहार।
वचन सुणी भिक्खु कहे, शंक मेटो इहवार ॥५॥
वलि भिक्खु मन चिन्तवे, म्हांमें थांमें जाण।
संजम समगत को नहीं, पिण हिवड़ा न करणी ताण ॥६॥
प्रायश्चित लेई एहने, यूं प्रतीत उपजाय।
पछे स्वपर समझायने, आणूं मारग ठाय ॥७॥
इम चिन्तव द्रव्य गुरु भणी, बोलि एहवी वाय।
शंक जाणो तो मुझ भणी, प्रायश्चित दो सुखदाय ॥८॥
इम प्रतीत उपजायने, भेलो कियो आहार।
हिवे समझावे किण विधे, ते सुणज्यो विस्तार ॥९॥

॥ ढाल ४ थी ॥

(हे राणी ने हो समभावे पण्डिता धाय एदेशी)

हिवे द्रव्य गुरुने हो समझावे भिक्खु स्वाम। निसुणो वात अमाम। सूत्र वयण दिल सरदहो ॥ १ ॥ अरि अघ हणिवे हो देव कह्या अरिहन्त। गुरु जाणो निग्रन्थ। धर्म्म जिनेश्वर भाखियो ॥ २ ॥ साची सरधा हो ए जाणो तंत सार। पावे तिण सूं पार। आज्ञा वारे धर्म को नहीं ॥ ३ ॥ या तीनूं में

हो भेल म जाणो लिगार। अन्तर आंख उघार। सूत्र सीख सरधो सही ॥ ४ ॥ और वस्तु में हो भेल पड़ै जो आय। तो रूड़ी पिण विगड़ाय। तो पुन्य पाप भेला किम हुवै ॥ ५ ॥ अशुभ जोगां सूं हो बंधै पांप एकन्त। शुभ सूं पुण्य बधन्त। पुण्य पाप भेला किसा जोग सूं ॥ ६ ॥ एके करणी हो बंधै पुन्य के पाप। तिणमें मिश्र म थाप। करणी तीजी जिण ना कही ॥ ७ ॥ भिक्खु भाखै हो द्रव्य गुरुने अवलोय। जिन वच साहमो जोय। म्रही टेक ने परिहरो ॥ ८ ॥ शुद्ध श्रद्धा हो हाथ न आई श्रीकार असल नहीं आचार। थाप दीसै घणा दोपरी ॥ ६ ॥ जो थे मानो हो सूत्र नी वात। तो थेइज म्हारा नाथ। नहिंतर ठीक लागे नहीं ॥१०॥ म्हे घर छोड्यो हो आतम तारण काम। और नहीं परिणाम। तिण सूं वार.वार कहूं आपने ॥ ११ ॥ आप मानो हो स्वामी सूत्रा नी बात। छोड़ देवो पक्षपात। इक दिन परभव जावणो ॥ १२ ॥ पूजा प्रशंसा हो लही अनन्ती वार। दुर्लभ श्रद्धा श्रीकार। निर्णय करो आप एहनो ॥ १३ ॥ विविध विनय सूं हो आख्या वयण उदार। मान्या नहीं लिगार। क्रोध करी उलटा पड्या ॥ १४ ॥ भिक्खु भारी हो स्वामी बुद्धि

ना भराडार। मन सूं कियो विचार। ए हिवड़ां न दीसै समझता ॥ १५ ॥ धीरे २ हो समझावस्यूं धर पेम। आप विचारी एम। तिरण सूं आहार पाणी तोड्यो नहीं ॥ १६ ॥ भिक्खु भाखै हो भेलो करां चौमास। चरचा करस्यां हिमास। साच झूठ निर्णय करां ॥१७॥ साची सरधा हो आदरस्यां सुख दाय। झुठी देस्यां छिटकाय। तव बोल्या रुघनाथ जी ॥ १८ ॥ म्हारा साधां ने हो तूं लेवै फंटाय। जो चौमासो भेलो थाय। भिक्खु कहै राखो जद वाज ने ॥ १९ ॥ ते चरचा में हो समझै नहीं लिगार। करो चौमासो श्रीकार। दुर्लभ सामग्री ए लहो ॥ २० ॥ इण विध कीधा हो भिक्खु अनेक उपाय। तो पिण नाया ठाय। कर्म घणा तिण कारणे ॥२१॥ वलि मिलिया हो भिक्खु दूजी वार। बगड़ी शहर मझार। आय द्रव्य गुरुने इम कहै ॥ २२ ॥ स्वामी भूला हो शुद्ध श्रद्धा आचार। मनमें करो विचार। विविध प्रकारे समझाविया ॥ २३ ॥ पिण नहीं मानी हो द्रव्य गुरु बात लिगार। जाण लियो तिणवार। ए तो न दिसै समझता ॥ २४ ॥ निज आतम नो हो हिव हूं करूं निस्तार। एहवी मन में धार। आहार पाणी तोड़ निसस्या ॥ २५ ॥ चौथी ढाले हो आख्यो

चरचा सरूप। आछी रीत अनूप। आगल बात सुहामणो ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

थानक वारे निसरया, तडके आहारज तोड़ ।
जब द्रव्यगुरु मन जाणियो, बात हुई अति जोर ॥१॥
रहिवा जागां ना मिलै, तो फिर थानक आय ।
सेवक फिरियो शहर में, जागां म दीज्यो काय ॥२॥
जो रहिवा भिक्खु भणी, जागां दीधी जाण ।
सर्व साथ सुणज्यो सही, संघ तणी छै आण ॥३॥
फड़ली कुबुद्धिज केलवी, आसी पाछा एम ।
जब भिक्खु मन जाणियो, करियो विचार केम ॥४॥
पुर में जागां ना दिये, जो फिर थानक जाय ।
तो पाछो फन्द में पड़ूं, दुखे निसरणो थाय ॥५॥
एहवी करे विचारणा, विहार कियो तिण वार ।
शूरवीर सिंह नी परे, न डरया मूल लिगार ॥६॥
आया बगड़ी बारणे, बायल अधिक विशेष ।
घाजी तब पग थांभिया, भिक्खु परम विवेक ॥७॥
जैतसिंहजी री जिहां, छत्रयां अधिक उदार ।
देखी ने आया जिहां, बैठा छत्र्यां मझार ॥८॥
पुर मांहे जाणयो प्रगट, सुणयो द्रव्य गुरु सोय ।
आया छतयां ने विषे, साथे बहुला लोय ॥९॥

॥ ढाल ५ मी ॥

(राम कहै सुग्रीवने रे लङ्का केतियक दूर एदेशी)

वगड़ी री छत्र्यां मझेरे, बहु लोक-बोलै इम वाय। टोलो छोड़ो मत निकलोरे। धैर्य धरो मन मांय। चतुर नर भिक्खु बुद्धि ना भण्डार॥ १॥ रुघनाथजी इसड़ी कहै रे, थे मानो भीखणजी बात। अबारुं आरो पांचमूं रे, नहीं निभोला साख्यात॥ च०॥ २॥ भिक्खु बलता भाखै भलो रे, म्हे किम मानां तुझ बात। म्हें सूत्र वांच निर्णय कियो रे, शङ्का नहीं तिल मात॥ च०॥ ३॥ तीर्थ श्रीजिनवर तणो रे. छेहड़ा तांई विचार। श्री जिन आणा सिर धरी रे, शुद्ध पालस्यूं संजम भार॥ च०॥ ४॥ ए बचन सुणो द्रव्य गुरु भणी रे, तूटी आश तिवार। मोह आयो तिण अवसरै रे, चिन्ता हुई अपार॥ च०॥ ५॥ सामजी ऋष नो साध थो रे, उदैभाण कहै एम। टोला तणा धणी बाजने रे, आंसू पच करो केम॥ च०॥ ६॥ किणरो एक जावै तरै रे, आवै फिकर अपार। म्हांरा पांच जावै सही रे, गण में पड़ै विगाड़॥ च०॥ ७॥ मोह देखी द्रव्य गुरु भणी रे, दृढ़ चित्त भिक्खु धार। मैं घर छोड्यो तिण दिने रे, मुझ माता रोई अपार

॥ च० ॥ ८ ॥ भागलां भेलो हूं रहूं रे, तो परभव में पेख। विविध परे रोवणुं पड़ें रे, पामें दुःख विशेष ॥ च० ॥ ६ ॥ कठिन छाती इण विध करी रे, वारुं ज्ञान विचार। सेंठा रह्या तिण अवसरें रे, उत्तम जीव उदार ॥ च० ॥ १० ॥ द्वेष स्यूं तुरत नर ना डीगेरें, राग दे तुरत चलाय। द्रव्य गुरु मोह आणयो सही रे, पिण कारी न लागी कांय ॥ च० ॥ ११ ॥ फिर वोल्या रुघनाथजी रे, जासी कितियक दूर। आगो थांरो ने पूठो मांहरो रे, लोक लगावस्यूं पूर ॥ च० ॥ १२ ॥ परीषह खमण री मुझ मन मझें रे, भिक्खु भाखैं विशाल। इम तो डरायो नहीं डरूं रे, जीवणुं कितोएक काल ॥ च० ॥ १३ ॥ विहार कियो वगड़ी थकी रे, द्रव्य गुरु लारें देख। चरचा करी वड़लु मझें रे, सांभलज्यो सुविशेष ॥ च० ॥ १४ ॥ रुघनाथजी इसड़ी कहै रे, सांभल भिक्खु वात। पूरो साधपणुं नहीं पलै रे, दुखमकाल साख्यात ॥ च० ॥ १५ ॥ भिक्खु कहै इम भाखियो रे, सूत्र आचारांग मांय। ढीला भागल इम भाखसीरे, हिवड़ां शुद्ध न चलाय ॥ च० ॥ १६ ॥ वल संघयण हीणा घणा रे, पञ्चम काल प्रभाव। पूरो आचार पलै नहीं रे, नहिं उत्सर्ग प्रस्ताव ॥ च० ॥ १७ ॥ आगूंच

जिनजी भाखियो रे, इम कहसी भेषधार। ए जाब सुणी रुघनाथजी रे; कष्ट हुवा तिणवार॥ च०॥ १८॥ गुरु चेलांरे हुई घणीरे, चरचा मांहों मांय। संक्षेप मात्र कही इहां रे, पूरी केम कहाय॥ च०॥ १९॥ द्रव्य गुरु कहे भिक्खु भणी रे, दोय घड़ी शुभ ध्यान। चोखो चारित्र पालियां रे, पामें केवल ज्ञान ॥ च०॥ २०॥ भिक्खु कहैं इण विध लहै रे, वे घड़ी केवल ज्ञान। तो दोय घड़ी तांई रहूं रे, श्वाश रुंधी धरूं ध्यान॥ च०॥ २१॥ प्रभव सिज्जंभव आदि दे रे, वे घड़ी पाल्यो के नाहिं। केवल त्यांने न उपनो रे, सोच विचारो मन मांहि॥ च०॥ २२॥ चवदै सहंस शिष्य वीरना रे, सात सौ केवली सोय। तेर सहंस ने तीन सौ रे, छद्मस्थ रहिया जोय॥ च०॥ २३॥ त्यांने केवल नहीं उपनो रे, त्यां वे घड़ी पाल्यो के नाहिं। थारे लेखे त्यां पिण नहीं पालियो रे, वे घड़ी चरण सुहाय॥ च०॥ २४॥ बारै वर्ष तेरह पखे रे, वीर रह्या छद्मस्थ। थारे लेखै त्यां पिण नहीं पालियो रे, दोय घड़ी चारित॥ च०॥ २५॥ इत्यादिक हुई घणी रे, चरचा मांहों मांहि। समझाया समझ्या नहीं रे, किया अनेक उपाय॥ च०॥ २६॥ पत्र ढाल कही पांचमी रे, चर्चा विविध प्रकार।

हिव भिक्खु किण रीत सूं रे, करै आतम नो उद्धार॥
चतुर नर सांभलो भिक्खु विलास॥ २७॥

॥ दोहा ॥

द्रव्य गुरु तो समझ्या नहीं, खप बहु कीधी ताहि।
जैमलजी काका गुरु, आया त्यांरि पाहि॥ १॥
भद्र सरल प्रकृति भली, जैमलजी री जाण।
भिक्खु तास भली परै, समझावे सुविहाण॥२॥
जैमलजी रे युक्ति सूं, दी सरधा बैसार।
भिक्खु रे साथे भला, ते पिण हो गया त्यार॥३॥
बात सुणी रुघनाथजी, भांग्या तसु परिणाम।
फकीर वालो दुपट्टो हुसी, न हुवै थांरो नाम॥४॥
बुद्धिवन्त साधु साधवी, लेसे त्यांनि लार।
लाडे कोडे घर छोडिया, थोर होसी निराधार॥५॥
थाने रोसी सहु जणा, थे म विचारो बात।
थारे बहु परिवार छै, घणा तणा थे नाथ॥६॥
थांरा साधां रा जोग सूं, होसी भिक्खु रो काम।
टोलो भिक्खु रो बाजसी, थारो न हुवै नाम॥७॥
इत्यादिक वचनां करी, पाड्या तसु परिणाम।
तब जैमलजी बोलिया, सुणो भीखणजी स्वाम॥८॥
गला गिलो हूं कर गयो, थे शुद्ध पालो सोय।
पंडितां रे जाणी वर्ते, इम बोल्या अवलोय॥९॥

॥ ढाल ६ ठी ॥

(सुण सुण रे शिष्य सयांणा एदेशी)

शिष्य भिक्खु ना महा सुखकारी। भारीमाल सरल भद्र भारी॥ त्यांरो तात कृष्णोजी तास। चेहु घर छोड्या भिक्खु रे पास॥ सुण सुणरे शिष्य सयाणा रूड़ो भिक्खु जश रसायणा॥ भिक्खु जश रस अमृत भारी। शिव सम्पंति सुख सहचारी॥ १॥ आसरै दशमें वर्ष आया। भारीमाल सरल सुखदाया॥ भेषधार्‍यां माहि छता सोय। सुत तात भिक्खु शिष्य होय॥ सु०॥ २॥ त्यांरे चेला तणी छै रीत। तिण सूं शिष्य किया धरि प्रोत॥ त्यांमें रह्या आसरै वर्ष चार। पछै निसरिया भिक्खु लारै॥ सु०॥ ३॥ कृष्णाजी री प्रकृति करड़ी जाणी। भारीमाल भणो वदै वाणी॥ संजम लायक नहीं तुझ तात। तुम तो उत्तम जीव विख्यात॥ सु०॥ ४॥ आपां नवी दीख्या लेस्यां सोय। लागू होतां दिसै वहु लोय॥ आहार पांणी वचनादिक ताय। कृष्णा जोने दुक्कर अधिकाय॥ सु०॥ ५॥ तुझ मन मुझ पास रहिवा रो। के निज जनक कन्है जावारो॥ इम पूछयो भिक्खु धर प्रेम। भारीमाल उत्तर दियो एम॥ सु०॥ ६॥ म्हारे तात थकी कांई काम। हूं तो

आप कन्हें रहस्यूं ताम ॥ संजम पालस्यूं रूड़ी रीत । मोने आप तणी परतीत ॥ सु० ॥ ७ ॥ कृष्णाजीने भिक्खु कहै ताम । थांसूं मूल नहीं म्हारे काम ॥ चारित्र पालणो दुक्कर कार । तिण सूं थाने न लेवां लार ॥ सु० ॥ ८ ॥ कृष्णोजी कहै मोने न लेवो । तो म्हारो पुत्र मो ने सूंप देवो ॥ सुत ने राख सूं मुझ साथ । इण ने लेजावा न देऊं विख्यात ॥ सु० ॥ ९ ॥ भिक्खु कहै पुत्र ए थांरो । आवै तो न वरजां लिगारो ॥ जब आयो भारीमाल पास । और जागां लेईगयो तास ॥ सु० ॥ १० ॥ भारीमाल पिताने भाखै । कृष्णाजो री काण न राखै ॥ थांरे हाथ तणु अन पाण । म्हांरै जाव जीव पचखाण ॥ सु० ॥ ११ ॥ भारीमाल अभिग्रह कीधो भारी । दिन दोयं निसरया तिवारी ॥ रह्या सुरगिर जेम सधीरा हलुकर्मी अमुलक हीरा ॥ सु० ॥ १२ ॥ तब बाप थाको तिण वार । भिक्खु ने आण सूंप्यो उदार ॥ थांसूं इज राजी छै एह । म्हांसूं तो नहीं मूल सनेह ॥ सु० ॥ १३ ॥ इण ने आहार पाणी आण दीजै । रूड़ा जतन करी राखीजै ॥ म्हांरी पण गति कांइक कीजै । किण ही ठिकाणै मोने मेलीजै ॥ १४ ॥ थे नहीं लियो संजम भारो । जितरे करो ठिकाणो

म्हांरो ॥ भिक्खु सूंप्यो जैमलजीने आण । जैमलजी हरष्यां अति जाण ॥ सु० ॥ १५ ॥ जैमलजी बोल्या तिणवारो । देखो भीखणजी री बुद्धि भारी ॥ सूंप्यो कृष्णोजी म्हाने सोय । तीन घरां वधावणा होय ॥ सु० ॥ १६ ॥ कृष्णो हर्ष्यो ठिकाणे हूँ आयो । म्हे पिण हर्ष्या चेलो एक पायो ॥ भिक्खु हर्ष्या टलियो गालो । तीनां घरां वधावणा म्हालो ॥ सु० ॥ १७ ॥ भारोमालरो सङ्कट टलियो । मन वाञ्छत कारज फलियो ॥ छट्ठी ढाल भारीमाल भारो । रह्या अडिग अचल गुणधारी ॥ सु० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

हिव भिखु भारीमालजी, संत आदि दे तेर ।
मनसोचो मोटो कियो, चारित लेणो फेर ॥ १ ॥
शहर जोधाणा में सही, तेरह श्रावक ताहि ।
सामायक पोसा करी, बैठा बाजार रे मांहि ॥२॥
फतेचन्द सिंघी प्रगट, दीवाण पद दीपंत ।
चोहटे देख्या चालता, प्रत्यक्ष तब पूछंत ॥ ३ ॥
सामायक पोसा सखर, कीधा चोहटे केम ।
थानक में क्यूं ना किया, उत्तर आपो एम ॥४॥
तज थानक मन थिर कियो, मुझ गुरु महिमावंत ।
भिक्खु आप भारी घणां, परहर दियो कुपंथ ॥५॥

कहे दीवाण किण निसाया, वलि श्रावक थोतंत ।
बात घणी विरला हुवे, जब सुणजो धर संत ॥६॥
दीवान कहे विरला अबहि, पर्णनो सगली बात ।
श्रावक तब भारी सकल, विपरा सुध विरतात ॥७॥
आधाकर्मी आदि दे, दूर किया सब दोष ।
सिंघी सुण हर्ष्यो सही, पायो परम सन्तोष ॥८॥
साधु नो ओहिज शुद्ध, मारग मोटो माण ।
प्रशंसे सिंघी प्रगट, घणं करे वखाण ॥ ९ ॥

॥ ढाल ७ मी ॥

(आप हणी नहीं प्राण ने० ए देशी)

फतेचन्द दीवान ते, वलि पूछा करे वारु हो । श्रावक थे केता सही, धार्या धर्म उदारु हो । शिव साधन सारु हो ॥ भिक्खु जश सांभलो वारु हो ॥१॥ श्रावक कहै तेरे अछां, आतम तारण हारु हो । सिंघी वलि पूछे सही, संत किता सुखकारु हो । नौका शिव ने तारु हो ॥ भि० ॥२॥ श्रावक कहै तेरे सही, साधु सखर श्रद्धालु हो, भिक्खु समण शिरोमणि, वर माग विशालु हो ॥ भि० ॥ ३ ॥ सिंघी कहै आछो मिल्यो, वर जोग विचारु हो । श्रावक पिण तेरे सही, तेरे संत तंत सारु हों । भिक्खु बुद्धि ना भण्डारु हो ॥ भि० ॥ ४ ॥ सिंघी मुख प्रशंसा

सुणो, सेवक उभो सुधारु हो। ततखिण तिण जोड्यो तुको, तेरा पंथ ए तारु हो। विस्तर्यो नाम वारु हो ॥ भि० ॥ ५ ॥

॥ सेवककृत दोहा ॥

साध साधरो गिलो करै, ते तो आप आपरो मंत ।
सुणजो रे शहर रा लोकां, ए तेरापन्थी तंत ॥१॥

॥ ढाल तेहिज ॥

लोक कहै तेरापन्थी, भिक्खु सनलो भावे हो। हे प्रभु ओ पन्थ है, और दाय न आवै हो। मन भ्रम मिटावै हो॥ सो ही तेरापन्थ पावै हो॥ ६॥
पंच महाव्रत पालता, शुद्धि सुमति सुहावै हो। तीन गुप्त तीखो तरे, भज आतम भावै हो। चित्त सूं तेरा ही चाहवै हो॥ ७॥

भिक्षुकृत छन्द ।

गुण बिन भेष कुं मूल न मानत,
जीव अजीवका किया निवेरा।
पुन्य पाप कुं भिन्न भिन्न जानत,
आस्रव कर्मां कुं लेत उरेरा॥
आवत कर्मां ने संवर रोकत,
निर्जरा कर्मां कुं देत विखेरा।
बन्ध तो जीव कुं बांधिया राखत,
शाश्वता सुख तो मोक्ष में डेरा॥

इसी घट प्रकाश किया,
भव जीव का मेट्या मिथ्यात अंधेरा।
निर्मल ज्ञान उद्योत कियो,
ए तो है पन्थ प्रभु तेरा ही तेरा ॥६॥
तीन सौ तेसठ-पाखण्ड जगतमें,
श्रीजिन धर्म सूं सर्व अनेरा।
द्रव्यलिंगी केई साध कहावत.
त्यां पिण पकड्यां त्यांराइज केड़ा ॥
ताहि कुं दूर तजे ते संत
विधि सूं उपदेश दिया रूडेरा।
जिन आगम जोय प्रमाण कियां,
जब पाखण्ड पन्थ में पड्या बिखेरा ॥
व्रत अव्रत दान दया बतावत,
सावद्य निर्वद्य करत निवेरा।
श्रीजिन आगम्या मांहिं धर्म बतावत,
ए तो है पन्थ प्रभु तेरा ही तेरा ॥७॥

॥ ढाल तेहिज ॥

पन्थ अनेरा में रह्यो. तिण सूं भ्रमण भमावै हो। प्रभु अब आयो तेरा पन्थ में, तेरो आज्ञा सुहावै हो। तेह थी शिव पद आवै हो ॥ ८ ॥ तेरा वचन आगै करी, चारू धर्म चलावै हो। तेहिज छै तेरापन्थी, थिर कीरत थावै हो। भिक्खु समचित भावै हो ॥ ९ ॥ हिन्सा झूठ अदत्त हरे, मैथुन परिग्रह मिटावै हो। तीन करण तीन जोग सूं, त्याग करी तन तावै

हो, बारु व्रत वसावै हो ॥ १० ॥ इर्या भाषा एषणा रूड़ी रीत रखावै हो, आयाण भण्ड नखेवणा । पर ठण जैणा करावै हो, सखरी सुमति सुहावै हो ॥११॥ अशुद्ध मन नहीं आदरै, वच सावज वश लावै हो । पाड़ूई काया परिहरै, तीन गुप्त तंत लावै हो । थिरता पद चित्त थावै हो ॥ १२ ॥ सखर ढाल आ सातमी, गुण भिक्खु ना गावै हो । नाम तेरापन्थ निरमलो, अर्थ अनुपम आवै हो । सखरो सुजश सुणावै हो ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

भारी बुद्धि भिक्खु तणी, निर्मल मेल्या न्याय ।
अरिहन्त आज्ञा थाप ने, श्रद्धा दी ओलखाय ॥१॥
चरचा कर न्यारी हुवा, तेर जणा तिणवार ।
नाम कहूं हिव तेहना, भिक्खु गण शृङ्गार ॥२॥
थिरपालजी फतेचन्दजी, थड़ा तात सुत येह ।
भिक्खु आचारज भला, ज्ञान कला गुण गेह ॥३॥
टोकरजी हरनाथजी, भारीमाल सुविनीत ।
सरल भद्र सुखदायका, परम पूज्य सूं प्रीत ॥४॥
वीरभाणजी सातमो, लिखमीचन्दजी लार ।
बखतराम ने गुलाबजी, दूजो भारमल धार ॥५॥
रूपचन्द ने पेमजी, ए तेरां रा नाम ।
नवी दीक्षा लेवा तणा, तेरां रा परिणाम ॥६॥
रुघनाथजी रा पञ्च छै, छः जयमलजी रा जोय ।
दोय अन्य टोला तणा, ए तेरह ही होय ॥७॥

चर्चा केयक बोलरी, करी मांहोमा तास।
केइक अल्पज चरचिया, ऊपर आयो चौमास ॥८॥
चौमासा सगलां भणी, भिक्खु दिया भलाय।
आसाढ़ सुदि पुनम दिने, संजम लोज्यो ताय ॥९॥

॥ ढाल ८ मीं ॥

(सीहल नृप कहै चन्दने एदेशी)

भिक्खु मुख सूं इम भणै, मुणिन्द मोरा। चौमासो उतर्यां जाण हो। सरधा आचार मील्यां पछै मु० भेलो करस्यां आहार पाण हो। संवर गुण कर शोभतो ऋष भिक्खु गुण निलो मु० अधिक ओजागर आप हो ॥ १ ॥ जो श्रद्धा आचार मिली नहीं मु० तो भेलो न करां आहार हो। इम पहलां समझाविया मु० आया देश मेवाड़ हो ॥ २ ॥ सम्वत् अठारै सतरे समैं, मु० पञ्चाङ्ग लेखै पिछाण हो। आषाढ़ सुदी पुनम दिने, मु० केलवै दीक्षा कल्याण हो ॥ ३ ॥ अरिहन्त नो लेई आगन्या, मु० पचख्या पाप अठार हो। सिद्ध साखे करी स्वामजी, मु० लीधो संजम भार हो ॥ ४ ॥ हरनाथजी हाजर हुंता, मु० टोकरजी भिक्खु पास हो। परम भगता भारीमालजी, मु० पूरो ज्यांरो विश्वास हो ॥ ५ ॥ सतरोतरे केलवा मझै, मु० प्रथम चौमासो पेख हो। देवल अंधारी ओरी तिहां, मु० कष्ट सह्यो सुविशेष

हो ॥ ६ ॥ हिवै चौमासो उतर्यो, मु० भेला हुवा सहु आण हो । वखतराम ने गुलावजी, मु० काल-वादी हुवा जाण हो ॥ ७ ॥ नव तत्व में तक ऊपजी, मु० इक जीव आठ अजीव हो । जे सिद्धां में वस्त पावै नहीं, मु० सरधै काल सदीव हो ॥ ८ ॥ थिर-पालजी फतेचन्दजी, मु० भिक्खु रूप जग भाण हो । टोकरजी हरनाथजी, मु० भारीमाल वहु जाण हो ॥ ६ ॥ रूड़े चित्त भेला रह्या, मु० वर पट संत वदीत हो । जाव जीव लग जाणज्यो, मु० परम माहोंमाहि प्रीत हो ॥ १० ॥ सात जणा भेला ना रह्या, मु० केयक धुर ही थी न्यार हो । कोयक पाछै न्यारो थयो, मु० थेट न पोंहता पार हो ॥ ११ ॥ वर्ष किता वीरभाणजी, मु० रह्या भिक्खु रे हजूर हो । अविनय अवगुण आकरो, मु० तिण सूं निषेध ने कियो दूर हो ॥ १२ ॥ पछै श्रद्धा पिण फिर गई, मु० वीरभाणरी विशेष हो । इन्द्रियां सावज श्रद्धने, मु० द्रव्य भाव जीव एक हो ॥ १३ ॥ अनेक वोल ऊंधा पड्या, मु० विगड़ी अविनय थी वात हो । वर्ष वतीसे गण वारै कियो, मु० पछै मैणाने मूंड्यो साख्यात हो ॥ १४ ॥ पट रह्या तेरां मांहेला, मु० सात हुवा इम दूर हो । पिण पुण्य प्रवल भिक्खु

तणा, मु० दिन दिन चढ़ते नूर हो ॥ १५ ॥ शूरा सिंह तणी परे, मु० सुर-गिर जेम सधीर हो। अङ्कज ओजागर अति घणा; मु० विड़द निभावण वीर हो ॥ १६ ॥ टोला छोड़ी ने निसस्था, मु० त्यांरी पिण नहीं तमाय हो। ग्रन्थ हजांरा जोड़ीने, मु० श्रद्धा दीधी ओलखाय हो ॥ १७ ॥ अतिशय धारी ओपता, मु० शासण शिरमणि मोड़ हो। आचार्य इण कालमें, मु० अवर न एहनी जोड़ हो ॥ १८ ॥ सावद्य निर्वद्य शोधने, मु० दान दया ओलखाय हो। व्रत अव्रत वर वारता, मु० भिन्न २ भेद वताय हो ॥ १९ ॥ उत्पत्तिया बुद्धि आपरी, मु० आछी अधिक अनूप हो। दृष्टान्त विविधज दीपता, मु० चित्त चरचा अति चूंप हो ॥ २० ॥ ढाल भली ए आठमी, मु० भिक्खु गुणरा भण्डार हो। उमङ्ग करी चरण आदस्यो, मु० समण शिरोमणि सार हो ॥२१॥

॥ दोहा ॥

स्वाम मारग साचो लियो, करवा जन्म कल्याण।
कुगुरु कुबुद्धि अति फेलवी, जन भरमांया जाण ॥१॥
भागल भेषधारयां तणी, उपनो द्वेष अत्यन्त।
लोकां भणी लगाविया, विविध वचन विलपन्त ॥२॥
कोई सङ्ग थांरो कीज्यो मती, लाग जावेला लाल।
निन्हव छे ए निकल्या, कोई कहै जमाली गोशाल ॥३॥

थां देव गुरु ने उत्थापिया, दान दया ने उत्थाप।
जीव बचावै तेह में, ए कहै अठारै पाप ॥४॥
भगु भिड़काया पुत्रां भणी, साधां में चूक बताय।
ज्यूं भिक्खु सूं भिड़काविया, ओहिज मिलियो न्याय ॥५॥
जिंहां जिंहां भिक्खु विचरता, आगुंच जोवै वाट।
कह्यो कन्हें जायज्यो मती, थोड़ा में होय जाय थाट ॥६॥
केई तो प्रश्न पूछवा, केयक देखण काज।
कुगुरां रा भरमाविया, ऊंधा बोलता नाणै लाज ॥७॥
उपसर्ग अनेक दे रह्या, वदै वचन विकराल।
पिण क्षमा भिक्खु तणी, वारु अधिक विशाल ॥८॥
अधिक नीत आचार नी, सुमति अधिक उपयोग।
अधिक गुप्त गुण आगला, जशधारी शुभ जोग ॥९॥

॥ ढाल ६ वीं ॥

(व्रजवासी लाला कान्ह तें मेरी गागर कांय भांरी पदेशी)

भिक्खु स्वाम भारी, जगत उद्धारक जशधारी ॥ ए आंकड़ी ॥ भारी रे खिम्यां गुण भिक्खु ना भाल २। निर्लोभी मुनि निर्मल न्हाल ॥ भि० ॥ १ ॥ कपट रहित शुद्ध सरल कहाय २। निरहंकार रुड़ी नरमाय ॥ भि० ॥ २ ॥ लाघव कर्म उपधि वर लाज २। सत्य वचन स्वामी सुख साज ॥ भि० ॥ ३ ॥ वारु रे भिक्खु नो संजम वाह वाह २। लीधो मनुष्य जनम नो लाह ॥ भि० ॥ ४ ॥ वारु रे भिक्खु

नो तप तहतीक २। रूड़ै चित्त मुनि महा रमणीक ॥ भि० ॥ ५ ॥ बारु रे दान मुनि ने दे आण २। नित्य प्रति गोचरी करत प्रधान ॥ भि० ॥ ६ ॥ घोर ब्रह्म भिक्खु नो सार २। सङ्ग रहित तिहुं जोग श्री कार ॥ भि० ॥ ७ ॥ इर्या धुन भिक्खु मुनिराज २। जाणकै चाल रह्यो गजराज ॥ भि० ॥ ८ ॥ भाषा सुमति भिक्खु नी भाल २। निर्ग्रंथ निर्मल सुधा सम न्हाल ॥ भि० ॥ ९ ॥ एषणा अधिक अनुपम सार २। देखनहारो पामै चमत्कार ॥ भि० ॥ १० ॥ वस्त्रादि लेतां जैणा विशेष २। म्हेलतां अति उपयोग संपेख ॥ भि० ॥ ११ ॥ पञ्चमी सुमति भिक्खु नी पिछाण २। सावचेत भिक्खु सुविहाण ॥ भि० ॥ १२ ॥ मन वच काया गुप्त गुणवन्त २। सत दत शील दया निग्रन्थ ॥ भि० ॥ १३ ॥ अष्ट सम्पदा गुण अधिकार २। आचार्य भिक्खु अणगार ॥ भि० ॥ १४ ॥ आचारज ना गुण सु छतीस २। भिक्खु में शोभै निश दिस ॥ भि० ॥ १५ ॥ पञ्च महाव्रत निर्मल पालंत २। च्यार कषाय भिक्खु टालंत ॥ भि० ॥ १६ ॥ वश करै इन्द्रिय पञ्च विचार २। पञ्च सुमति त्रिण गुप्ति उदार ॥ भि० ॥ १७ ॥ आचार पञ्च भिक्खु ना अमोल २। बाड़ सहित

ब्रह्म अधिक अतोल ॥ भि० ॥ १८ ॥ उत्पत्तिया बुद्धि भिक्खु नी उदार २। ततखिण जाब दिये तंतसार ॥ भि० ॥ १९ ॥ अन्यमति स्वमति सुणै वच सार २। चित्त माहें पामैं चमत्कार ॥ भि० ॥ २० ॥ वारु रे भिक्खु थारा दृष्टान्त २। आश्चर्यकारी अधिक अत्यन्त ॥ भि० ॥ २१ ॥ वारु रे भिक्खु तुझ बुद्धि ना जाव २। पूछतां उत्तर देवै सिताव ॥ भि० ॥ २२ ॥ वारु रे भिक्खु तुझ वीर्य आचार २। तें कियो उद्यम अधिक उदार ॥ भि० ॥ २३ ॥ वारु रे भिक्खु तुझ नीत वैराग २। तूं प्रगट्यो बहु जन ने भाग ॥ भि० ॥ २४ ॥ वारु रे भिक्खु तूं गिरवो गम्भीर २। तूं गुण-दधि कुण पामै तीर ॥ भि० ॥ २५ ॥ वारु रे भिक्खु तुझ मुद्रा ऐन २। पेखत पामे चित्त में चैन ॥ भि० ॥ २६ ॥ सांवली सूरत दीर्घ देह विशाल २। लाल नयण गज हस्ती नी चाल ॥ भि० ॥ २७ ॥ जीव घणा तिरणा इण काल २। आगुंच देख्या दीन दयाल ॥ भि० ॥ २८ ॥ त्यां जीवां रे तरण रे साज २। तूं प्रगट्यो मोटो मुनिराज ॥ २९ ॥ याद आवै भिक्खु दिन रैन २। तन मन विकसावे मुझ नैन ॥ भि० ॥ ३० ॥ मरणान्तक धार्यो शुद्ध माग २। भ्रम भञ्जन मुनि

तू महा भाग ॥ भि० ॥ ३१ ॥ अनघ अथग गुण भिक्खु मझार २ । मैं संक्षेप कह्यो सुविचार ॥ भि० ॥ ३२ नवमी ढाले भिक्खु रूप हाल २ ।, महिमागर मोटा गुण माल ॥ भि० ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

भारी गुण भिक्खु तणा, कह्या कठा लग जाय ।
मरण धार शुद्ध मग लियो, कमिय न राखी काय ॥१॥
परम दुर्लभ श्रद्धा प्रगट, आखी श्रीजिन आप ।
तीजै उत्तराध्ययन तन्त, थिर भिक्खु चित्त थाप ॥२॥
वहुलकर्मी जीव बहु, उपजिया इण आर ।
दिलमें वैसणी दोहिली, श्रद्धा महा सुखकार ॥३॥
परम पूरो धूर-पगथियो, श्रीजिन श्रद्धा सार ।
शुद्ध सरध्यां समकित सही, भिक्खु कियो विचार ॥४॥
धर्म तणा द्वेषी घणा, लागू बहुला लोग ।
समझाया समझे नहीं, अधिका मूढ़ अयोग ॥५॥
जब भिक्खु मन जाणियो, कर तप करूं कल्याण ।
मग नहीं दिखै चालतो, अति घन लोग अजाण ॥६॥
घर छोड़ी मुझ गण मझे, सञ्जम कुण ले सोय ।
श्रावक ने वलि श्राविका, हुन्ता न दिसै कोय ॥७॥
पहवी करे आलोचना, एकन्तर अवधार ।
आतापन वलि आदरी, सन्ता साधे सार ॥८॥
चौविहार उपवास चित्त, उपधि ग्रही सहु तंत ।
आतापन लेवन मझे, तप कर तन तावंत ॥९॥

॥ ढाल १० मी ॥

(पूज्यजी पधारो हो नगरी सेविये एदेशी)

थिरपालजी स्वामी फतेचन्दजी, संत दोनूं सुखकार हो महामुनि। तात सुत दोनूं तपसी भला, सरल भद्र सुविचार हो ॥ म० ॥ थे भला ने अवतरिया हो भिक्खु भरत क्षेत्र में ॥ १ ॥ टोला में छतां वड़ा स्वामी भिक्खु थकी, त्यांने वड़ा राख्या भिक्खु स्वाम हो । म० । यांने छोटा करने हूं वड़ो होऊं, इण में सूं परमार्थ ताम हो ॥ म० ॥ २ ॥ एकान्तर भिक्खु ऋष भला, लेवै आतापना लाभ हो । म० । व्रत अव्रत लोकां ने वतावता, जन हर्षे सुण जाव हो । म० ॥ ३ ॥ सरल भद्र केइक लागा समझवा, वारु केइक बुद्धिवान हो । म० । ओलखणा आई श्रद्धा आचारनी, पायो धर्म प्रधान हो । म० ॥ ४ ॥

॥ सोरठा ॥

पंच वर्ष पहिछाण रे, अन्न पण पूरो ना मिल्यो ।
बहुल पणे वच जाणरे, घी चोपड़ तो जिहांई रह्यो ॥

॥ ढाल तेहिज ॥

थिरपालजी फतेचन्दजी इम कहै, स्वामी भिक्खु ने सोय हो । म० । क्यूं तन तोड़ो थे तपस्या करी,

समझता दिसै बहु लोय हो। म० ॥ ५ ॥ थे बुद्धि वान थारी थिर बुद्धि भली, उत्पत्तिया अधिकाय हो। म०। समझावो बहु जीव सैणा भणी, निर्मल बतावी न्याय हो। म० ॥ ६ ॥ तपस्या करां म्हे आत्तम तारणी, अधिक पहोंच नहीं ओर हो। म०। आप तरो थे तारो अवर ने, जाझो बुद्धि नो जोर हो। म० ॥ ७ ॥ संत वडांरो वचन भिक्खु सुणी, धांस्यो धर चित्त धीर हो। म०। न्याय विशेष बता-वता निर्मला, हरख्यो हिवड़ो हीर हो। म० ॥ ८ ॥ दान दया हद न्याय दीपावता, ओलखावता आचार हो। म०। जिन वच करी प्रभु माग जमावता, समझ्या बहु नर नार हो। म० ॥ ९ ॥ प्रगट मेवाड़ में पूज्य पधारिया, युक्ति आचार नी जोड़ हो। म०। अनुकम्पा दया दान रे ऊंपरे, जोड़ां करी धर कोड़ हो। म० ॥ १० ॥ अति उपकार करी पूज्य आविया, मुरधर देश मझार हो। म०। सखर पणै बर जोड़ां सुणावता, इम करता उपगार हो। म० ॥ ११ ॥ व्रत अव्रत मांड बतावता, सखरी रीत सुचङ्ग हो। म०। श्री जिन आज्ञा में धम श्रद्धावता, सुण जन पावै उमङ्ग हो। म० ॥ १२ ॥ यशधारो भिक्खु नो जगत में, वाध्यो जश विख्यात हो। म०। बुद्धि प्रबल

गुण पुण्य पोरसो, स्वाम भिक्खु साख्यात हो । म० । १३ ॥ भद्र प्रकृति बुद्धि पुण्य गुणे भला, परम पूज्य सूं प्रीत हो । म० ॥ १४ ॥ दशमी ढाल पूज्य दयाल नी, जाझी कीरति जाण हो । म० । देश प्रदेश मांहें जश दीपतो, विस्तरियो सुविहाण हो । म० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

साध श्रावक ने श्राविका, सखर भला सुविनीत ।
समणी न हुई स्वाम रे, वर्ष किता इम बीत ॥१॥
किण ही भिक्खु ने कह्यो, तीर्थ थारे तीन ।
साध श्रावक ने श्राविका, समणी नहीं सुचीन ॥२॥
तिण कारण छै थांहरे, मोदक मोटो माण ।
समणी विण खाण्डो सही, प्रत्यक्ष देख पिछाण ॥३॥
भिक्खु आप भाषै इसो, लाडू खाण्डो लेख ।
पण चौगुणी तणो पत्तर, स्वाद अनूप संपेख ॥४॥
आछी बुद्धि उत्पात सूं, उत्तर दियो अनूप ।
दिन केते हुई दीपती, समणी तीन सरुप ॥५॥
तीन बायां त्यारी हुई, संजम लेवा साथ ।
भिक्खु आप भाषै भली, सुन्दर सीख साख्यात ॥६॥
सञ्जम लेवो साथ त्रिण, पण तीनां में पेख ।
वियोग एक तणुं हुवां, स्यूं करिवो सुविशेष ॥७॥
सलेषणा करणी सही, त्यां दोयां ने ताम ।
करार पको इम करो, सञ्जम दीधो स्वाम ॥८॥
कुशलांजी मटू कही, त्रीजी अजबू ताय ।
एक साथ अदराविया, साधं पणुं सुखदाय ॥९॥

॥ ढाल ११ मी ॥

(स्वामी म्हप रायचन्द राजा पदेशी)

गजब गुण ज्ञान करी गाजैरे, गजब गुण ज्ञान करी गाजै। गुरु भिक्खु पै अजब छटा हद भारीमाल छाजै ॥ ए आंकड़ी ॥ सरल भद्र भल श्रमण शिरोमणि, ऋष रूड़ा राजै। चर्ण कर्ण धर समरथां चित्त सूं, भ्रम कर्म भाजै ॥ ग० ॥ १ ॥ क्षान्त दांत चित्त शांति खरालज, उभय थकी लाजै। परम विनीत प्रीत हद पूरण, शिवं रमणी साजै ॥ ग० ॥ २ ॥ जोड़ी गोयम वीर जिसी बर, शिष्य चारु वाजै, कार्य भलायां बेकर जोड़ी, करत मुक्ति काजै ॥ ग० ॥ ३ ॥ परम पीत पूज्य सुजल पयसी, पद भव दधि पाजै। कठिन वचन गुरु सीख कहै तो, समचित मुनि साजै ॥ ग० ॥ ४ ॥ उत्तराध्ययन छत्रीसे अध्ययने, उभां छला अधिकारी। वार अनेक गुणियां विध सूं, धुर गुरु आज्ञा धारी। गजब गुण ज्ञान गरब गारी रे ॥ ग० ॥ गुरु भिक्खु पै अजब छटा हद भारी माल भारी ॥ ५ ॥ भिक्खु भाषै भारीमाल ने सांभल सुखकारी। काढै खूंचणो गृहस्थ कोई तो तेलो डंड त्यारी ॥ ग० ॥ ६ ॥ भारीमाल भाषै भिक्खु ने, साचो कहै सारी। तब तो तेलो

तन्त खरो, पिण द्वेष जगत् धारी ॥ ग० ॥ ७ ॥ झूठो नाम लिये कोई जन, लागू अति लारी। सूं करिवो ते स्वामी प्रकाशो, आज्ञा अधिकारी ॥ ग० ॥ ८ ॥ भिक्खु कहै जो साचो भाषै, तो तेलो त्यारी। अणहुंतो कोई आल दिये, तो सञ्चित सम्भारी ॥ ग० ॥ ९ ॥ पूर्व संचित पाप उदय नो, तेलो तंत सारी। स्वामी नो वच श्रद्ध कियो कर जोड़ी अंगी कारी ॥ ग ॥ १० ॥ भारीमाल सुवंनीत इसा भड़, सुगुणा सुखकारी। पुण्य प्रबल थी भिक्खु पाया, ममत मान मारी ॥ ग० ॥ ११ ॥ घोर घटा घन गरजारवसी, वाण सुधा उवारी। भिन्न २ भेद भली पर भाषत, दाखत दमितारी ॥ ग० ॥ १२ ॥ हद वचनामृत सुण जन हर्षत, निरखत नर नारी। नयना नन्दन कुमति निकन्दन, पद सूरत प्यारी ॥ ग० ॥ १३ ॥ हिये निर्मल हरनाथ मुनि, टोकरजी तंत सारी। परम विनीत भारमलजी, भल सन्त साता कारी ॥ ग० ॥ १४ ॥ घर छोड़ी बहु थया मुनि, धन्य ज्ञान गर्व गारी। समणी पिण बहु थई सयाणी स्वाम शरण भारी ॥ ग० ॥ १५ ॥ दिन २ भिक्खु नो मग दीपत, शासण शिणगारी। पंचम काल स्वाम परगटिया, हूं तसु बलिहारी ॥ ग० ॥ १६ ॥ एकाद-

शमी ढाल अनोपम, वारु विस्तारी। कटे तलक भिक्खु गुण कहिये. पामत किम पारी॥ ग० ॥१७॥

आगम रहिस अनुपम लही, स्वाम भिक्खु सार।
शुद्ध श्रद्धा शोधी सही, वलि आचार विचार॥१॥
दान सुपात्रे दाखियो, सन्त मुनी ने सार।
असंजती ने आपियां, एकन्त पाप असार॥२॥
भगवती अष्टम शतक भल, षष्टम उद्देशे आप।
असंजती ने आहार दे प्रभु कह्यो एकन्त पाप॥३॥
दे गृहस्थ ने दान ते, अनुमोदे अणगार।
निशीथ पनरमें निरखल्यो, डंड चौमासी धार॥४॥
सावज दान प्रशंसियां, हिन्सा रो वांछणहार
सूयगड़ा अङ्ग सूत्र में, आख्यो मुनि आचार॥५॥
श्रावक सामायक मझे, अधिकरण अति जाण।
भगवती सप्तम शतक भल, प्रथम उद्देशे पिछाण॥६॥
व्यावच्च गृहिनी वर्णवी, अणाचार में आम।
दशवैकालिक देखल्यो, तीजे अध्ययने ताम॥७॥
श्रावक नो खाणो सर्व, अव्रत में अधिकार।
वर्ण उववाई वीसमें, वलि सूगडांग विचार॥८॥
इत्यादिक जिनवर अखी, शोधी भिक्खु स्वाम।
घले संक्षेपे वर्णवूं, सूत्र साख सुख ठाम॥९॥

॥ ढाल १२ मी ॥

(पूज्यने नमै शोभो गुण करै एदेशी)

पुत्र भगुनो परवरो, उत्तराध्ययन उमंग। सुज्ञानी रे। विप्र जिमायां तमतमा, चउदमे अज्झयण सुचंग सुज्ञानी रे॥ श्रद्धा दुर्लभ देवां

कहो ॥ १ ॥ आद्रमुनि इम आखियो, सयगडांग छट्ठे सम्भाल । सु० । ब्राह्मण वे सहंस जिमावियां नरय तणा फल न्हाल । सु० ॥ श्रद्धा० ॥ २ ॥ आणन्द श्रावक लियो अभिग्रहो. सात में अङ्ग श्रीकार ।सु०। अन्य तीर्थी ने आपं नहीं. असणादिक च्यारूं आहार । सु० ॥३॥ प्रत्यक्ष गोशालाने आपिया. संकडाल सेज्भा संथार ।सु०। उपासग सातमें आखियो नहीं धर्म तप लिगार । सु० ॥ ४ ॥ देतो लेतो वर्त्तमान देखने, मून कही तिणकाल । सु० । पंचम अध्येने परवरो, सूयगडा अङ्ग सम्भाल । सु० ॥ ५ ॥ दुःखो मृगालोढो देखने, प्रभुने गौतम पुछन्त ।सु०। 'किंदच्चा' इण दान किसो दियो, त्रिपाक सूत्रम वृतन्त । सु० ॥६॥ अव्रत भाव शस्त्र भाखियो, ठाणा-अंग दश में ठाण । सु० । कोई अव्रत सेवायां धर्म कहै; जिन मारग रा अजाण । सु० ॥ ७ ॥ नव प्रकारे पुण्य नीपजै, नवमा ठाणा न्हाल । सु० । समचे नवूं ही कह्या सही, समचै मन वचन संभाल । सु० ॥ ८ ॥ करणो धर्म अधर्म नो कही. जुजई दोनूं सुजाण । सु० । आचारंग चौथा अध्ययनमें. तीजी मिश्रनी करणी म ताण । सु० ॥ ६ ॥ आज्ञा माहें धर्म आखियो, बोलवो जुगतो न बाहार । सु० ।

उत्कृष्टो चरचा आचारंगमें। छट्ठे अध्ययन रे दूजे विचार। सु०॥ १०॥ जिन आज्ञा तणा अजाणने. समकित दुर्लभ सुजाण। सु०। आचारंग चौथे अध्ययनमें, चौथे उद्देशे पिछाण। सु०॥ ११॥ उद्यम करै आज्ञा बिना, आज्ञामें आलस आय। सु०। सुगुरु कहै बे बोल होज्यो मती; आचरंग पांचमारे छट्ठा मांय। सु०॥ १२॥ आज्ञा लोपी छान्दै चालै आप रै, ज्ञान रहित गुण हीण। सु०। आचारंग दूजा अध्ययन में; छट्ठै उदेशै सुचीन॥ सु०॥ १३॥ प्रमादी द्रव्यलिंगी पासत्था, वीर कह्या आज्ञाबार अवधार। सु०। आचारंग चौथा अध्ययनमें: पिण धर्म न कह्यो आज्ञा बार। सु०॥ १४॥ साधां छोड्यो उन्मार्ग सर्वथा, आदर्यो मार्ग उदार। सु०। आव-सग चौथा अध्ययनमें, साधां छोड्यो, ते अधिक असार। सु० १५॥ चार मंगल उत्तम शर्ण चिहुं, केवली परूप्यो धर्म मंगलीक। सु०। एहिज उत्तम शरणो पिण एहनो, तंत आवसगमें तहतीक। सु०। ॥ १६॥ इत्यादिक बोल अनेक छै, आगम में अधि-काय। सु०। स्वामी भिक्खु शोध शोधने; आछी रीत दिया ओलखाय॥ सु०॥ १७॥ पाखंडियां प्रभु पन्थ उत्थापियो, उलङ्यो जिन वचन अमोल

। सु० । भिक्खु आगम न्याय शोधी भला, प्रगट कीधी पाखण्डी री पोल । सु० ॥ १८ ॥ सावद्य दानमें धर्म श्रद्धायने, मतिहीण न्हाखै फन्द मांय । सु० स्वामी सूत्र सम्भालने; व्रत अव्रत दीधी वताय । सु० ॥ १९ ॥ धर्म आगन्या बारै धारने, भेषधार्‍यां मांड्यो भ्रम जाल । सु० । थिर नीव आज्ञा भिक्खु थापने, वारु जिन वच थाप्या विशाल । सु० ॥२०॥ आगन्या बारै धर्म पाखण्ड्यां आदर्‍यां वर भिक्खु पूछ्यो इम वाय । सु० । आगन्या बारै धर्म किण परूपियो, इणरो मोने नाम बताय । सु० ॥ २१ ॥ विकल कहै म्हारी माता वांजणी, दियो तिणरो दृष्टान्त । सु० । वेश्याना पुत्र तणु वलि, खरा न्याय मेल्या धर खन्त । सु० ॥२२॥

भिक्खु स्वाम कृत ।

जिण धर्म री जिन आज्ञा दिये, जिन धर्म सिखावै जिनराय । भविक जन हो । आज्ञा बारै धर्म केणे सिखावियो, इणरी आज्ञा देवै कुण ताय । । भ० । ओ जिण धर्म जिन आज्ञा तिहां ॥ १ ॥ कोई कहै म्हांरी माता है वांजणी, हूं छूं तिणरो अंग जात । भ० । ज्यूं मूरख कहै जिन आज्ञा विना, करणी कियां धर्म साख्यात । भ० ॥ २ ॥ मा विन

बेटारो जन्म हुवै नाहीं, जनमें ते बांज न होय ।भ०। धर्म छै तो जिन आगन्या, आज्ञा नहीं तो धर्म नहीं कोय । भ० ॥३॥ वेश्या पुत्र ने पूछा करै, थारी कुण माय ने कुण तात । भ० । तो ओ नाम बतावै किण तात रो, ज्यूं आ आगन्या बारला धर्म नी वात। भ० ॥४॥ वेश्या रो अंग जात ऊपनो, उणरो कुण हुवै उदेरी ने बाप । भ० । ज्यूं आगन्या बारै धर्मने पुण्य तणी, जिन धर्मी तो कुण करै थाप । भ० ॥ ५ ॥ वेश्या रो अंग जात ऊपनो, उण लखणो हुवै उदेरी ने बांप । भ० । ज्यूं आज्ञा बारै धर्मने पुण्य तणी, भेषधारी कर कह्या थाप । भ० ॥ ६ ॥ इण आज्ञा बारला धर्म रो कुण धणी, कुण आज्ञा देवै जोड्यां हाथ । भ० । देव गुरु मून साझ न्यारा हुवा, इणरी उत्पत्ति रो कुण नाथ । भ० ॥७॥ दुष्ट जीव मंजारी ने चीतरा, छल सूं करै पर प्राणो नी घात । भ० । ज्यूं दुष्ट हिंसा धर्मी जीवड़ा, छल सूं घालै लोकांरे मिथ्यात । भ० ॥८॥

ढाळ तेहिज ।

इत्यादिक आज्ञा ऊपरै, स्वामी न्याय मेल्या सुखदाय । सु० । भाख्यां भिन्न २ भेद भली परै, कसर न राखी काय । सु० ॥२३॥ चारु ढाल कही

ए वारमी, साखा दान आज्ञा ऊपर सार। सु०। वलि श्रद्धा तणी बहु वारता, तिणमें सूत्र साख तंत सार। सु० ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

पुण्यरी करणी परखड़ी, श्रीजिन आगम सिन्ध।
भिक्खु तास भली परे, प्रगट करी प्रबन्ध ॥१॥

निर्जरारी करणी निमल, जिन आज्ञा में जाण।
ते शुभ जोग निर्वद्य त्यां, पुण्य बन्ध पहिछाण ॥२॥

विरुद्ध आज्ञा बारली, सावद्य करणी सोय।
पाप बन्धे तेहथी प्रगट, जिण थी पुण्य न जोय ॥३॥

शुद्ध बहिरावे साधने, कहि निर्जरा एकन्त।
भगवती अष्टम शतक भल, छट्ठे उद्देशे सुचिन्त ॥४॥

शुभ लाम्बो आऊ सखर, तसु बन्ध तीन प्रकार।
हिन्सा झूठ सेवे नहीं, सन्त भणी दे सार ॥५॥

बहिरावे वन्दना करि, आहार मनोज्ञ उदार।
भगवती पंचम शतक भल, छट्ठे उद्देश विचार ॥६॥

वन्दणा ना फल वर्णव्या, नीच गोत्र क्षय नाश।
ऊंच गोत नो बन्ध इम, उत्तराध्ययन उजास ॥७॥

व्यावच कीधां बन्ध वलि, तीर्थंकर पुण्य नाम।
गुणतीसम ज्ञानी कह्यो, उत्तराध्ययने आम ॥८॥

इत्यादिक आज्ञा तिहां, पुण्य नो बन्ध पिछाण।
समय शोध भिक्खु सखर, आखी उत्तम आण ॥९॥

॥ ढाल १३ मी ॥

(पुण्य निपजे शुभ जोग सूं रे लाल एदेशी)

दाखी व्यावच दश प्रकारनो रे लाल। ठाणा अङ्ग दशमें ठाण हो। भविकजन। प्रगट दशों ही

साध पिछाणज्योरे लाल। जिण सूं पुण्य बंधे निर्जरा जाण हो। भ०॥ स्वामी श्रद्धा देखाई श्रीजिन वयण सूं रे लाल॥ १॥ कालोदाई पूछ्यो कर जोड़ने रे लाल। भगवती में भाख्यो भगवन्त हो। भ०। पाप स्थानक अठारह परहर्यां रे लाल। कल्याणकारी कर्म बन्धन्त हो। भ०॥ स्वा०॥ २॥ सेवै पाप स्थानक अठारह सही रे लाल। बन्धै पाप कर्म विकराल हो। भ०। सातमें शतक सम्भाल ज्यो रे लाल। दाख्यो दशमें उद्देशे दयाल हो। भ०॥ ३॥ कर्कस वेदनी पिण इमहिज कही रे लाल। अठारह पाप सेव्यां असराल हो। भ०। न सेव्यां अकर्कस भर्त नी परै रे लाल। भगवती सातमा रे छट्ठे भाल हो। भ०॥ ४॥ आख्यो ज्ञाता रे आठमा अध्ययनमें रे लाल। बीस बोल तीर्थङ्कर पुण्य बंधाय हो। भ०। बीसूं ही निर्वद्य वर्णव्यारे लाल। श्री जिन आज्ञामें शोभाय हो। भ०॥ ५॥ सूत्र विपाक में सुबाहु तणी रे लाल। गौतम पूछा करी प्रभु पास हो। भ०। 'किं दच्चा' इण दान किसो दियो रे लाल। वारु निर्वद्य करणी विमास हो। भ० ॥६॥ अणुकम्पा सर्व जीवांरी आणियां रे लाल। प्राणी ने दुख नहीं उपजाय हो। भ०। सातावेदनी तिणरे

वन्धै सही रे लाल। शतक सातमें भगवती सुहाय हो। भ० ॥ ७ ॥ करणी आठ कर्म वन्धनी कही रे लाल। भगवती आठमारे नवमे भेद हो। भ०। तिणमें निर्वद्य करणी पुण्य तणी रे लाल। सावद्य पापरी करणी संवेद हो। भ० ॥ ८ ॥ जयणा सूं साधु अहार करै जिहांरे लाल। पाप न वन्धै पिछाण हो। भ० ॥ ९ ॥ साधुरी गोचरी असावज सही रे लाल। दशवैकालिक देख हो। भ०। अध्ययन पंचमें आखियो रे लाल। वाणुमी गाथा विशेष हो। भ० ॥१०॥ सात कर्म ढीला पड़े सहीरे लाल। शुद्ध आहार करतां सार हो। भ०। पहिले शतक भगवती नवमें पेखल्यो रे लाल। एहवा श्रीजिन वचन आराध हो। भ० ॥ ११ ॥ इत्यादिक बहु बोल अनेक रे लाल। श्रीजिन आज्ञामें सोय हो। भ०। तिणसूं निर्जरा हुवै पुण्य वन्धै तिहांरे लाल स्वामी ओलखाया सूत्र जोय हो। भ० ॥ १२ ॥ सावज करणी आज्ञा वारै सही रे लाल। प्रगट थाप्यो पाखण्डयां पुण्य हो। भ०। भिक्खु आगम न्याय शोधी भला रे लाल। ज्यांरी श्रद्धा देखाई जवून हो। भ० ॥ १३ ॥ तंत ढाल कही ए तेरमी रे लाल। निर्वद्य करणी पुण्यं री निर्दोष हो। भ०।

भिक्खु ओलखाई भांत भांत सूं रे लाल। मिलै तिण सूं अविचल मोक्ष हो। भ० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

सूत्र में समचै कही, अणुकम्पा अधिकार।
भिक्खु तास भली परै, शोध लागा तन्तसार ॥१॥
जीव असंजती जेहनो, जीवण वान्छै जाण।
सावज अनुकम्पा सही, मोहराग महि माण ॥२॥
मरणो वंछ्या द्वेष महि, जीवण राग जिवार।
पाप अठारमें प्रगट, भ्रमण करावै भार ॥३॥
मोहराग अनुकम्प में, आज्ञा न दिये आप।
इण कारण सावद्य छै, प्रगट राग है पाप ॥४॥
तरणो वांछै ते सही, श्रीजिन आज्ञा सार।
पाप टलावे पार को, ते निर्वद्य इकतार ॥५॥
निर्वद्य करुणा निर्मली, सावज अधिक असार।
विविध सूत्र निर्णय सखर, स्वाम दियो तंतसार ॥६॥
प्रायश्चित आवै प्रगट, अरिहन्त आज्ञा बार।
अनुकम्पा सावज छै, धारु हिये विचार ॥७॥
गाय भैंस आक थोर नो, ए चारूं ही दूध।
ज्यूं अणुकम्पा जाणज्यो, मनमें राखी सुध ॥८॥
आक दूध पीधां थकां, जुदा हुवै जीव काय।
ज्यूं सावज अणुकम्पा कियां, पाप कर्म बंधाय ॥९॥

॥ ढाल १४ वीं ॥

(दया धर्म श्री जिनजी री वाणी एदेशी)

अनुकम्पा त्रस जीवनी आणो, बान्धै छोड़े साधु तिण वारोजी। छोड़ताने अनुमोद्यां चौमासी, निशीथ

वारमें निरधारोजी ॥ स्वाम भिक्खु निर्णय कियो सूत्र सूं ॥ १ ॥ वाघ सिंह हिंसक जीव विलोकी, मार न कहै मतिवन्तो जी । मति मार नहीं कहै राग आणी मुनि, सूयगडांग इकवीस में संतोजी ॥ २ ॥ वीर असंजम जीतव वरज्यो, दशमें सूयगडांग दयालोजी दशमें ठाणै वलि आचारङ्गमें, वारुं वचन अनेक विशालो जी ॥ ३ ॥ उत्तराध्ययन बावीस में अध्येने, नेम पाछा फिरया जीव न्हालोजी । इतरा जीव हणै मुझ अर्थे, वारु फल पर भवन विशालोजी ॥४॥ मिथिला नगरी बलती जाण नमि मुनि स्हामो न जोयो सोयोजी । उत्तराध्ययन रे नवमें अध्ययने, कुरणा सावज नाणी कोयोजी ॥ ५ ॥ मनुष तिर्यंच देव मांहों मांहीं, विग्रह देखी विशेषोजी । जीत हार वांछणी वरजो जिन, दशवैकालिक सात में देखोजी ॥ ६ ॥ वायरो वर्षा शीत तावड़ो कलह उपद्रव रहित सुकालोजी । बोल सातूं ही वांछणा वरज्या, दशवैकालिक सात में दयालोजी ॥ ७ ॥ दूजे आचारङ्ग अध्ययन दूसरे, प्रथम उद्देशे सुपन्थोजी । माहोंमा गृहस्थ लड़ता देखी ने मुनि, मार मत मार न कहै महन्तोजी ॥ ८ ॥ तीन आत्मरूप तीजा ठाणा रे तोजै, देणो उपदेश हिन्सक देखीजी । न समझे

तो मून राखणी निरमल, वलि एकन्त जाणो विशेषी जी ॥९॥ उत्तराध्ययन रे इकवीस में अध्ययने, तस्कर ने मारतो देखी तायोजी। समुद्रपाल लियो वर संयम, मोह करुणा नाणी मन मांयोजी ॥ १० ॥ समचे अनुकम्पा कही ते साम्भलो, लखण आज्ञा थकी सींढ लीज्योजी। प्रभु आज्ञा देवै तेतो निर्वद्य प्रत्यन्त, आज्ञा नहीं ते सावज ओलखीज्योजी ॥११॥ अणुकम्पा सुलसांरी आणी, सुर हरण गवेषी सोयोजी। पुत्र देवकीरा म्हेल्या प्रत्यन्त, अन्तगढ़ में अवलोयो जी ॥ १२ ॥ ईंट उपाड़ मूकी कृष्ण आवत, अणु-कम्पा पुरुष नी आणीजी। अन्तगढ़दशा में पाठ अनोपम, जिन आगन्या नहीं जाणीजी ॥ १३ ॥ उत्तराध्ययन बारमें अध्ययने, अणुकम्पा हरकेशी नी आणीजी। छात्रांने ऊंधा पाड्या यन्त छलकर, प्रत्यन्त सावद्य पिछाणीजी ॥१४॥ रेणा देवीरी करुणा करी जिन ऋष, स्हामो जोयो साचातोजी। नवमें अध्ययने ज्ञाता मांहें न्हालो, अनर्थ दुःख उत्पातो जी ॥ १५ ॥ कोई कहै कलुणारस छै करुणा अणुकम्पा नहीं आखीजी। अनुकम्पा करुणा दया अनुक्रोस ए, कलुण रसना नाम अमर साखीजी ॥ १६ ॥ करी नेम जीवांरी अनुकम्पा, अनुक्रोस पाठ

आछोजी। तिण अनुकोस नो अर्थ करणा टीका में, सावज निर्वद्य कलुणरस साचोजी ॥ १७ ॥ सम्यक्त विन मेघ गज भव साम्प्रत, अणुकम्पा सुसलारी आणीजी। प्रत संसार मनुष्य आयु प्रगट, प्रथम अध्ययन ज्ञाता में पिछाणीजी ॥ १८ ॥ निज गर्भरी अणुकम्पा निमते, रूड़ो भोगव्यो धारणी राणीजी। प्रथम अध्ययन ज्ञाता मांही प्रत्यक्ष, जिहां जिन आगन्या किम जाणीजी ॥ १६ ॥ अभयकुमार नी कर अणुकम्पा, दोहलो पूर्यो धारणी रो देवोजी। ए पिण ज्ञाता रे प्रथम अध्ययने, साम्प्रत सावज जाणो स्वयमेवोजी ॥ २० ॥ शीतल तेजू लेश्या म्हेली स्वामी, अनुकम्पा गोशाला री आणीजी। सूत्र भगवती पनरमें शतके, वृति मांहें सराग वखाणीजी ॥ १२ ॥ पन्नवणा सूत्र रे छत्रीसमें पद, लब्धी तेजू भोड्यां क्रिया लागैजी। तिणरा दोय भेद उष्ण शीतल तेजू छै, शीतल तेजू फोड़ी वोर सागै जो ॥ २२ ॥ कही साधुरी हर्ष छेद्यां वैद्य ने क्रिया, नहीं साधुरे क्रिया निहालोजी। पिण धर्म अन्तराय साधु रे पाड़ी वैद्य, भगवती सोलमारे तीजे भालोजी ॥ २३ ॥ इत्यादिक बोल अनेक आख्या छै, समचै सूत्र मांही सोयोजी। जिन आज्ञा नहीं

ते सावज जानो, आज्ञा ते निर्वद्य अवलोयोजो ॥ २४ ॥ नेम समुद्रपाल ने नमि ऋषि, आतम ऋष अवधारोजी। निर्वद्य आगन्यां में छै निर्मल, सावज भ्रमण संसारोजी ॥ २५ ॥ स्वाम भिक्खु ए सूत्र शोधी, अनुकम्पा ओलखाईजी । विवध हेतु न्याय जुगति वताया, कुमिय न राखो कांईजी ॥२६॥ भेषधारी भ्रम पाड़े भोलाने, दया मोहरागने दिखाईजो। सिद्धान्तरा जोर सूं भिक्खु स्वामो, असल श्रद्धा ओलखाईजो ॥ २७ ॥ चवदमी ढाल सुन जन चातुर, अनुकम्पा निर्वद्य आदरजोजी। रूड़ी आसता भिक्खुनी राखो; पाखण्ड मत परहरजोजी ॥ २८ ॥ दान दया सूत्र साख देखाई, खण्ड प्रथम धर खंतोजी। सूत्र नेश्राय ए ज्ञान स्वामनो, मति ज्ञान नो भेद सुतंतोजी ॥ २९ ॥

कलश ।

जय जश कारण दुख विडारण, सुमग धारण स्वामजी। शुद्ध सुमति सारण कुमति वारण, जगत तारण कामजी। प्राक्रम मृगपति सखर धर चित्त, ज्ञान नेत्रे ऋषि गुणी। जिन मग्ग केतु हद सुहेतु, नमो भिक्खु महा मुनि ॥

द्वितीय खण्ड।

॥ सोरठा ॥

प्रथम खण्ड पहिछाण रे, रचियो रूड़ो रीत सूं।
खण्ड दूजे गुण खाण रे, दृष्टान्त कहूं दयाल ना ॥

॥ दोहा ॥

आख्यो दान दया अखल जिम भाख्यो जिनराज।
बुद्धि उत्पत्तिया महाभली, साझ्यो शिव पन्थ साज ॥१॥
मति ज्ञान महिमा निलो, दोय भेद तसु देख।
सूत्र नेश्राय सिद्धन्त छै, सूत्र विना सम्पेख ॥ २ ॥
सूत्र कहीजे वात सहु, निर्मल सूत्र नेश्राय।
बुद्धि सूं मिलती वात वर, सहु असूत्र नेश्राय ॥३॥
सूत्र साख श्रद्धा सखर, स्वाम दिखाई सार।
सूत्र तणी नेश्राय, शुद्ध आगम अर्थ उदार ॥४॥
चार बुद्धि सूं चिन्तवी, दिये विविध दृष्टान्त।
असूत्र नेश्राय ओलखो, वर नन्दी विरतंत ॥५॥
हिवे असूत्र नेश्राय हद, दिया स्वाम दृष्टान्त।
मति ज्ञान महा निर्मलो, स्वाम तणो शोभंत ॥६॥
केवल उत्तरतो कह्यो, मति ज्ञान महाराज।
पज्जवा लेख पिछाणज्यो, सूत्र भगवती साज ॥७॥
सखरो भिक्खु स्वाम नो, महा मोटो मति ज्ञान।
साचा न्यायज शोधिया, दृष्टान्त दे प्रधान ॥८॥
उत्पत्तिया बुद्धि सूं अण्या, मिलता न्याय मुणन्द।
केशी नी परै शुद्ध कथा, दृष्टान्त अति दीपन्त ॥६॥

॥ ढाल १५ मी ॥

(अभड़ भड़ रावणा इन्दा सूं अड़ियो रे एदेशी)

पाखण्डियां सावज दान परूपियो, त्याने भिक्खु पूछ्यो तिणवार। सावज में पुन्य श्रद्धियो, एक सांभलज्यो हेतु उदार ॥ स्वामी बुद्धि सागरु, वारु मेल्या न्याय विशाल । अधिक बुद्धि ना आगरु भल उत्पत्तिया बुद्धि भाल ॥ १ ॥ पांच सीरी वायो खेत परवरोजी, चणा तणो चित्त धार। नाज पांचसौ मण चणा निपना, तब मतो कियो तिणवार ॥ २ ॥ घर मांहें तो धन आपांरे घणांजी, करां दान धर्म कहि वार। एक जणे सौ मण चणा आपिया, बहु भिख्यार्यां नु बोलाय ॥ ३ ॥ दिया सौ मण चणारा दूसरे, सेकाय भूंगरा सोय। त्यांरी गुगरी तीजे करायने, जिमाया भिखार्यां ने जोय ॥ ४ ॥ चौथे रोट्यां सौ मण चणा तणो, कडी पाखती कराय। भिखारी रांकादिक भणी, जुगति सुं दिया जिमाय ॥ ५ ॥ सौमण चणा पांचमें वोसराविया, तिणरे हाथ लगावा ना त्याग। कहो धर्म पुन्य घणो केहने, सखरो उत्तर देवो सताव ॥ ६ ॥ भगवन्तरी आज्ञा किण भणी, कुण आज्ञा बार कहात। एम सुणने उत्तर आयो नहीं। ऐसी भिक्खुनी बुद्धि उत्पात्त॥७॥

दान ऊपर दृष्टान्त दूसरो, स्वाम भिक्खु दियो सुखदाय। हलुकर्मी सांभल हर्षे घणा, भारी कर्मी द्वेष भराय ॥८॥ भिख्या मांगतो डोकरो, भम रह्यो अभ्यागत दुखियो एक। धर्मात्मा भूखाने धान द्यो, विरुआ बोलै वचन विशेष ॥ ९ ॥ एक जणै अणु-कम्पा आण ने, सेर चणा दिया सोय। गुणग्राम भिखारी करै घणा, आशीश देवै अवलोय ॥ १० ॥ आगै जाई एम बोलियो, सेर चणा दीधा सेठ एक। पिण दान्त नहीं कोई पीस दो, वारु छै कोई धर्मी विशेष ॥ ११ ॥ एक बाई अणुकम्पा आण ने पीस दियो कहते पाण। वलि आगै जाई इम बोलियो, छै कोई धर्मी पिछाण ॥ १२ ॥ एक सेठ सेर चणा आपिया, पीस दिया दूजी पुण्यवान। आटो फाकणो आवै नहीं, जिण सूं रोटी कर दो धर्म जान ॥ १३ ॥ अनुकम्पा तीजी आणने, सेर चूणारा फांफड़ा सोय। सिन्धो घाल कर दीधा सही, जीमी तृप्त होगयो जोय ॥ १४ ॥ तृषा लागी तिण अवसरे, आगै जाई बोल्यो बान। सेर चणा दिया एक सेठ, पीस दिया दूजी पुन्यवान ॥ १५ ॥ भट रोट्यां कर तीजी जीमावियो, अति लागी है तृषा अथाय। है धर्मात्मा एहवो, प्राण जाताने पाणी

पाय ॥ १६ ॥ चोथी बाई अणुकम्पा चित्त धरी, पायो त्रस सहित काचो पाण। कहो धर्म घणो हुवो केहने, पाछै कह्या च्यारूं ही पिछाण॥ १७ ॥ आज्ञा बारला दान ऊपरै, दियो स्वामी भिक्खु दृष्टन्त। प्रत्यक्ष कारण पापनो, किण विध पुन्य कहंत ॥१८॥ हलुकर्मी सांभल हर्षे हिये, भारी कर्मी भिड़कन्त। सूत्र न्याय साचा सही, धारे उत्तम पुरुष धर खंत॥ १६ ॥ पन्नर ढाल कही पनरमी, स्वामी थापी है श्रद्धा सार। उत्पत्तिया वुद्धि ओपती, वलि आगलि बहु विस्तार ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

जाव सुणी बुद्धिवान जन, चित्त पामे चमत्कार।
सांभल केइक समझिया, पाम्या हर्ष अपार ॥१॥
केयक वलि इण पर कहै, थे दान दया दी उथाप।
श्रद्धा किहां ही ना सुणी, प्रत्यक्ष श्रद्धो पाप ॥२॥
भिक्खु वलता इम भणे, पज्जुसणा में पेख।
आखा आटो आदि दे, आपै नहीं अशेष ॥३॥
पर्व्व दिवस पज्जुसणा धर्म्म तणा दिन धार।
अधिक धर्म्म तिहां आदरे, पाप तणो परिहार ॥४॥
दान अनेरा ने दियां, जाणे धर्म्म जिवार।
कीधो बंध किण कारणे, चित्त सूं करो विचार ॥५॥
ए बात है आगली, परस्परा पहिछाण।
कोह ए थाप करी किणे, चाहु करो विनाण ॥६॥

हूं तो हिवड़ाइज हुवो, जद तो नहीं थो जाण ।
जाव दियो अति जुगत सूं, सुण हरख्या सुविहाण ॥७॥

सूत्र न्याय शुद्ध परम्परा, सखर मिलावै स्वाम ।
अंग पूर्व धारी जिसा, ओजागर अभिराम ॥८॥

अपर दान रे ऊपरै, दीधा वलि दृष्टान्त ।
विविध न्याय वर दाखवा, सांभलजो चित्त शांति ॥९॥

॥ ढाल १६ मीं ॥

(घोड़ी री देशी)

शहर खेरवे पधास्या स्वामी, ओटो शाल प्रश्न पूछ्यो एम । श्रावक कसाई गिणो थे सरीखा, कहै खोटी श्रद्धा इसड़ी धारां म्हें केम ॥ स्वाम भिक्खु रा दृष्टान्त सुणजो ॥ १ ॥ स्वाम कहे किम गिणा सरीखा, जब ते कहै श्रावक नें दियां पाप जाणो । कसाई ने दियां पिण पाप कहो छो, प्रत्यच्च दोनूं सरीखा इण न्याय पिछाणो ॥ २ ॥ स्वाम कहै इम नहीं सरीखा; श्रावक कसाई वे जुआ संपेख । ओटो कहै दोनूं थया सरीखा, दोयां नें दियां पाप कहो ते लेख ॥ ३ ॥ पूज कहै थारी माता ने पायो, सचित पाणी री लोटी भर सोय । कहो तिणमें थारो निपनो कांई, ओटो कहै पाप छै अवलोय ॥ ४ ॥ पुनरपि स्वाम ओटा ने पूछ्यो, पाणी लोटी भर वेश्या ने पायो । धर्म्म थयो के पाप हुवो थाने, ओटो

कहै तिण में पिण पाप थायो ॥ ५ ॥ पूज कहै दोयां में पाप थायो, थारी माता ने वेश्या सरीखी थारे न्यायो। जो माता वेश्या ने न गिणो सरीखी, तो श्रावक कसाई सरीखा न थायो ॥ ६ ॥ अति कष्ट थयो लोक कहै ओटेजी, माता ने वेश्या सरीखी मानी। चित्त मांहैं चमत्कार लहे चातुर, अणहुन्ता अवगुण धारै अज्ञानी ॥ ७ ॥ सम्वत् अठारै पैंतालीसे स्वामी, प्रगट चौमासो कियो पींपार। जनक हस्तु करतु नो जगु गांधी, वारुं चरचा सूं श्रद्धा चित्त धार ॥ ८ ॥ भेषधारी तिण ने लागा भड़कावा, खोटी श्रद्धा भीखणजी री खार। एक गृहस्थ श्रावक ने वासतो आपी, पाप कहै तिण माहीं अपार ॥ ६ ॥ वलि किण गृहस्थ री वासती चोर ले गयो, तिण रो पिण गृहस्थ ने पाप बतावे। श्रावक ने चोर गिणै इम सरीखो, जब जगु स्वामी जी ने पूछ्यो प्रस्तावै ॥ १० ॥ पूज कहै उणनेज पूछणो, चद्दर थारी एक ले गयो चोर। एक चद्दर थे श्रावक ने आपो, जद थाने डंड किण रो आवै जोर ॥ ११ ॥ तस्कर चद्दर लेई गयो तिण रो, प्राश्चित मूल न सरधै संपेख। श्रावक ने दिधां रो प्राश्चित सरधै, जद तो दैणोज खोटो ठहर्यो त्यांरे

लेख ॥ १२ ॥ जात्र सुणी समज्यो जगु गांधी, ऐसी स्वामोजी री बुद्धि उत्पात। सिद्धन्त री सरधा ने थापण साची, न्याय विविध मेलव्या स्वामी नाथ ॥ १३ ॥ सोलमी ढाल में भिक्खु स्वामी री, ओलखाई बुद्धि श्रद्धा उदार। श्रीजिन आगन्या धारी सिर पर, सरधा दिखाय दीधी तन्त सार ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

थद्दे सावज दान में, पुन्य मिश्र एकन्त।
पूछयां कहै मुझ मून है, केई इसड़ो कपट करंत ॥ १ ॥
पूछयां न कहै पाधरो, पुन्य मिश्र पक्ष एक।
आख्यो हेतु ओपतो, धारु स्वाम विशेष ॥ २ ॥
किण ही पुरुष पूछा करी, नार भणी पिउ नाम।
थारे धणी रो नाम कुण, स्यूं पेमो है ताम ॥ ३ ॥
कहै पेमो क्यांने हुवै, वलि पूछयो तिणवार।
नाथू नाम है तेहनो, कन्त तणो अवधार ॥ ४ ॥
कहै नाथू क्यांने हुवै, वलि पूछयो सुविशेष।
पाथू है नाम तेहनो, तुझ पीतम संपेख ॥ ५ ॥
कहै पाथू क्यांने हुवे, इम बहु नाम विचार।
सांगे नाम आयां थकां, रहै अबोली नार ॥ ६ ॥
सैणो तब जाणै सही, इण रा पिउ रो नाम।
एहिज छै तिण कारणै, मून रही इण ठाम ॥ ७ ॥
जो सावज दान में पाप है, कहै क्यांने हुवै।
मिश्र पूछयां पिण इम कहै, क्यांने है मिश्र थाप ॥ ८ ॥
पुन्य पूछयां सूं मून रहै, न करै तास निखेह।
सैणो जब जाणै सही, इणरी श्रद्धा एह ॥ ६ ॥

॥ ढाल १७ मी ॥

(प्रभवो मन में चिन्तवै एदेशी)

पूज्य भीखणजी पधारिया, वर इक गाम विमास। साध अमरसिंघजी तणा, पूज आया त्यां पास ॥ १ ॥ प्रश्न भिक्खु स्वाम पूछियो, अणुकम्पा मन आण। मरता ने मूला दिया, जिणमें सूं हुवो जाण ॥ २ ॥ तामस आणी ते कहै, प्रश्न इसो। पूछन्त। जे मिथ्याती जाणिये, भिक्खु वलि भाषन्त ॥ ३ ॥ पूछण वाले पूछियो, समकती होवे सोय। अथवा मिथ्याती मानवी, जे पिण पूछै जोय ॥ ४ ॥ उत्तर आपै एहनो, जो मिथ्याती होय जाय। उत्तर तो आपो मति, नहीं तो आखो न्याय ॥ ५ ॥ तब ते बोल्यो तड़क ने, मूला मांहें पाप। पूज्य कहे पुन्य पाप त्रिहुं, के केवल पाप किलाप ॥ ६ ॥ देण वाला ने दाखिये, पुन्य पाप पिछाण। जाव न देवै जाण ने, वलि भिक्खु कहे वाण ॥ ७ ॥ केई मूला खवायां मिश्र कहै, इम पूछ्यां कहै आम। मिश्र कहै ते पापी सही, तब स्वामी कहै ताम ॥ ८ ॥ केई मूला खवायां पाप कहै, वलि ते बोल्यो वाण। पाप कहै ते पापिया, झूठा एकन्त जाण ॥ ९ ॥ फिर स्वामी पूछा करी, मूला

खवायां माण। कई एक पुन्य कहै सही, तब ते बोल्यो जाण ॥ १० ॥ पुण्य कहै सोही पापिया, सुण ने स्वाम विचार। श्रद्धा पुन्य री दीसै सही, वात तीनूंई वार ॥ ११ ॥ वलि मन भिक्खु विचारियो, कहिण वाला ने कह्यो पापी। पिण श्रद्धण वाला पुण्य नी, थिर पूछा करूं थापी ॥ १२ ॥ पूज इम चिन्तवी पूछियो, अनुकम्पा आण। मूला देवै ते मनुष्य ने, पुन्य केई श्रद्धे पिछाण ॥ १३ ॥ स्वाम तणी पूछा सांभली, वलि बोल्यो ते वाण। मन आसीं ज्यूं सरधसी, जब स्वाम लियो जाण ॥ १४ ॥ इम चिन्तवी स्वामी उचरे, मूला खवायां माण। प्रगट पुन्य प्ररूपो नहीं, पिण श्रद्धा पुन्यरी पिछाण ॥ १५ ॥ इत्यादिक जात्र अनेक सूं, कष्ट कियो अधिकाय। आया ठिकाणे आपणे, स्वामी महा सुखदाय ॥१६॥ मोटी मति महाराज नी, चारु बुद्धि सुविचार। जाब लियो अति जुगत सूं, ऊपर सूं अवधार ॥१७॥ सखर ढाल कही सतरमी, आगे बहु अधिकार। स्वाम दृष्टान्त सुणी करी, चतुर लहै चमत्कार ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

भीखणजी स्वामी भणी, किणही पूछा कीध।
दान असंजती ने दियां, पाप कहो प्रसिद्ध ॥ १ ॥

फड़वा फल किण कारणे, निर्मल बतावो न्याय।
कहै भिक्खु किण सेठ रे, नवली कड़ी बंधाय ॥ २ ॥
ते नवली रुपया तणी, तस्कर देखी ताम।
सेठ तणै लारे हुवो, रुपया लेवण काम ॥ ३ ॥
पूठै तस्कर पेखने, साहुकार न्हासन्त।
लारै तस्कर दौड़तो, इतलै पग अखुड़न्त ॥ ४ ॥
पग आखुड़ हेठो पड़यो, चित्त विलखाणो चोर।
इतले किण ही मानवी, अमल खवायो जोर ॥ ५ ॥
अमल खवाय पायो उदक, सेंठो कियो शूर।
दुश्मन ते तिण सेठ नो, साझ दियो भरपूर ॥ ६ ॥
अमल खवायो ते पुरुष, वैरी सेठ नो बाध।
साझ दियो वैरी भणी, अरि थी हुवै उपाधि ॥ ७ ॥
ज्यूं छकाय ना हिन्सक भणो, जे नर पोषै जाण।
ते वैरी षट काय नो, प्रत्यक्ष हिये पिछाण ॥ ८ ॥
हणणहार षट काय नो, तसु पोषे कियो शूर।
तिण कारण जीवां तणो, वैरी ते भरपूर ॥ ९ ॥

॥ ढाल १८ मी ॥

(सीता दिये रे ओलंभड़ो० पदेशी)

सावज दान श्रद्धायवा, दियो भिक्खु दृष्टान्त। खेत वायो एक करसणी, पाको खेत अत्यन्त। तन्त दृष्टान्त भिक्खु तणा ॥ १ ॥ इतले धणी रे वालो हुवो, दूखणी आयो देख। किणहिक औषध दे करी, सांतरो कियो विशेष ॥ तं० ॥ २ ॥ ताजा हुवो तिण अवसरै, खेत काट्यो धर खन्त। साझ

देण वाला ने सही, लागै पाप एकन्त ॥ ३ ॥ कहै पाप हुवै खेत काटियां, तो काटण वाला ने सोय । साझ दई ने साझो कियो, तिण ने पिण पाप जोय ॥ ४ ॥ तिमहिज और पापी तणो, साता कीधी विशेष । तिण माहैं धर्म किहां थको, दिल मांहैं देख ॥ ५ ॥ कैकेइक भेषधारी कहै, धन दीधां धर्म । वले कहै ममता उतरी, भोलांरे पाड़े भ्रम ॥६॥ पूज्य भिक्खु तिण ऊपरै, निरमल मेला न्याय । भ्रम लोकां रो भांजवा, स्वामी महा सुखदाय ॥ ७ ॥ किणही मनुष्य रे खेती हुन्ती, बीस बिघा विचार । दश विघा ब्राह्मण ने दिया, धर्म अर्थे धार ॥ ८ ॥ बीस हलांरी खेती विषै, दश हल खेसी दीध । ए पिण ममता उतरी, तिणरे लेखे प्रसिद्ध ॥ ९ ॥ कह्यो परिग्रह नव प्रकार नो, दोपद चौपद देख । पांच दास्यां दीधी पर भणी, पांच गायां संपेख ॥ १० ॥ ए पिण ममता उतरी, तिणरै लेखै तहतीक । धर्म कहै रुपया दियां, तो इणमें पिण धर्म ठीक ॥ ११ ॥ दास्यां खेती गायां दियां, पुन्य रो अंश म पेख । इमहिज रुपया आपियां, धर्म पुन्य म देख ॥ १२ ॥ पाप अठारा में पंचमो, परिग्रह महा विकराल । सेव्यां सेवायां पाप छै, भगवती में सम्भाल ॥ १३ ॥

सावद्य साता करै सही, इण सूं पाप एकन्त। जिन आज्ञा बाहिर जाणज्यो, सूयगड़ा अङ्ग शोभंत ॥१४॥ भिक्खु स्वाम भली परै, ओलखाया ऐन। हलुकर्मी हरष्या घणा, चित्त में पाम्या चैन ॥ १५ ॥ आखी ढाल अट्ठारमो, वारु स्वामो ना वोल। वोल साराहो सुहामणा, आछा ने अमोल ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

भीखणजी स्वामी भणी, किणही पूछा कीध।
दान असंजती ने दियाँ, पाप कह्यो प्रसिद्ध ॥ १ ॥
भिक्खु स्वामी इम भणे, सरध्या मुझ वच सोय।
प्रतीतिया रुचिया पवर, जिण सूं त्याग सुजोय ॥२॥
कै म्हाने भाण्डण भणी, करै इसा पचखाण।
इम कही कष्ट कियो अति हि, सखर स्वाम बुद्धिवान ॥३॥
किणहिक भिक्खु ने कह्यो, टोला वाला ताहि।
प्रत्यक्ष पुन्य प्ररूपे नहीं, सावज दान रे मांहि ॥४॥
स्वाम कहै कोई असतरी, जल लोटो भर जाण।
म्हारे हाटे सूंपज्यो, कही किणी ने वाण ॥ ५ ॥
नाम पिउ नो ना लियो, पिण सूंप्यो कर सान।
इम सानी कर पुन्य कहै, पुन्य री श्रद्धा पिछाण ॥६॥
किणहिक स्वामी ने कह्यो, पड़िमाधारी पेख।
दान निर्दोषण तसु दियां, सूं फल कहो विशेष ॥७॥
स्वाम कहै ले सूझतो, पड़िमाधारी पिछाण।
तसु फल होवै ते सही, देणवाला ने जाण ॥ ८ ॥
लेण वाला ने पाप कहै, पाप लगायो दातार।
तिण में पुन्य किहां थकी, स्वाम जाव श्रीकार ॥ ९ ॥

॥ ढाल १६ वीं ॥

(वीर सुणो मोरी विनती एदेशी)

काचो पाणी पायां मांहें पुन्य कहै, स्वामी दीधो हो तेहने दृष्टन्त। कोई खाई लुटावै पारकी, थारै लेखै हो इणमें पुन्य एकन्त॥ तन्त दृष्टन्त भिक्खु तणा॥ १॥ खांई लुटायां जो पाप है, पाणी पायां हो किम होसी पुन्य। दोनूं बरोबर देखल्यो, सावद्य दोनूं हो कण रहित है शून्य॥ तं०॥ २॥ अव्रत में अन धन दियां, भेषधारी हो थापै धर्म ने पुन्य। स्वाम भिक्खु दियो शोभतो, हद हेतु हो सुणज्यो तन मन॥ ३॥ लायमां सूं काढ़ दूजी लायमें, धन न्हाख्यां हो काम न आवै ते धार। आप कन्हे धन अव्रत में हुन्तो, अव्रती ने हो दियो अव्रत मझार॥ ४॥ लाय लागां गृहस्थ रो घर जलै, बलतो देखी हो किण ही धन काढ्यो बार। ले न्हाख्यो दूजी लायमें, ततखिण आयो हो सेठ पास तिवार॥ ५॥ अहो सेठजी तुझ घर आग थी, सखरी वस्तु हो धन काढ्यो म्हे सार। सेठ सुणी हरख्यो सही, ते धन किहां छै हो आपो वस्तु उदार॥ ६॥ ओ कहै न्हाख्यो दूजी आगमें, सेठ जाण्यो हो परो मूरख सोय। लायमां सूं काढी

न्हाख्यो लायमें, काम न आवै हो तिण लेखै कोय ॥ ७ ॥ अव्रत रूप लाय हुन्ती आपरै, अव्रती ने हो दीधो और ने धन। लाय लगाई और रे, प्रत्यक्ष देखो हो तिण में किम हुवै पुन्य ॥ ८ ॥ श्रावकरे त्याग तेतो व्रत सही, अव्रत जाणो हो बाकी रह्यो आगार। अव्रत सेवावै और री, तिण माहें हो धर्म नहीं लिगार ॥ ६ ॥ अव्रत व्रत न ओलखै, भेषधारी हो करै भेल संभेल। दृष्टान्त स्वाम दियो इसो, घी तम्बाकू हो भेला कदेय न मेल ॥ १० ॥ औषध जीभ आंख्यां तणो, आह्मो साह्मो हो घाल्यां दोनूं बिलाय। ज्यूं अव्रत में धर्म सरधियां, पाप व्रत में हो सरध्यां दुर्गति जाय ॥ ११ ॥ शोरीगर रा घर में शोर बासदी, न्यारा राख्यां हो घर बिणसै नांय। ज्यूं व्रत अव्रत फल जु जूआ, जन जाणयां हो समकित न जलाय ॥ १२ ॥ प्रगट पसारी रे पारखा, न्यारा राखै हो मिश्री सोमल न्हाल। ज्यूं धर्म अधम खातो जू जुवो, सैंठी समकित हो शुद्ध सरध्यां संभाल ॥ १३ ॥ कोई कहै गृहस्थ रो छान्दो अछे, दान देवै हो गृहस्थ ने देख। भिक्खु कह्यो छान्दा में तो धूल छै, घृत तो छै हो कूड़ी में संपेख ॥ १४ ॥ मैदो खाण्ड घृत शुद्ध मिल्यां

सखरा कहिये हो लाडू सरस सवाद। ज्यूं चित्त वित्त पात्र तीनूं जूड्यां, अतिफल लहिये हो, भव दधि तिरिये अगाध ॥ १५॥ घृत खाण्ड विहुं शुद्ध घणा, मैदारी जागां हो लाद है मांय। ज्यूं चित्त विच दोनूं चोखा मिल्या, पात्र जागां हो असाधु ने वहिराय॥ १६॥ घृत मैदो चोखा घणा, खाण्ड जागां हो माहें घालो धूल। ज्यूं चित्त पात्र दोनूं ही शुद्ध जूड्या, वित्त जागां हो असूझतो विष तुल्य॥ १७॥ खाण्ड मैदो चोखा खरा, घृत जागांहो माहें घाल्यो गौ-मूत। ज्यूं वित्त पात्र दोनूं ही शुद्ध जूड्या, चित्त जागां हो देवणवालो कपूत ॥ १८॥ घृत री ठौर गौमूत ह्वै, खाण्ड ठामे हो घाली धूल महा खार। लाद मैदारो जायगां, आवी मिलिया हो तीनूं अधिक असार॥ १९॥ ज्यूं देणवालो ही असूझतो, वस्तु दीधो हो असूझती जवून। अव्रत माहीं लेवाल अंगीकरी, प्रत्यक्ष पेखो हो इणमें किम हुवै पुन्य॥ २०॥ चित्त वित्त पात्र चोखा मिल्यां, कर्म निर्जरा हो पुन्य बन्ध कहि-वाय। एक अधूरो तीनां मझे, थिर चित्त देखो हो तिण में पुन्य न थाय॥ २१॥ दृष्टान्त ऐसा भिक्खु दिया, स्वामी मेल्या हो सूत्र ने न्याय

सिंध। थां विन इसड़ी कुण कथै, पूर्वधारो हो जैस। भिक्खु प्रबन्ध ॥ २२ ॥ पञ्चम आरै प्रगट्या, आप ओजागर हो आप सूं अनुराग। हूं पिण हिवड़ां ऊपनो, साची श्रद्धा हो पामी ए मुझ भाग ॥ २३ ॥ आखी ढाल उगणीसमी, चित्त उमन्यो हो भिक्खु आया चीत। याद आयां हो हियो हुलसै, गुण गावत हो हुवो जन्म पवित्र ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

सखरो मारग शोध ने, दियो स्वाम उपदेश।
कुबुद्धि कुकला केलवी, पूछे प्रश्न अशेष ॥ १ ॥
थांने असाध सरधने, दीयो में तुझ दान।
तिणरो मुझने स्यूं हुवो, इम पूछ्यो किण जान ॥२॥
भिक्खु कहै मिश्री भली, किण खात्री विष जाण।
मन सुख पावै के मरै, उत्तर एह पिछाण ॥ ३ ॥
ज्यूं थे असाध जाणने, दियो सूझतो दान।
अजाण पणो घट थांहरे, पात्र उत्तम फल जाण ॥४॥
इत्यादिक बहु आखिया, दान ऊपर दृष्टन्त।
किञ्चित् मात्र में कथ्या, वधतो जांणी ग्रन्थ ॥५॥
विविध दया ऊपर वलि, हेतु महा हितकार।
आक थोहर रा दूध सम, सावज दया असार ॥६॥
अनुकम्पा इहैं लोकरी, जीवणो वांछै जाण।
मोह राग माहैं तिका, तिणमें धर्म म ताण ॥७॥
जे आरम्भ सहित जीवणो, असंजती रो अंभ।
जिण वांछ्यो ए जीवणो, तिण वांछ्यो आरंभ ॥८॥

सूत्रे श्री जिन बरजियो, असंजम जीतव भास।
भिक्षु स्वाम भली परे, मेल्या न्याय विमास ॥६॥

॥ ढाल २० मी ॥

(नगर सोरीपुर राजवी रे० ए देशी)

केई पाखण्डी इम कहे रे, हाथ बुझावै दीयो। अल्प पाप बहु निर्जरा रे, दृष्टान्त करी थापे दोयो॥ दृष्टान्त करी दोय थापे रेशर्मो, तेउ जीव मुआ ते पाप कर्मो। आगला जीव बच्या तिणरो धर्मो। भोलां तणो मन पाड़े भर्मो जी, सहु कोई जो हो॥ १॥ उत्तर भिक्षु आपियो रे, सांभलज्यो चित्त लायो। हलुकर्मी सुण हर्षिव रे, भारी कर्मी भिड़कायो। भारीकर्मी भिड़के लहे तापो। तेउ जीव मुवां रो कहे पापो। और बच्या तिण रो धर्म थापो। कर रह्या मूरख कूड़ किलापो। तिणरी श्रद्धा रो लेखो सुणो आपो। नाहर मार्यां एकलो नहीं पापो जी॥ २॥ नाहर हिल्यो एक आंकरो रे, करै मनुषां रो खेगालो। गायां भैंस्यां अजा बाकरा रे, सांबर रोझ सियालो। सांभर रोझ सियाल पिछाणो। प्रत्यक्ष लूट रह्यो पर प्राणो। जीव घणा रो करै घमसाणो। पङ्क प्रभा उत्कृष्टी पयाणो जी॥ स०॥ ३॥ किणही विचार इसो

कियो रे, एतो है मांस आहारी। ए जीवियां जीव मारै घणा रे, एहवा अध्यवसाय धारी। एहवा अध्यवसाय स्यूं सिंह मारी। उणरी श्रद्धा रे लेखे विचारी। नाहर रो पाप हुवो निरधारी। और बच्यारो धर्म हुवो भारी जी ॥ स० ॥ ४ ॥ बीजो दृष्टन्त भिक्खु दियो रे, छै एक पापी कसाई। पांच पांच सौ भैंसा ने मारतो रे, करुणा न आणे काई। मन माहें करुणा आणै न काई। किण ही विचार कियो मन मांहो। एहने मार्‌यां बहु जीव बचाई। एम विचारी ने मार्‌यो कसाई, घणा जीवांने बचावण तांई जी ॥ स० ॥ ५ ॥ लाय बुझायां मिश्र कहै रे, तिणरी श्रद्धा रे लेखो। कसाई ने मार्‌यां पिण मिश्र छै रे, पोतानी श्रद्धा पेखो। पोतारी श्रद्धा पेखो निज नैणो। पाप कसाई नो ए सत्य वैणो। जीव घणा बच्यां रो धर्म लेणो। पोतारी श्रद्धा लेखै कहिदेणो, कसाई ने मार्‌यां एकन्त पाप न कहिणो जी ॥ स० ॥ ६ ॥ तीजो दृष्टन्त स्वामी दियो रे, उरपुर एक अजोगो। घणा ऊंदारां रा गटका करै रे, मनुष्य पहुंचावै पर लोको। मनुष्य मार परलोक पहुंचावै। घणा पंख्यां ना अण्डा पिण खावै। सर्प घणा जीवां ने सतावै,

उत्कृष्टे धूमप्रभा लग जावै जी ॥ स० ॥ ७ ॥ किणं ही विचार इसो कियो रे, सर्प घणा ने सतावै। एक सर्प मार्यां थकां रे, जीव घणा सुख पावै। जीव घणा सुख पावै सुजाणो। अनुकम्पा बहु जीवांरी जाणी। सर्प मार बचाया बहु प्राणी। लाय बुझायां कहै मिश्र वाणी, तिणरे लेखै इणमें मिश्र पिछाणीजी ॥ स० ॥ ८ ॥ चौथो दृष्टान्त स्वामी दियो रे, कोई पुरुष नो एहवो आचारो। बाप मुवां पहली कह्यो रे, काल करतां तिणवारो। काल करतां सुत कही थी वाणो। सुखे तुम्हारा निसरो प्राणो। थां लारै अटव्यादिक बालस्यूं जाणो, घणा ग्राम नगर बाल करस्यूं घमसाणोजो ॥ स० ॥९॥ मनुष्य ढांढा घणा मारस्यूं रे, बाप ने एहवो सुणायो। पिता पहुंतो परलोकमें रे, पछै करवा लागो सहु तायो। करवा लागो छै जीवां रो घमसाणो। किणहिक मनमें विचार्यो जाणो। एक मार्यां सूं बचै बहु प्राणो, इम चिन्तव ते पुरुष ने मार्यो अजाणो जी ॥ स० ॥ १० ॥ लाय बुझायां मिश्र कहै रे, तिणरे लेखै ए पिण मिश्र होयो। एक मार्यो पाप तेहनो रे, बहु बचिया तिणरो धर्म जोयो। बचिया रो धर्म त्यांरे लेखे बाजै। अल्प

पाप बहु पुन्य फल राजे। एक मास्यो घणा राखण काजे, इण में पिण मिश्र कहितां कांय लाजे जी॥ स०॥ ११॥ पूज्य कह्यो वलि पांचमो रे, दृष्टान्त अधिक उदारो। कोई तुरकादिक आकरो रे, साथ सेना ले अपारो। सेना लेई देश ऊपर आयो। ग्राम नगर कतल करवाने ध्यायो। मनुष्य तिर्यंच मारण उमाह्यो, सैन्य अधिकारी ना हुक्म थी थायो जी॥ स०॥ १२॥ किण ही विचार इसो कियो रे, करसी घणा जीवाँरो संहारो। सैन्य अधिकारी ने मारियां रे, सर्वजीव बचै इणवारो। जीव बचै कतल नहीं हुवै तायो। इम जाण अधिकारी ने परभव पहुंचायो। मास्या ते पाप बच्यो पुन्य थायो, तिण रे लेखै इण में पिण मिश्र कहिवायो जी॥ स० ॥ १३॥ बचियारो धर्म बताय ने रे, कहै लाय बुझायां धर्म। जीव अग्निरा जीविया रे, तिणसूं घणा मरै ते अधर्म। अग्नि जीव्यां घणा मरै ते पापो। इण विध कर रह्या कूड़ किलापो। अग्नि जीव हणियां मिश्र थापो। तेहनो न्याय सुणो चुप चापो, तिणरे लेखै गायां मास्यां केवल न पापो जी॥ स०॥ १४॥ गायां भेंस्यां आद जीवसी रे, तेपिण घणी छः काय हणतो। मनुष्यादि पवन छतीस छै रे, मच्छा-

दिक जलचर जन्तो। जन्तु मच्छादिक जलचर जाणी। ते पिण हणे छःकाय ना प्राणी। अग्नि जीवने हणयां मिश्र माणी, तिणरे लेखे ए सर्व हणया मिश्र जाणी जी ॥ स० ॥ १५ ॥ संसार मांहें साधु विनां रे, सर्वहिंसा रा त्याग न दीसै। पन्नवणा पद बीस में रे, भाख्यो श्री जगदीश। श्री जगदीश भाखी इम रेंसो। प्राणातिपात वेरमण सु अशेषो मनुष्य विनां और रे न कहेसो। बुद्धिवन्त जोय विचारज्यो रेंसो जी ॥ स० ॥ १६ ॥ साधू विना संसारी सहुरे, हिंसक जीव कहायो। त्यां सगलां ने मारियां रे, एकलो पाप न थायो। किण ही ने मार्‍यां एकलो पापो। जण ने मार्‍यो तिणरो महा तापो। और बच्या तिणरो पुन्य मिलापो। साधु ने मार्‍यां रो एकन्त पापो। खोटी श्रद्धारा लेखा री ए थापो जी ॥ स० ॥ १७ ॥ लाय बुझायां मिश्र कहे रे, तिणरी श्रद्धारे न्यायो। हिंसक ने मारण तणा रे, त्याग करावणा नहीं तायो। त्याग करावे छै किण न्यायो। हिंसक बच्या घणा जीव हणायो। हिंसक मार्‍यां मिश्र धर्म थायो। ऊंधी सरधा रो तो ओहिज न्यायोजी ॥ स० ॥ १८ ॥ दृष्टन्त स्वाम भिक्खु दिया रे, सूत्र न्याय तंत सारी। जीव बच्या धर्म थापने

रे, भूल गया भेषधारी। भूल गया भ्रम में भेषधारी। मोहराग माहें दया विचारी। भिक्खु ओलख तसु कियो परिहारी। तिरणो वञ्छे निज पर नो तिवारी, तिण माहें धम कह्यो तंतसारी जी॥ स०॥ १६॥
वीसमी ढाल विषै कह्यारे, दया ऊपर दृष्टन्तो। सूत्र सिद्धन्तरा जोर सूं रे, न्याय मिलायो तंतो। स्वाम भिक्खु शुद्ध न्याय मिलायो। दानदया रूड़ी रीत दिखायो हलुकर्मी सुण २ हर्षायो, भारी कर्मा रे तो मन नहीं भायो जी॥ स०॥ २०॥

॥ दोहा ॥

पाली शहर पधारिया. पूज्य भवोदधि पाज।
एक जणो तिहां आवियो, चरचा करवा काज॥१॥
ऊंधो बोलतो कहै. दुष्ट श्रावक तुझ देख।
फांसी कोई रा गलहुन्ती, काढै नहीं संपेख॥२॥
थारा म्हारा मति करो, स्वामी भाखे सोय।
समचे बात करो सही, न्याय हिये अवलोय॥३॥
फांसी ली किण रूंख थी, देख्यो जावत दोय।
काढ़ै नहीं ते केहवो, काढ़ै ते केहवो होय॥४॥
ते कहे फांसी काढ़ ले, उत्तम पुरुष ते तन्त।
जाणहार शिव स्वर्ग नो, दयावन्त दीपन्त॥५॥
नहिं काढ़ै ते नरक रो, जाणहार दौभाग।
भिक्खु कहै तुम तुझ गुरु, जातां दोनूं भाग॥६॥
कुण फांसी काढ़ै कहो, कहै हूं काढूं तिहां जाय।
मुझ गुरु तो काढ़ै नहीं, मुनि ने कल्पे नांय॥७॥

स्वाम कहै शिव सर्ग नो, जाणहार तूं पेख।
तुझ गुरु नरक निगोदना, जाणहार तुझ लेख ॥८॥
सुण ने कष्ट हुवो घणो, जाव देन असमथ।
ऐसी बुद्धि स्वामी तणी, उर में अधिक ओपंत ॥६॥

॥ ढाल २१ मी ॥

॥ पर नारी संग परिहरो ए देशी ॥

सावद्य उपकार संसार तणा छै, तिणमें म जाणज्यो तंतो। पूज्य भिक्खु ओलखायवा प्रगट दियो इसो दृष्टंतो॥ स्वाम भिक्खु रा दृष्टान्त सुणज्यो ॥ १ ॥ एक नृपति चोर पकड़्या इग्यारह, हुवो मारण रो दीधो। साहुकार एक अरज करी इम, सांभलज्यो प्रसिद्धो ॥ स्वा० ॥ २ ॥ पंच पंच सौ रुपया प्रकट, इक इक चोर ना लीजे। आप कृपानिधि अरज मानी ने, चोर इग्यारा छोड़ीजे ॥ स्वा० ॥ ३ ॥ राजा भाखै महा अपराधी, दुष्ट घणाई दुख दाता। छोड़वा जोग नहीं छै तस्कर, मान मछर मद माता ॥ स्वा० ॥४॥ सेठ कहै दश मूको स्वामी, लाभ रुपयां रो लोजे। तो पिण नृप नहीं छोड़े तस्कर, कहे चोरां री पख नहीं कीजै ॥ स्वा० ॥ ५ ॥ नव तस्कर मूको कृपानिधि, आठ सात आदि जाणी। इण पर अरज करी अधिकेरी, महिपति तो नहीं मानी ॥ स्वा० ॥६॥ रोकड़ा पांच सौ देई राजा

ने, चोर एक छोड़ायो । ते पिण विनती अधिक करी तब, तस्कर मूक्यो तायो ॥ स्वा० ॥७॥ पुर ना लोक करै गुण प्रगट, सेठ तणा सहुकोयो । धन्य धन्य लोक कहै यो धर्मो, हर्ष हिये अति होयो ॥ स्वा० ॥ ८ ॥ बन्धीछोड़ लोकां में वाजै, अधिक कियो उपगारो । तस्कर पिण गुण गावै तेहना, सुयश फैल्यो संसारो ॥ स्वा० ॥ ६ ॥ महिपति दश चोरां ने मराया, इक निज स्थानक आयो । समाचार न्यातीला ने सुनाया, परिणय दुख अति पायो ॥ स्वा ॥ १० ॥ तस्कर दश ना न्यायतीला ते, भारी द्वेष भराणा । वैर वाल ने भेला हुवा, बहु प्रत्यक्ष ही प्रगटाणा ॥ स्वा० ॥ ११ ॥ चोर सारां ने साथ लई चाल्यो, पुर दरवांजे पिछाणो । चिट्ठी बांध लोकां ने चेतायो, सांभलज्यो सहु वाणो ॥ स्वा० ॥ १२ ॥ मुझ तस्कर दश मास्या तिणरो, इग्यारे गुणो वैर गिणस्यूं । मनुष्य एक सौ दश मास्यां स्यूं, पछै विषटालो करस्यूं ॥ स्वा० ॥ १३ ॥ साहुकार ना पुत्र सगा ने. मित्र भणी नहीं मारूं । अवर न छोडूं उराणे आयो, पंथ रह्या पिण पारूं ॥ स्वा० ॥ १४ ॥ एम कहो जन मारण उमग्यो, सुत किण ही रो संहारै । किण ही रो तात भाई हणै किण रो माता

किण री मारै ॥ स्वा० ॥ १५ ॥ किण रो नार हणै अति कोप्यो, बहन कोई री विणसै। किण ही रो भूवा भतीजी किण री, तस्कर इम जन त्रासे ॥ स्वा० ॥ १६ ॥ प्रबल भयंकर नगर में प्रगट्यो, होय रह्यो हा हा कारो। सेठ ने निंदवा लागा सहु जन, प्राभवै वचन प्रहारो ॥ स्वा० ॥ १७ ॥ साहुकार रे घर जाई सगला, रोवे लोग लुगाई। कोई कहै मुझ माता मराई, कोई कहै प्रिय भाई ॥ स्वा० ॥ १८ ॥ रे पापी तुझ घर धन बहु थो, तो कूवा में क्यों नहीं न्हाख्यो। चोर छोड़ाई म्हारा मनुष मराया, तस्कर जीवतो राख्यो ॥ स्वा ॥ १९ ॥ सेठ लालरियो शहर छोड़ी ने, बीजे गाम वस्यो जाई। इण भव फिट २ हुवो अधिको, परभव दुर्गति पाई ॥ स्वा० २० ॥ जे जन गुण करता था तेहिज, अवगुण करत अथागो। संसार नो उपगार इसो छै, मोख तणो नहीं मागो ॥ स्वा० ॥ २१ ॥ मोख तणो उपगार है मोटो, सुर शिव पद संचरिये। जिण आगन्या तिण माहें जाणी, उलट धरी आदरिये ॥ स्वा० ॥ २२ ॥ भिक्खु स्वाम भली पर भाख्यो, दया ऊपर दृष्टन्तो। उत्पात्तिया बुद्धि अधिक अनोपम, हलुकरमी हरषंतो ॥ स्वाम ॥ २३ ॥ इक बीसमो ढाल में आख्यो. अघ

हेतु उपगारो। प्रत्यक्ष ही फल सेठज पाया आगलि वहु अधिकारो ॥ स्वा० ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

शिव संसार तणा सही, कह्या होय उपगार।
भिक्खु तिण ऊपर भला, दृष्टन्त दिया उदार ॥ १ ॥
उरपुर साधो एक ने, उजाड़ में अवधार।
किण झाड़ो देई करी, ताजो कियो तिवार ॥ २ ॥
पिता कहै मुझ सुत दियो, भाई बहिन भाखंत।
ते म्हाने भाई दियो, स्त्री कहै दीधो कंत ॥ ३ ॥
चूड़ो चूंदड़ी अम रही, ते थारो उपगार।
इम कहै मंत्रणहार ने, स्वजन सगा परिवार ॥ ४ ॥
ए उपगार संसार नो, तिण में नहीं तंत सार।
कर्म्म बंध कारण कह्यो, नहीं धर्म्म पुण्य लिगार ॥ ५ ॥
उरपुर साधो एक ने, साधां ने कहै सोय।
यन्त्र मन्त्र चूंटी जड़ी, औषध आपो मोय ॥ ६ ॥
संत कहै कल्पे नहीं, वलि बोल्यो ते वान।
करामात हो तो कहो, के लियो भेष तुफान ॥ ७ ॥
करामात मुनि कहै इसी, दुखी कदे नहीं थाय।
ते कहे मुझ ते पिण कहो, अणशण मुनि उचराय ॥ ८ ॥
शरणा सूंस दिया घणा, शिवगामी सुर थाय।
मोख तणो उपगार ए, स्वाम दियो ओलखाय ॥ ९ ॥

॥ ढाल २२ मी ॥

(डाभ मुंजादिक नी डोरी एदेशी)

दूजो दृष्टन्त भिक्खु दीधो, सांभलज्यो प्रसिद्धो। लोक मोक्ष ने मग नहीं मेले, तेतो कटे ही न थावे

भेल ॥ १ ॥ साहुकार रे स्त्रियां दोय, एक श्राविका शुद्ध अवलोय। वैराग अत्यन्त वखाण, किया रोवण रा पचखाण ॥ २ ॥ दूजी धर्म्म में समझे नाहीं, चित्त काम भोग री चाहि। केतलाइक काल विचार, परदेश माहें भरतार ॥ ३ ॥ काल कर गयो ते किण वार, वात सांभली छै वेहुं नार। जिण रे रोवण रा छै त्याग, ते तो रोवे नहीं धर राग ॥ ४ ॥ समता धार वैठी सोय, कियो नेम न भांगै कोय। शुभ अशुभ कर्म्म स्वभावे, प्रत्यक्ष ओलख लियो प्रभावे ॥ ५ ॥ दुःख पाप प्रभावे देखै, वलि कर्म्म वांधू किण लेखै। उदै वांध्या जिसाइज आय, इम चित्त ने दियो समझाय ॥ ६ ॥ वीजी रोवे करत विलाप, कहै कवण उदय हुवा पाप। छाती माथो कूटे तन झाड़े, अति रोवती वांगा पाड़े ॥ ७ ॥ हाहाकार हुवो तिण वेलां, लोक हुवा सैकड़ा भेला। रोवे तिण ने अधिक सरावै, पतिव्रता ये दुःख पावै ॥ ८ ॥ वले वोले घणा लोग लुगाई, धन्य धन्य ये नार सुहाई। इण रे प्रीतम स्यूं अति प्यार, तिण स्यूं रोवै छै वांगां पाड़ ॥ ९ ॥ नहीं रोवे तिण ने जन निन्दे, आतो पापणी थी अपछंदे। आ तो मुवोज वांछती कन्त, आंख में आंसू नहीं आवन्त ॥ १० ॥ संसारी रे मन इम भावै,

मोह कर्म वसै मुरझावै। साधु कहो किण ने सरावै, परमारथ बिरला पावै ॥ ११ ॥ मोख ने लोक रो मग न्यारो, बुद्धिवन्त हिया में विचारो। दियो स्वाम भिक्खु दृष्टान्त, प्रत्यच्च देखाया दोनूं पंथ ॥ १२ ॥ इम ही संसार नो उपगारो, मोच्च रा मारग सूं न्यारो। बारुं मोख तणो उपगार, संसार ने छेदणहार ॥ १३ ॥ ऐसा भिक्खु उजागर भारी, न्याय मेलविया तन्तसारो। कही ढाल बावीसमी सार, भिक्खु रा गुणा रो नहीं पार ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

श्रद्धा उपर स्वामजी, दिया घणा दृष्टान्त।
कहि २ ने कितरो कहूं, न्याय मिलाया तंत ॥ १ ॥
वलि आचार रे ऊपरै, न्याय मिलाया सार।
ग्रन्थ वधतो जाण ने, न कियो वहु विस्तार ॥ २ ॥
इन्द्री वादी ऊपरै, काल वादी पर सोय।
दृष्टांत पूज्य दिया घणा, म्हे वहु न कह्या जोय ॥ ३ ॥
प्रस्तविक प्रगट पणे, हेतु हद हितकार।
आख्या भिक्खु ओपता, उत्पत्तिया अधिकार ॥ ४ ॥
कथा नंदी सूत्रे कही, चार वुद्धि पहिछाण।
तिण कारण दृष्टांत सुण, चमको मति सुजाण ॥ ५ ॥
केसी स्वामी पिण कह्या, सखरा हेतु सार।
इमहिज भिक्खु जाणज्यो, पंचम काल मझार ॥ ६ ॥
मूरख जन दृष्टांत सुण, उलटा बांधे कर्म्म।

खबर नहीं जिन धर्म्म री, भूला अज्ञानी भ्रम ॥७॥
हलुकर्मी दृष्टान्त सुण, पामे अधिको प्रेम ।
भारी कर्म्मा सांभली, बोलै भावे तेम ॥ ८ ॥
विचरत २ आविया, शहर केलवे स्वाम।
ठाकुर मोहकम सिंहजी, वांदण आया ताम ॥ ६ ॥

॥ ढाल २३ मीं ॥

(आगे जातां अटवी ए देशी)

सहु परषदा सुणतां, सिरदार सुहायो रे। मोहकम सिंहजी, बोलै इम वायो रे॥ भिक्खु ऋष भणी ॥ १ ॥ गाम २ री विचरयां, अति आपने आवै रे। जन बहु देश नां, सहु आपने चहावै रे, भिक्खु ऋष भला ॥ २ ॥ नर नारी आपने, देखी हुवै राजी रे, कर जोड़ी करै, जन कीरत जाभी रे॥ भि० ॥ ३ ॥ पुण्यवन्ता प्रत्यक्ष नर नारी निरखै रे। सूरत देखने, हिवड़े अति हर्षे रे॥ भि० ॥ ४ ॥ घणा लोक लुगायां ने आप वल्लभ लागो रे। ते कारण किसो, थांरे हर्ष अथागो रे॥ भि० ॥ ५ ॥ इसो गुण कांई आप में, ते मुझ ने बतावो रे। सखर पणे सही, दिल में दरसावो रे॥ भि० ॥ ६ ॥ भिक्खु इम भाखै, एक सेठ प्रदेशे रे। वर्ष बहु बीतिया, त्रिय छै निज देशे रे॥ भि० ॥ ७ ॥ ते नार पतिव्रता, शीले गह गहती रे। निज प्रीतम

थकी प्रेमे अति रहती रे। भिक्खु ऋप भणै ॥ ८ ॥ घणा महीना हुवा, कागद नवी आयो रे। त्रिय चिन्ता करे, मन प्रीतम मांह्यो रे ॥ भि० ॥ ६ ॥ ते सेठ प्रदेश थी, कासीद पठायो रे। खरची दे करी, तिण पुर ते आयो रे ॥ भि० ॥ १० ॥ सेठ तणी हवेली, आय ऊभो तायो रे। किणहिक पूछियो, किण पुर थी आयो रे ॥ भि० ॥ ११ ॥ लियो नाम ते पुर नो, नारी सुण हरषी रे। आवी बारणै, नैणा तसु निरखी रे ॥ भि० ॥ १२ ॥ कासीद ने देखी, हिवड़े हरषाणी रे। सुखसाता सुणी, रुं रुं विकसाणो रे ॥ भि० ॥ १३ ॥ उन्हा पाणी सूं उण रा पग धोवै रे। आनन्द जल भस्या, नेत्रां सूं जोवै रे ॥ भि० ॥ १४ ॥ वर भोजन करने, कन्हे वेस जीमावै रे। पूछै वलि वलि, समाचार सुहावै रे ॥ भि० ॥ १५ ॥ साहजी डिलां में, किसाइक छै जाणी रे। सुख साता अछै, पूछै हरषाणी रे ॥ भि० ॥ १६ ॥ साहजी कठे पोढ़े, किण जागां वैसे रे। वात सारी कहो, सुण ने अति उलसै रे ॥ भि० ॥ १७ ॥ कोई कारण नहीं छै, साहजी रे तन में रे। उत्तर सांभली, त्रिय हर्षे मन में रे ॥ भि० ॥ १८ ॥ साहजी कहो मुझ ने, समाचार कह्या छै रे। इहां

आसी कदे, वर्ष वहोत थया छै रे ॥ भि० ॥ १६ ॥
दिल रात्रि हूं तो, दिल अति चिन्ता करती रे।
कागद ना दियो, मन में दुख धरती रे ॥ भि० ॥२०॥
कासीद कहै सुणो, साहजी रा जावो रे। एम कह्यो
सही, आवां छां उतावो रे ॥ भि० ॥ २१ ॥ पिण
कोइक कारण सूं, अल्प दिन रेजो रे। मुझ ने
मेलियो, सुण वाच्यो हेजो रे ॥ भि० ॥ २२ ॥ समा-
चार आपने, साहजी कहिवाया रे। म्हे ताकीद स्यूं
आया के आया रे ॥ भि० ॥ २३ ॥ पैदास घणी छै,
सुख से तुम रहिज्यो रे। किण ही वात री, मन
फिकर म कीजो रे ॥ भि० ॥ २४ ॥ समाचार ज्यूं
ज्यूं कहै, त्यूं त्यूं मन हरषै रे। राजी हुवै घणी,
कासीद ने निरखै रे ॥ भि० ॥ २५ ॥ कासीद ने
देखी, हर्षे अति नारी रे। ते कहै पिउ तणी, वतका
अति प्यारी रे ॥ भि० ॥ २६ ॥ एहवो विरतंत देखी,
कहे अजाण एमो रे। इण दलिद्री थकी, पतिव्रता
नो पेमो रे ॥ भि० ॥ २७ ॥ सुण वोल्यो सैणो, नहीं
इण स्यूं प्यारो रे। पिउ समाचार थी, हरषी है
नारो रे ॥ भि० ॥ २८ ॥ और भ्रम मति राखो, आ
महा गुणवन्ती रे। सत्यवंती सती, शुद्ध माग चलंती
रे ॥ भि० ॥ २६ ॥ समाचार प्रयोगे, पतिव्रता हर-

पाणी रे। और भरम नहीं, तिमहिज म्हे जाणी रे॥ भि०॥ ३०॥ भगवान रा गुण म्हे, विध रीत बतावां रे। शिव संसार नो, मारग ओलखावां रे॥ भि०॥ ३१॥ झीणी २ म्हे, सूत्र रहित बतावां रे। लोभ रहित पणै, भिन्न २ दरशावां रे॥ भि०॥ ३२॥ दुःख नरक निगोद ना, दूरा टलजावै रे। ते वातां कहां, तिण कारण चाहवै रे॥ भि०॥ ३३॥ घणा लोग लुगाई, इण कारण राजी रे। गामो गाम थी, विनतियां ताजी रे॥ भि०॥ ३४॥ कवडी नहीं मांगां, शिव पंथ बतावां रे। नर नार्यां भणी, इण कारण सुहावां रे॥ भि०॥ ३५॥ कासीद निर्गुण थो, पिण पिउ समाचारो रे। तिण मुख स्यूं कह्या, तिण स्यूं हरषी नारो रे॥ भि०॥ ३६॥ म्हे महाव्रत धारी, जिन वैण सुणावां रे। बहु प्रकार थी, नर नार्यां ने सुहावां रे॥ भि०॥ ३७॥ नरपति सुरपति पिण, राण्यां इन्द्राणी रे। ते मुनिवर भणी, निरखे हरषाणी रे॥ भि०॥ ३८॥ मुनि नो अभरोसो, कोई नहीं राखै रे। अण समझू तिको, मन आवै ज्यूं भाखै रे॥ भि०॥ ३९॥ ठाकुर मोहकमसिंह, सुण ने दरशणो रे। सत्य वचन आपरा, स्वामी वैण सुहाणो रे॥ भि०॥ ४०॥ ऐसा भिक्खु स्वामी, बुद्धि

अधिक उदारी रे। उत्तर अति भला, सुणतां सुख-
कारी रे॥ भि० ॥ ४१ ॥ भिक्खु ना जवाब स्यूं,
अनुरागी हर्षे रे। भिक्खु गुण भला, गुण ग्राही
परखे रे॥ भि० ॥ ४२ ॥ द्वेषी अगुणी जन, सुण
मुंह मचकोड़े रे। ते अवगुण थकी, आतम ने जोड़े
रे॥ भि० ॥ ४३ ॥ तन्त ढाल तेवीसमी, सुणतां
सुखदाई रे। स्वाम भिक्खु तणी, वतका मन भाई
रे॥ भि० ॥ ४४ ॥

॥ दोहा ॥

किण ही भिक्खु ने कह्यो, लागूं तुझ पहु लोय।
अवगुण काढ़े थांहरा, स्वाम कहे तब सोय ॥ १ ॥
अवगुण काढ़े मांहरा, छोनी काढ़ता सोय।
म्हारे अवगुण काढ़णा, मांहें न राखणा कोय ॥ २ ॥
कांयक तप संयम करी, अवगुण काढ़ां आप।
कांयक जन अवगुण करे, सम रहि काढ़ां पाप ॥ ३ ॥
संक्षेपे वैंची स्वामजी, इम बहु बात अनेक।
देसूरी जातां मिल्यो, द्वेषी महाजन एक ॥ ४ ॥
तिण पूछ्यो स्यूं नाम तुझ, भीक्खण नाम कहाज।
तिण कह्यो तेरापन्थी ते, स्वाम कहे तेहीज ॥ ५ ॥
तव कहे तुझ मुख देखियां, जावै नरक मझार।
पूज्य कहै तुझ मुख देखियां, किहां जावै कहो भार ॥ ६ ॥
मुझ मुख देख्यां शिव स्वर्ग, तव बोल्या महाराय।
म्हे तो इसड़ी ना कहां, मुख थी नरक शिव पाय ॥ ७ ॥

पिण मुख देख्यो थांहरो, म्हारे तो शिव स्वर्ग।
म्हारो मुख देख्यो तुम्हें, तुम कहिणी तुझ नर्क ॥ ८ ॥
सुण ने कष्ट हुवो घणो, ऐसी बुद्धि अधिकाय।
यलि उत्पत्तिया बुद्धि करी, निर्मल मेल्या न्याय ॥ ६ ॥

॥ ढाल २४ मी ॥

(कहै छै रूप श्री नार सुणज्यो ए देशी)

स्वाम भिक्खु सुखदाय, मणिधारी महा मुनिराय हो ॥ भिक्खु बुद्धि भारी ॥ अति मति श्रुति पर्यव अथाय, जसु गुण पूरा कह्या न जाय हो ॥ भिक्खु बुद्धि भारी ॥ बुद्धि अति अधिक अपारी, ए तो स्वाम सदा सुखकारी हो ॥ भि० ॥ १ ॥ धर देव गुरु ने धर्म्म, पद तीन दिखाया पर्म्म हो ॥ भि० शुद्ध सरध्यां समकित सार, धुर शिव पावड़ियो धार हो ॥ भि० ॥ २ ॥ दियो गुरु ऊपर दृष्टन्त, तकड़ी री डांड़ी रो तन्त हो ॥ भि० ॥ तीन वेच डांड़ी रे समीच, विहु पासे ने इक वीच हो ॥ भि० ॥ ३ ॥ विचले ह्वै फरकज बाण, कहिये तसु अन्तर काण हो ॥ भि० ॥ तसु विचलो वेच हुवे तंत, कोई अन्तर काण न कहन्त हो ॥ भि० ॥ ४ ॥ ज्यूं देव गुरु धर्म्म जाणा, पद गुरु नो बीच पिछाणी हो ॥ भि० ॥ गुरु होवे शुद्ध गुणवंत, तो देव धर्म्म कहै तंत हो ॥ भि० ॥ ५ ॥ होवे गुरु हीण आचारी, वलि श्रद्धा भ्रष्ट

विचारी हो ॥ भि० पाड़ै देव मांहे पिण फेर, धर्म्म में पिण कर दे अंधेर हो ॥ भि ॥६॥ गुरु मिले ब्राह्मण तत् खेव. तो देव कहे महादेव हो भि० अने धर्म्म बतावै एह, जन विप्र जिमावे जेह हो ॥ भि० ॥ ७ ॥ भोपा गुरु मिले भरमाजा, देव कहै देव धर्म्मराजा हो भि० सुरह गायनो वाहरूसावो, धर्म्म पातील्यो भोपा जिमावो हो भि० ॥ ८ ॥ गुरु मिले कांवरिया कहेजी, देव बताय देवै रामदेजी हो भि० धर्म्म कहै कांवर जिमावो, वले जमारी रात्रि जगावो हो ॥ भि०॥६॥ अरु गुरु मिल जावे मुल्ला, तो देव बताय दे अल्ला हो भि० धर्म्म जवे करण जलपंता, एर चरंति आदि कहंता हो भि० ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

पर चरति मेरू चरति, खेर चरति बहुतेरा ।
हुक्म आया अल्ला साहिबरा, गला काटूंगा तेरा ॥११॥
ए साखी पढ़ पापिया, कती करै पर जीव ।
ते पाप उदय आयां छतां, पामै दुःख अतीव ॥ १२ ॥

॥ ढाल तेहिज ॥

जो गुरु मिले हिंसा धर्म्मी, कहै निगुण देव कुकरमी हो भि० धर्म्म फूल पाणी में थापे, सूत्रां रा वचन उत्थापे हो भि० ॥ १३ ॥ गुरु मिले असल

निग्रन्थ, देव बताय देवै अरिहन्त हो भि० धर्म्म जिन आज्ञा में बतावै, इहां अन्तर काण न आवै हो भि० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

गज्री मैमूंदि घासती, तीनूं एकण गोत ।
जिण ने जैसा गुरु मिल्या, विसा काढ़िया पोत ॥१५॥

॥ ढाल तेहिज ॥

इण दृष्टन्त गुरु हुवै जैसा, तिके देव बतावै तैसा हो भि० वलि धर्म्म इसोज बतावै, नर समझू न्याय मिलावै हो ॥ १६ ॥ उत्तम पुरुष आचारी, गुरु सत्त बीस गुण धारी हो भि० निर्मल धर्म्म देव निर्दोष, मन सूं सरध्यां लहे मोख हो ॥ १७ ॥ वर लेखा भिक्खु बताया, दिलमें भिन्न २ दरशाया हो भि० ए कही चौवीसमी ढाल, भिक्खु यश अधिक रसाल हो ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

अज्ञाण कैयक इम कहै, म्हारे करणी सूं नहीं काम ।
म्हेतो ओघो मुंहपति, वांदां छां सिर नाम ॥ १ ॥
भिक्खु कहै ओघा भणी, वंदणा कियां तिरन्त ।
सो ओघो हुवै ऊनरो, ऊन गाडर उपजन्त ॥ २ ॥
पंग गाडर ना पकरना, जो तिरै ओघा थी तास ।
धिन है माता तूं सही, सो ओघा करे पैदास ॥ ३ ॥

मुंहपति हुवै कपासनी, कपास वणि नो होय।
जो तिरै मुंहपति वांदियां, तो वणिने वंदनो जोय ॥ ४ ॥
धिन है वणि सो तांहरी, हुवै मुंहपति एह।
भेष भणी इम वांदियां, भव दधि केम तिरेह ॥ ५ ॥
गुण लारै पूजा कही, तो निगुण पूजता जाय।
चौड़े भूला मानवी, किम आणीजै ठाय ॥ ६ ॥
जिन मारग में देखल्यो, गुण लारै पूजाह।
निगुणा ने पूजे तिके, ते मारग दूजाह ॥ ७ ॥
गुण गोली सीरे भरी, पुरस्यां पांत धपाय।
गुण विन ठाली ठीकरो, देख्यां भूख न जाय ॥ ८ ॥
एक व्रत भागे इसो, दोषण थाये जाण।
इम इक व्रत भांगां छतां, पाचूं जाय पिछाण ॥ ६ ॥

॥ ढाल २५ मी ॥

(कामण गारो छे कुण ए देशी)

किणहिक स्वाम भणी कह्यो रे, किम ए वात मिलाय। एक महाव्रत भांगां छतां रे, पञ्च वरत किम जाय ॥ सुणज्यो दृष्टन्त भिक्खु तणा रे ॥ १ ॥ स्वाम कहै तुमे सांभलो रे, पाप उदे थी पिछाण। इण भव में पिण दुःख उपजे रे, सुण एक हेतु सयान ॥ तंत दृष्टन्त भिक्खु तणा रे ॥ २ ॥ एक भिखारी भीख मांगतो रे, फिरतां २ पुर मांहि। पंच रोटी रो आटो पामियो रे, अन्तर भूख अथाय ॥ तं० ॥ ३ ॥ रोटी करण लागो तदा रे, भिख्याचर भाग्य हीन। एक

रोटी ने उतार ने रे, चुला लारे मेली दीन ॥ तं ॥४॥ स्वान एक आयो तिण समे रे, पाप तणे प्रमाण। लोथो कठोती रो ले गयो रे, जद ते स्वान लारे न्हाठो जाण ॥ तं० ॥ ५ ॥ स्वान लारे भिख्याचर न्हासतां रे, आखुर पडियो अचाण। हाथ माहें जै लोथो हुन्तो रे, ते धूल में विखरियो पिछाण ॥ तं० ॥ ६ ॥ तत् खिण पाछो आवी तदा रे, देखण लागो तिवार। चूला लारे रोटी पड़ी हुन्ती रे, लेगई तास मंजार ॥ तं० ॥ ७ ॥ तवा तणी तवे बलगई रे, खीरां री खीरे हुय गई छार। पांचूं विललाई इण रीत सूं रे, पाप तणा फल धार ॥ तं० ॥८॥ इमहिज एक भांगां थकां रे, पांच जावे परवार। दोपण थापे जे जाण ने रे, भव २ होवै खुवार ॥ तं० ॥ ९ ॥ दोप सेव्यां डंढ संपजै रे, डंड जितोई भागंत। नवी दिख्या आवै जेह थी रे, ते दोप सेव्यां सर्व जावन्त ॥ तं ॥ १० ॥ भिक्खु स्वाम भली परै रे, दीधो वारु दृष्टन्त। हलुकर्म्मी सुण हरषिये रे, भारी कर्म्मा भिड़कन्त ॥ तं० ॥ ११ ॥ पचीसमो ढाल परवरी रे, भिक्खु बुद्धि भरपूर। नित्य प्रति हूं वन्दना करूं रे, पोह ऊगन्ते सूर ॥ तं० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

आधा कर्म्मी जायगां, थानक तिणरो नाम।
एहवा थानक भोगवै, वले कहे निरदोषण ताम ॥१॥
वलि कहै म्हे मुख सूं कद कह्यो, जद बोल्या भिक्खु स्वाम।
जाय जमाई सासरे, ते पिण न कहै ताम ॥ २ ॥
मुझ निमते सीरो करो, इम तो न कहै तेह।
पिण कीधो ते भोगवै, जद दूजी वार करेह ॥ ३ ॥
जो सीरा ना सूंस करै, तो न करै दूजी वार।
त्याग नहीं तिण सूं करै, भोजन विविध प्रकार ॥ ४ ॥
ज्यूं भेषधारी रहे थानक मभे, वले कहै मुख सूं ताम।
थानक मुझ निमते करो, इम म्हे कद कह्यो आम ॥५॥
त्यां निमते कियो भोगवै, फिर करै दूजी वार।
त्याग करै थानक तणा, तो आरम्भ टलै अपार ॥६॥
वले डावरो कद कहै, करो सगाई मोय।
पिण सगपण कीधां पछै, कुण परणीजे सोय ॥ ७ ॥
वलि वहु बाजे केहनीं, घर किणरो मंडाय।
डावड़ा तणोज जाणज्यो, थानक एम गिणाय ॥ ८ ॥
थानक वाजै तेहनो, मांहे पिण रहै तेह।
न कह्यो थानक नो तिणां, पिण सहु काम करेह ॥६॥

॥ ढाल २६ मीं ॥

(कपि रे प्रिया संदेशो कहेय० एदेशी)

गछवास्यां रे उपासरे रे, मथेण तणे पोशाल।
फकीर रे तकियो कहै रे, नाम में फेर निहाल रे ॥
जीव स्वाम बुद्धि विशाल ॥ १ ॥ स्वाम बुद्धि अति

शोभती रे, निर्मल न्याय निहाल रे ॥ जो० ॥२॥ कान फोडां रे आसण कहै रे, भक्तां रे अस्तल भाल। भक्त फुटकर तेहने रे, मंढी नाम निहाल ॥३॥ सन्यासां रे मठ कहै रे, रामसनेह्यां रे गेह। राम दुवारो केइक कहै रे, राम मोहल कहै केइ ॥ ४ ॥ घरराधणी रे घर कहै रे, सेठ रे हवेली सुहाय। कहै गाम धणी रे कोठरी रे, किहांएक रावलो कहाय ॥ ५ ॥ राजा रे महल कहै सही रे, कांयक ठौर दरवार। साधां रे थानक वाजतो रे, नाम में फेर विचार ॥६॥ सगलाई घररा घर अछै रे, कठेएक वुहा कोटाल। किहांयक कसी वुही रुही रे, आधाकरमी असराल ॥ ७ ॥ आरम्भ तो षटकायनो रे, हुवो ज्यूं रो ज्यूं जाण। अरिहंत नी नहिं आगन्यां रे, छः कायनो घमसाण ॥ ८ ॥ घर छोड्यां मुख सूं कहै रे, गाम २ रह्या घर मांड। तिण घर रो नाम थानक दियो रे, रह्या भेष ने भांड ॥ ९ ॥ आधा कर्मी थानक भोगव्यां रे, महा सावज करिया संभाल। दूजे आचारङ्ग देखल्यो रे, कह्यो दूजे अध्ययने दयाल ॥ १० ॥ आधा कर्म्मी आदर्यां रे, चौमासी डंड पिछाण। निशीथ दशमें निहालज्योरे, वीर तणी एह वाण ॥ ११ ॥ आधा कर्म्मी भोगव्यां रे, रूले अनन्तोकाल। पहले शतक

भगवती में पेखज्यो रे, नव में उदेशे निहाल ॥१२॥
इत्यादिक बहु वारता रे, आखी आगम मांय। भिक्खु
तास भली परै रे, रुड़ो रीत दीधी ओलखाय ॥१३॥
उत्पत्तिया बुद्धि अति घणी रे, अधिक उजागर आप।
निश दिन मनड़ो मांहरो रे, जप रह्यो आप रो जाप
॥१४॥ स्वप्ने सूरत स्वामनी रे, देखत ही सुख होय।
प्रत्यक्ष नो कहिवो किसूं रे, शरण आपनो मोय ॥१५॥
आदि जिणंद तणी परै रे, ओलखायो श्रद्धा आचार।
जनम जनम किम विसरे रे, तुझ गुण अनघ अपार
॥१६॥ वारु ढाल छत्रीसमो रे, भिक्खु गुण मुझ चित्त।
याद आयां हियो हुलसै रे, परम आप सूं प्रीत ॥१७॥

॥ दोहा ॥

भारीमाल शोभै भला, पूज्य भीखणजी पास।
चारूं कला वखाण की, घन जिम शब्द गुंजास ॥ १ ॥
नित्य वखाण दे निरमलो, ऊपर भिक्खु आप।
दान दया दीपावता, सुणतां टलै सन्ताप ॥ २ ॥
हलुकर्मी हरषै घणा, भारी कर्म्मी भिड़कन्त।
अलगा ही अवगुण करै, विकल वचन विलपन्त ॥३॥
किणहिक भिक्खु ने कह्यो, वर तुमें करो वखाण।
निन्दक ए निन्द्या करै, अलगा बैठ अजाण ॥ ४ ॥
भिक्खु उत्तर दे भलो, स्वान तणुज सभाव।
झालर रो झिणकार सुण, रोवण केरो राव ॥ ५ ॥

नीच इती जाणै नहीं, ए झालर अधिकार।
व्याव तणी वाजै अछै, के मुवांनी धार ॥ ६ ॥
ज्यूं ए पिण जाणै नहीं, वाचै ग्रान वखाण।
राजी रहणो ज्यांही रह्यो, अवगुण करै अजाण ॥७॥
उलटी निन्दा ए करे, निन्दा तणोज न्हाल।
स्वभाव थांरो छै सही, झूठी करे जखोल ॥ ८ ॥
ऐसी बुद्धि उत्पात री, निर्मल अपूर्व न्याय।
मेले मुनि महिमा निला, स्वाम थणा सुखदाय ॥ ६ ॥

॥ ढाल २७ मीं ॥

(हो म्हारा राजा रा)

स्वाम भिक्खु गुरु महा सुखदाई, भारीमाल शिष्य अति भारो। अमृत वाण सुधासी अनोपम, हद देशना महा हितकारो॥ हो म्हारा शासण रा शिणगार, स्वामीजी भिक्खु भारीमाल रूप भारी ॥ १ ॥ हद वाण सुणी हलुकर्म्मी हरषै, द्वेषी वोल्या धर्म्म द्वेष धारी। सवादोय पोहर रात्रि आइसो, थाने कल्पै नहीं इणवारी ॥ २ ॥ भिक्खु कहै दुःखनी रात्रि भूंडी, झट सुख निशा सोहरी जावै। समी सांज मांहे मनुष्य मूआं सूं, लोकां में रात्रि मोटी लखावै हो ॥ ३ ॥ संत वखाण देवै ते न सुहावै, ज्यांने रात्रि घणीज जणावै। दम्भ मिथ्यां तो अधिक न दोसै, आतो पोहर रे आसरे आवै ॥ ४ ॥ दोहा सहित दिया दृष्टन्त दोनूं, पैतालीसै

शहर पींपार। तन्त चौमास सोजत में तेपने, उठै हुवो घणो उपगार ॥ ५ ॥ किणहिक स्वाम भिक्खु ने कह्यो, इम उपगार तो आछो कीधो। जीव घणां ने समझाया जुगति सूं, लाभ धर्म्म रो लीधो ॥ ६ ॥ वलता भिक्खु कहे खेती तो वाही, पिण गाम रे गोरवें पेखो। सो खर नहीं आय पड़यां तो टिकसी, वाकी कठिन है अधिक विशेषो ॥ ७ ॥ गधा समान पाखण्डी गिणिये, जिहां जारो विशेष जिणारो। खेती समान धम्म खय करदे, तिण सूं संग न करणो तिणारो ॥ ८ ॥ किणही कह्यो देवो दृष्टन्त करला, स्वामी नाथ वोल्या सुण वायो। करड़ो रोग उपनां गंभीर केरो, मृदु फुजाल्यां केम मिटायो ॥ ६ ॥ हलवाणी रा डाम लागां हुवै हलको, गंभीर रो रोग गिणायो। करड़ो मिथ्यात रोग मिटावण काजे, करड़ा दृष्टन्त कहायो ॥१०॥ किणही स्वामीजी ने पूछा कीधी, कच्ची बुद्धिवालो समझे न कांई। मुनि भिक्खु कहै दाल मूंग मोंठांरी, फिर दाल चणा री पिण थाई ॥ ११ ॥ पिण गोहांरी दाल हुवै नहीं, प्रत्यक्ष ज्यूं भारी करमा न समझै जाणी। हलुकर्म्मी बुद्धिवान हुवै ते, पक्ष छांडे जिण धर्म्म पिछाणी ॥ १२ ॥ शुद्ध जाव दूजो देवे तिण में

न समझे, आपरी भाषा रो ही अजाण। दृष्टान्त स्वाम ते ऊपर दीधो, समझावण काज सयाण ॥ १३ ॥ एक बाई बोली म्हारो भर्तार एहवो, अखर लिखे ते अधिक अजोग। बीजा सूं अखर बचे नहीं बिरुआ, मोने ठोठरो मिल्यो संयोग ॥ १४ ॥ इतरे दूजी कहै मुझ पिउ इसड़ो, पोतारा लिख्या अखर पिछाणो। जे पिण पोता सूं बच्या नहीं जावै, अति ही मूर्ख एहवो अजाणो ॥ १५ ॥ ज्यूं आपरी भाषाने आप न जाणै, केवली भाख्यो धर्म्म किम आवै। सरधा तो परम दुर्लभ कही सूत्रे, परवीण हलुकर्म्मी पावै ॥ १६ ॥ पाखण्ड्यां रो मग गायां री पगडांड़ी, दूर थोड़ी तो मारग दीसे। आगे उजाड़ मोटी अटवी में, दुष्ट कांटा विषम दूधरीसे ॥ १७ ॥ ज्यूं दान शीलादिक अलग दिखाई, पाखण्डी पछे हिंसा पमावै। आगे चले नहीं ये उन्मारग, जाव माहें घणा अटकजावै ॥ १८ ॥ पातशाही रास्ता जिम पन्थ प्रभु नो, नहीं अटकै कठेई ते न्यायो। दृष्टन्त पाग तणो स्वाम दीधो, पार थेट तांई पोंहचायो ॥ १९ ॥ पाग चोरी ल्याया पूछ्यां न पूगै, मुदो थेट तांई न मिलाई। साचो कहै मोल लियो कुण सेती, रुड़ी अमकड़ियां पास रंगाई। इम साचो सरधा न्याय

किहांई न अटके, भूठी सरधा अटकै भोला खावै। दृष्टन्त स्वाम भिक्खु एहवा दीधा, दान दया आज्ञा दरशावै ॥ २१ ॥ एहवा भिक्खु स्वाम आप उजागर, ज्यांरा गुण पूरा कह्या न जावै। इद न्याय सुणी हरषे हलुकर्म्मी, भारी कर्म्मा सांभल भिड़कावै ॥ २२ ॥ सखर ढाल कही सतवीसमी, दृष्टन्त भिक्खु रा दिखाया। मति श्रुत सूं वर न्याय मिलाई, स्वामी जीव घणा समझाया ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

किणहिक भिक्खु ने कह्यो, सूंस करावो सोय।
ते लेई भागें तिको, पाप आपने होय ॥ १ ॥
स्वामी भाखे सांभलो, कोयक साहूकार।
वस्त्र किणने वेंचियो, सौ रुपया रो सार ॥ २ ॥
नफो मोकलो नीपनो, वेच्यो तास विचार।
वलि वस्त्र लेवाल रा, सांभलजो समाचार ॥ ३ ॥
कपड़ो लीधो तिण किया, एक एक रा दोय।
तो पिण नफो उण तणो, वेंच्यो तास न होय ॥ ४ ॥
कपड़ो जो लेई करी, जालै अग्नि मभार।
तोटो पिण उण रे तिको, वेच्यो तसु म विचार ॥५॥
समझाई म्हे सूंस द्यां, तिणरो नफो अमाम।
इमने तो ते हो गयो, तोटा में नहीं ताम ॥ ६ ॥
सूंस पालसी अति सखर, थिर फल तेहने थाप।
भाग्यां दोषण उण भणी, पिण म्हांने नहीं पाप ॥ ७ ॥

वलि दूजो दृष्टान्त वर, दमिने किण घृत मध ।
मुनिने वहरावै जिय मूआ, पाप तास प्रसिद्ध ॥ ८ ॥
अथवा मुनि अन्य साध ने, घृत दे वन्धे जिन गोत ।
तो पिण फल ते मुनि तणे, दिव गृही ने नहिं होत ॥ ९ ॥

॥ ढाल २८ मी ॥

(आज शहर में धाई० एदेशी)

वैरागी री वाणी सुणयां वैराग वाधै, दियो स्वाम भिक्खु दृष्टान्तो रे लो । कसुंबो आप गल्यां गालै कपड़ो, आवै रंग अत्यन्तो रे लो, स्वाम भिक्खु तणा दृष्टन्त सुणजो ॥ १ ॥ गांठ कसुंबा री गाढी बांधै, पोते गलियां विण रंग न पमावै रे लो । ज्यूं वैराग हीण तणी वाणी सूं, अति वैराग किण विध आवै रे लो ॥२॥ भेषधारी कहै म्हे जीव बचावां, भीखणजी नाहिं बचावै रे लो । भिक्खु कहै थारा रह्या बचावणा, मारणाज छोड़ो मन ल्यायो रे लो ॥३॥ थानक मांहे रहो किवाड़ जड़ो थे, जीव घणा मर जावे रे लो । किवाड़ जड़वारा सूंस कियां सूं, घणा जीवांरी घात न थावै रे लो ॥ ४ ॥ चौकीदार हुंतो सो चौकी देणी तो छोड़ी, चोरी करवा लागो छाने छाने रे लो । कहे लोकां ने चोको द्यूं करूं जावता, मेनत रा पैसा देवो थे म्हानेर लो ॥ ५ ॥ चौकी रहो थारी चोर्यां

छोड़ तूं, बोल्या लोक तिवारे रे लो। दिनरा तो घर हाट देखो जावै, पछै रात्रि समै आय फाड़ै रे लो॥ ६॥ पइसो पइसो तोने देसां परहो, घर बैठी ने गिणियो रे लो। ज्यूं भेषधारी कहै म्हे जीव बचावा, मारणा छोड़ो भिक्खु फुरमायो रे लो॥ ७॥ किणही पूछ्यो ऋषपाल मुनि कह्या, रिख्या करै किण रीतो रे लो। भिक्खु कहै ज्यूं छै तिम हिज राखणा, आघा पाछा न करणा अनीतो रे लो॥ ८॥ पशु निलोती चरता ने मुनि पेखै, किम ऋषपाल कहीजे रे लो। त्रिविधे त्रिविधे हणवा त्याग्यो ते, रक्षक अभय सर्व ने आपीजे रे लो॰॥ ९॥ कोई कहै हिवड़ां पंचम काल छै, पूरो साधपणो न पलायो रे लो। तव पूज्य कहे चौथा आरा में तेलो कितरा दिना रो कहायो रे लो॥ १०॥ तव, ते बोल्या तीन दिनरो तेलो, चौथे आहारै चित्त चाह्यो रे लो। भिक्खु पूछ्यो एक भूंगरो भोगव्यां, तेलो रहे के भागै ताह्यो रे लो॥ ११॥ तव ते बोल्यो परहो भागै तेलो, इम चौथे आरा रो तेलो उलखायो रे लो। फेर स्वामी पूछै पंचम आरै किता दिवस रो तेलो कहायो रे लो॥ १२॥ तव ते बोल्यो तेलो तीन दिनारो, पंचम आरै पिछाणी

रे लो। भिक्खु कहै एक भूंगरो खाधां, शुद्ध रहे के भागे सो जाणी रे लो ॥ १३ ॥ तब ते बोल्यो पहरो भागै तेलो, वलि पूज बोल्या वायो रे लो। भूंगरा सूं ई तेलो पहरो भागै, दोष थाप्यां संजम किम ठहरायो रे लो ॥ १४ ॥ काल दुखमरे माथे कांय न्हाखो, नेयंटे छहूं चरण ते नीको रे लो। पंचम चौथा आरा में प्रत्यक्ष, सहुरे त्याग हैं एक सरीखो रे लो ॥ १५ ॥ दोष लागां रो डंड दोनूं आरा में, डंड लीधां चारित्र दोनूं आरो रे लो। दोनूं आरा मांहें दोष थाप्यां सूं, चारित दोनूं आरा में हुवै छारो रे लो ॥ १६ ॥ भिक्खु स्वाम दृष्टन्त भली पर, वारु भिन्न २ भेद बताया रे लो। ज्यां पुरुषां जिण माग जमायो, स्वामी चार तीर्थ सुखदाया रे लो ॥ १७ ॥ एहवा पुरुषां रा औगुण बोले, कृतघ्न कर्म्म रेख काली रे लो। दुर्लभ बोध अवर्णवाद सूं दाख्यो, सूत्र ठाणांग लीजो संभाली रे लो ॥ १८ ॥ अष्टवीसमीं ढाल अनोपम, भिक्खु रा दृष्टन्त भाली रे लो। उत्पत्तिया भेद मति रो है आछो, नन्दी में पाठ निहाली रे लो ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

किणहिक भिक्खु ने कह्यो, संजम लेऊं सार।
मन उठै है मांहरो, स्वाम कहै सुखकार ॥ १ ॥
घर में पुत्रादिक घणा, रुदन करै घर राग।
तुझ काचो हियो तेहथी, अति ही कठिन अथाग ॥२॥
न्यातो रोता निरखने, मोह धरो मन मांहि।
तूं पिण रुदन करै तदा, काम कठिन कहिवाय ॥३॥
तिण कह्यो स्वामी वहत वच, आंसू तो आय जाय।
परियण रोता पेखने, म्हारे पिण मोह आय ॥ ४ ॥
स्वाम कहे कोई सासरे, जाय जमाई जाण।
आणो ले आवां छतां, त्रिय तो रोवै ताण ॥ ५ ॥
पिण उपरी देखा देख पिउ, जेह जमाई जोय।
रुदन करे मोह राग सूं, हांसो जग में होय ॥ ६ ॥
त्रिय रोवे पीयर तणो, वियोग पड़े विशेष।
वर रोवे किण वासते, उपनो कहूं अशेष ॥ ७ ॥
ज्यूं संयम लेवे जरे, स्वार्थ रुदन स्वजन।
तत चारित लेवे तिका, मोह धरे किन मन ॥ ८ ॥
तिण सूं संयम कठिन तुझ, दियो इसो दृष्टन्त।
वलि हेतु आख्या विविध, स्वाम भला शोभंत ॥९॥

॥ ढाल २६ वीं ॥

(भरतजी भूप० पदेशी)

जगत् तो मोह ने दया जाणै छै। दया ओलखणी दोहरो, प्रत्यक्ष राग अठारै पाप में ॥ साची श्रद्धा नहीं सोरीरा, भविकजन भिक्खु ना दृष्टन्त

भारो ॥ १ ॥ पूज मोह ओलखायो प्रत्यक्ष, दियो एहवो दृष्टान्तो । परणयां पछै कोई परभव पोंहतो बाल अवस्थावन्तो ॥ २ ॥ मुओ देख हाहाकार माच्यो, त्रिया रोवै तिण वेला । प्रत्यक्ष हाय हाय शब्द पुकारै, भय चक्र जन हुवा भेला भ० ॥ ३ ॥ कहै बापरी छोरी रो घाट कांई होसी, इणरी देखो अवस्था ऐसी । बारह वर्ष री विधवा होई सो, किण विध दिन काढैसी भ० ॥ ४ ॥ एम विलाप करै लोक अधिका, जगत इणने दया जाणै । करुणा दया एह छोरी री करै छै, मूरख तो इम माणै ॥५॥ पण भोला इतरो नहीं पेखै, ए वंछे इणरा काम भोगो । जाणे ओ रह्यो हुन्तो जीवतो तो, सखर मिल्यो थो संजोगो भ० ॥ ६ ॥ दोय चार होता डावरा डावरी, भोग भला भोगवती । पिण न जाणै आ काम भोग थी, माठी गति माहिं पड़ती ॥ ७ ॥ तिणरी चिन्ता तो नहीं तिणाने, तथा पिउ किण गति पांगरियो । ते पिण मूल चिन्ता नहीं त्यांने, जगत् माया मोह जुड़ियो भ० ॥ ८ ॥ ज्ञानी पुरुष मरण जीवण सम गिणै, उलट सोग नहीं आणै । मूढ़ मिथ्याती मोह राग ने, जीवण ने दया जाणै ॥९॥ अथवा राग द्वेष रे ऊपर, दृष्टान्त दूजो दीधो ।

डावरां रे किणही माथा में दीधी, साम्प्रत द्वेष प्रसिद्धो ॥ १० ॥ उण ने सहु कोई देवै ओलंभा, डावरां रे माथा में कांई देवै। क्रोध करि दियां द्वेष कहे सहु, कोई आछो नहीं कहवै ॥ ११ ॥ डावरां ने किणही लाडू दीधो, अथवा मूलो दियो आणी। कोई न कहे इण ने कांई डवोवे, प्रत्यक्ष राग पिछाणी ॥१२॥ ओ राग ओलखणो दोहरो अति ही, इण ने दया कहे छै अजाणो। दुर्जय राग दशम ताई देखो, वीतां वीतराग कहाणो ॥१३॥ इम राग द्वेष भिक्खु ओलखाया, मोह राग पाखंडी दया माणै। स्वाम भिक्खु न्याय सूत्र शोधी, निरवद्य दया आज्ञामें जाणै ॥१४॥ भरत खेत्र में दीपक भिक्खु, दीपा समान दीपायो। जिहाज तुल्य भिक्खु यशधारी, प्रत्यक्ष ही पेखायो ॥ १५ ॥ याद आवै भिक्खु मुझ अहनिश, तन मन शरण तुमारो। त्यां पुरुषां नी आसता तीखी, जिण रो है सफल जमारो ॥ १६ ॥ गुणतीसमी ढाले ज्ञानी गुरुनां, चारु वचन बताया। कठा तलक भिक्खु गुण कहिये, चिर जश कलश चढ़ाया ॥१७॥

॥ दोहा ॥

विहरत पूज पधारिया, काफरले किण वार।
सन्त गोचरी संचरया, आज्ञा लेई उदार ॥ १ ॥

एक जाटणी रे उदक, जाच्यो साधां जाय।
ते धोवण नहिं दे तिका, कहै देवै सो पाय ॥ २ ॥
साधाँ आय कह्यो सही, स्वाम पास सुविहाण।
एक जाटणी रे अधिक, पण नहीं देवै पाण ॥ ३ ॥
तव स्वामी आया तिहां, थाई जल वहिराय।
जव ते कई देवै जिसो, परभव में फल पाय ॥ ४ ॥
ओ धोवण द्यूं आपने, परभव धोवण पाय।
जे जल पीधो आय नहीं, मुझ सेती मुनिराय ॥५॥
पूज तास पूछा करी, गाय भणी दे घास।
तिण रो स्यूं दे ते गऊ, आपे दूध उजास ॥ ६ ॥
इम मुनि ने जल आपियां, परभव सुखफल पाय।
निर्दोषण ना फल निमल, स्वाम दई समझाय ॥७॥
जद आज्ञा दी जाटणी, वहिरी ते शुद्ध वार।
आप ठिकाणै आविया, ऐसी बुद्धि उदार ॥ ८ ॥
मति ज्ञान महा निर्मलो, भिक्खु नो भरपूर।
नीत चरण पालण निपुण, स्वाम सिंघ सम शूर ॥६॥

॥ ढाल ३० मी ॥

(भगवन्त भाष्या परदेशी)

आज म्हारा पूज सूं रे पाखण्ड थरहड़े, सुरगिर आप सधीरो जी। पारश साचो रे भिक्खु प्रगट्यो. हद स्वाम अमोलक हीरो जी ॥ आ ॥ १ ॥ पादु शहरे रे पूज पधारिया; उतर्या उपासरे आणो जी। शिष्य हेम संघाते रे गोचरी उठता, इतले कुण अवसानो जी ॥ २ ॥ आया दोय जणा तिण अवसरे, सामदासजी रा साधो रे। खांधे पोथ्यां तणा

जोड़ा खरा, मेला वस्त्र मर्य्यादो रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ विहार करन्ता उपाश्रे आविया, बोले मुख सूं बोलो रे। कठे भीखणजी रे भीखणजी कठे, तब भिक्खु बोल्या तोलो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ भीखण नाम म्हारो स्वामी भणे, वलि ते बोल्या विशेशो रे। थाने देखण री मन में हुन्ती, तब स्वाम कहै तुम देखो रे ॥ ५ ॥ वलि उवे बोल्या थे सगली वारता, आछी कीधी आमामो जी। एक वात आछी नहीं आदरी, तब पूंज कहै कहो तामो जी ॥ ६ ॥ वलि ते कहिवा रे लागा वारता, म्हें वावीस टोलां रा साधो रे। त्यां सगला ने असाध कहो तिका, विरुई वात विराधो रे ॥ ७ ॥ मुनि भिक्खु कहे तुझ टोला मझे, लिखत इसो अवलोयो रे। इकवीस टेलारो तुझ गण आवियां, संयम देणो सोयो रे ॥ ८ ॥ ऐसो लिखत थांरा गण में अछे, जाणो के थे न जाणो रे। जद उवे बोल्या म्हे जाणां अछां, छै मुझ लिखत अछानो जी ॥ ९ ॥ भिक्खु पभणे इकीस टोलां मणी, थेइज प्रत्यक्ष उथाप्या रे। गृही ने दीख्या देई लो गण मझे, थे गृही तुल्य त्यांनेई थाप्या रे ॥ १० ॥ इकवीस टोलां रा तुझ गण आवियां, दीख्या दे लेवो माह्यों रे। गृही ने दीख्या देई लो गण विषै,

गृही तुल्य तास गिणायो रे ॥ आ० ॥ ११ ॥ इकवीस टोला इम थेइज उथापिया, तुझ टोलो रह्यो तेहो रे। तिण रो लेखो बताऊं तो भणी, सांभलजो ससनेहो रे ॥ आ० ॥ १२ ॥ डंड वेला रो आवै जिण भणी, तेलो देवै तहतीको रे। तेलारो डंड आवै तिण भणी, श्री जिन वैण सधीको रे ॥ १३ ॥ इकवीस टोला ने साध श्रद्धो भलो, वले नवो साध पणो देवो रे। तिण लेखे दीख्या रे तुझ आवे नवी, विवेक लोचन सूं वेवो रे ॥ १४ ॥ थांरो टोलो पिण इण लेखा थकी, उथप गयो उवेखो रे। इम बावीस ढोला उथप गया, दम्भ तजो ने देखो रे ॥ १५ ॥ एम सुणी ने ते बोल्या इण विधे, वारु वयण विचारी रे। सुणो भीखणजी रे साचो वारता, बुद्धि तो थांरी भारी रे ॥ १६ ॥ इम कहि जांवा रे लागा उण समे स्वाम कहै सुखकारो रे। रहो तो चर्चा करां रुड़ी तरे, न्याय तणो निर्धारो रे ॥ १७ ॥ तब उवे बोल्या मुझ रहिवा तणी, हिवड़ां थिरता न होयो रे। तत् खण एम कही ने तिहां थकी, रह्या चालन्ता दोयो रे ॥ १८ ॥ ऐसी बुद्धि अनोपम आपरी, बुद्धिवन्त पामे विनोदो रे। चिमत्कार अति पामे चित्त मझे, प्रगट पणे प्रमोदो रे ॥ १९ ॥ रागी सुणने रे चित्त

में रति लहे, द्वेषी द्वेषज धारै रे। उलट बुद्धि नर अवगुण आदरे, वच सुण मुंह विगाड़ै रे ॥ २० ॥ वर भिक्खु री सुन्दर वारता, सांभलतां सुखकारी रे। हलुकर्म्मी जन सुण हर्षे घणा, पूज वारता प्यारी रे ॥ २१ ॥ तन्त तीसमी ढाल तपासनी अति बुद्धि भिक्खु नी एनो रे। अन्तर्य्यामी रे याद आयां छतां चित्त में पामे चैनो रे ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

विचरत पूज पधारिया, शिरियारी में सोय।
प्रश्न वोहरे पूछिया, जाति सौंवलसा जोय ॥ १ ॥
जीव नरक में जाय तसु, तारण वालो ताम।
कुण है कहो कृपा करी, इम पूछ्यो अभिराम ॥ २ ॥
भिक्खु उत्तर इम भणी, सखर जाव सुखकार।
पथर कुवा में न्हाखियां, कुण तसु खांचणहार ॥ ३ ॥
कठिन पत्थर भारे करी, आपही तल जाय।
कर्म्म भार सूं कुगति लहे, स्वाम कहै इम थाय ॥ ४ ॥
वोरे पूछा वलि करी, जीव स्वर्ग किम जाय।
कुण लेजावणहार तसु, वारु अर्थ बताय ॥ ५ ॥
भिक्खु कहै वोरा भणी, प्रत्यक्ष पाणी मांय।
काष्ट न्हाखे कर ग्रही, ते किण रीत तिराय ॥ ६ ॥
तिण काष्ट रे तल कहो किण मांड्या है हाथ।
हलका पणे स्वभाव सूं, ऊपर तिरने आत ॥ ७ ॥
हलको कर्म्म करी हुआं, जीव स्वर्ग में जाय।
सगला कर्म्म रहित सो, परम मोक्ष गति पाय ॥ ८ ॥

ऐसा उत्तर आपिया, वारु बुद्धि विनाण।
बलि उत्पत्तिया बुद्धि थकी, सखर जाव सुविहाण ॥६॥

॥ ढाल ३१ मी ॥

(देवे मुनिवर देशना, एदेशी)

पूज भणी किण पूछियो, हलको जीव किम होय। ललना। दृष्टान्त स्वामी दियो इसो। सांभल जो सहु कोय, ललना॥ तन्त दृष्टान्त भिक्खु तणा ॥१॥ तन्त वचन तहतीक ल० तन्त स्वाम नाव तारणो, न्याय तन्त निरभीक ल० तं० ॥ २ ॥ पइसो मेलै पाणी मझे ततखिण डूबे तेह। उणहिज पइसाने अग्नि में, अधिक ताप देवै एह ल० तं० ॥ ३ ॥ कूटी कूटी वाटकी करी, तिरे उदक में ताहि। ल० वलि उण वाटकी ने विषै, पइसो मेल्यां तिराय ल० तं० ॥ ४ ॥ तिम जीव संजम तप करी, करे आत्म हलकी कोय ल० करम भार अलगो कियां, तिरिये भव दधि तोय ल० तं० ॥ ५ ॥ किणही स्वाम भणी कह्यो, दुरंगा पात्रा देख ल०। काला धोला लाल किण कारणे, स्वाम कहे सुविशेष ल० तं० ॥ ६ ॥ विविध रंग कुंथुवा हुवै, इक रंग सूं दूजा पर आय। साम्प्रत दीसणो सोहिलो कारण एह कहाय ल० ॥७॥ अति भार हींगलु एकलो, कालो फौड़ो कहि-

वाय ल० बलि सोहरो वासी उतारणो, इत्यादिक ओलखाय ल० ॥ ८ ॥ जु जूवा रंग देवै जूदा, निगम में वरज्या नाहिं। वर्ज्या ममत्व भावे करी, ते मम तरी थाप न ताहि ल० ॥ ६ ॥ बाल पणै स्वामी वेणी रामजी, भिक्खु प्रते भाषंत ल० हींगलू सूं पात्रा रंगणा नहीं, तब कहै भिक्खु तन्त ल० ॥१०॥ म्हारे तो पात्रा रंग्या अछै, तुझ मन शंका हुवै ताम ल०। तो तुझ पात्रा रंगो मती, म्हें तो दोष न जाणां आम ल० ॥ ११ ॥ तव बोल्या वेणीरामजी, केलुथी रंगवा रा भाव ल०। भिक्खु तास भली परै, निर्मल वतावै न्याय ल० ॥ १२ ॥ जो केलु लेवा तूं जाय छै, पहिला पीलो कच्चा रंग रो पेख ल०। पक्का लाल रंग रो आगे पड्यो पहिलो छोड़णो नहीं तुझ लेख ॥१३॥ पहिला देख्यो कच्चा रंग रो परिहरि, चोखो केलु हेरे चित चाहि ल०। जद तो ध्यान घणा रंगरोज छै, इम कहिने दिया समझाय ल० ॥ १४ ॥ ऐसो बुद्धि उत्पात्तरी, नहीं मान बड़ाई री नोत ल०। आतम अर्थी ओपता, पूरो ज्यांरी प्रतीत ल० ॥ १५ ॥ आप ववहार में ओलखी, दोष जाणी किया दूर। निरदोष जाण्यो निर्मलो, सम आदरियो शूर ल० ॥ १६ ॥ प्रथम आचारंग पेखल्यो, पंचम अध्ययने पिछाण

ल०। पंचम उदेशो परवड़ो, वीर तणी ए वाण ल० ॥ १७ ॥ शुद्ध व्यवहार आलोचियां, असम्य पिण सम्य थाय ल०। ते कामो नहीं तिण दोष नो, शुद्ध साधुनी रीत सुहाय ल० ॥ १८ ॥ उत्तम ए पाठ ओलखी, कोई बोलरो भ्रम कर्म्म योग ल०। तो भिक्खु री आसता राखियां, पामै सुख परलोग ल० ॥ १९ ॥ आखी ढाल इकतीसमी, भिक्खु बुद्धि भण्डार। दृष्टान्त दिल में देखतां, चित्त पामे चिमत्कार ल० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

किणही भिक्खु ने कह्यो, जीव छोड़ावे जाण।
सूं फल तेहनो संपजे, वर भिक्खु कहै वाण ॥ १ ॥
घट में ज्ञान घाली करी, हिंस्या छोड़ायां धर्म्म।
जीवण वंछै जेहनो, फटै नहीं तसु कर्म्म ॥ २ ॥
ऊंची कर दे आंगुली, आखे भिक्खु आप।
ओ बकरो रजपूत ओ, कहो बांधे कुण पाप ॥ ३ ॥
मरणहार डूबे महा, के डूबे मारणहार।
ओ कहै मारणहार सो, जासी नरक मझार ॥ ४ ॥
भिक्खु कहै डुबता भणी, तारै सन्त तिवार।
समझावे रजपूत ने, शिव मार्ग श्रीकार ॥ ५ ॥
जे बकरा रो जीवणुं, वांछै नहीं लिगार।
तिण ऊपर दृष्टान्त ते, सांभलजो सुखकार ॥ ६ ॥
साहुकार रे दोय सुत, एक कपूत अवधार।
ऋण करड़ी जागां तणुं, माथै करे अपार ॥ ७ ॥

दूजो सुत जग दीपतो, यश संसार मझार।
करड़ी जागां रो करज, उतारै तिण वार ॥ ८ ॥
कहो केहने वरजे पिता, दोय पुत्र में देख।
वरजे कर्ज करे तसु, के ऋण मेटत पेख ॥ ९ ॥

॥ ढाल ३२ मीं ॥

(समता रस विरला पदेशी)

कर्ज माथे सुत अधिक करंतो, वार वार पिता वरजंतो रे ॥ समझू नर विरला ॥ करड़ो जागां रा माथे कांय कीजे, प्रत्यच दुख पामीजे रे ॥ सम ॥ १ ॥ अधिक माथा रो जे कर्ज उतारे, जनक तास नहिं वारे रे। । सम० । पिता समान साधुजी पिछाणो, वकरो रजपूत वे सुत माणो रे ॥ सम० ॥ २ ॥ कर्म्म रूप ऋण माथे कुण करतो, आगला कर्म्म कुण अपहरतो रे । सम० । कर्म्म ऋण रजपूत माथे करे छै, वकरा संचित कर्म्म भोगवै छै रे ॥ ३ ॥ साधु रजपूत ने वर्जे सुहाय, कर्म्म करज करे कांय रे। सम०। कर्म्म वंध्या घणा गोता खासी, परभव में दुख पासी रे ॥ ४ ॥ सखर पणे तिण ने समझायो, तिण रो तिरणो वंछ्यो मुनिरायो रे। सम०। वकरा जीवावण नहीं दे उपदेश, रूड़ी ओलख वुद्धिवन्त रेंस रे ॥ ५ ॥ इमहिज कसाई सौ वकरा हणंतो, शुद्ध उपदेश दे तार्यो सन्तो रे। सम०। कसाई गुण

ग्राम साधु रा करन्तो, मुझ तारक आप महन्तो रे ॥६॥ वकरा हुर्ष्या जीव बचिया विशेष, यांरे काज न दियो उपदेश रे। सम०। ज्ञानादि चिउं कसाई घट आया पिण वकरा तो मूल न पाया रे॥ ७॥ कहे कसाई दोनूं कर जोड़, सौ वकरा करे शोर रे। सम०। कहो तो नीलो चारो यांने चराऊं, पाछै काचो पाणि रयांने पाऊं रे॥ ८॥ आप कहो तो एवर में उछेरूं, कहो तो अमरिया करेरू रे। सम०। आप कहो तो सूंपूं आपने आणी, पाइजो धोवण उन्हो पाणी रे ॥ ६॥ तुम सूको चारो निरजो वहुतेरो, एवर साधां रो उछेरो रे। सम०। साधु कहे सूंस सखरा पालीजे, जावता सूंसांरी कीजै रे॥ सम०॥ १०॥ सूंसांरो एम भलावण देवै, वकरां री मूल न वेवै रे। सम०। उपदेश देवै जो वकरा बचावण, तो वकरां री देत भलावण रे॥ ११॥ समझ्यो कसाई सखर शिव साई, इणरी मुनि ने दलाली आई रे। सम०। तेहिज धर्म्म साधु ने जोय। पिण वकरां रो धर्म्म न कोय रे॥ १२॥ कसाई अज्ञानी रो ज्ञानी कहायो, पिण वकरा तो ज्ञान न पायो रे। सम०। कसाई मिथ्याती रो समकती कहिये, शुद्ध तत्व वकरा न सदृहिये रे॥ १३॥ हिंसक रो दयावान हुवो कसाई,

दिल बकरां रे दया न आई रे। तिरियो कसाई बकरा नहीं तिरिया, दुर्गति सूं नहिं डरिया रे ॥१४॥ कसाई तिरियो ते धर्म्म इण काज, तारक महामुनि राज रे। सम०। तिरण तारण कसाई रा तपासो, वारु हिया में विमासो रे॥ १५॥ तस्कर नो दूजो दृष्टन्त तेह सांभलजो ससनेह रे। सम०। किणही मेश्री नी हाटे किण वार, उतरिया अणगार रे सम०॥ १६॥ तस्कर रात्रि समै तिणवार, खोल्या है आय किमाड़ रे। सम०। तव मुनिवर कहै जागी ने ताम; कुण हो आया किण काम रे॥ १७॥ कहै तस्कर म्हे तो चोर कहाया, इहां चोरी करण ने आया रे। सम०। सहस रुपयां री थेली मेली सेठ, निडर ले जावसां नेठ रे॥ १८॥ तव साधु उपदेश देवै तिण वार, कह्या चोरी रा फल दुःखकार रे। स०। आगै नरक निगोद ना दुःख अधिकाया, भिन्न भिन्न भेद वताया रे॥ १६॥ धन तो न्यातीला सह मिल खासी, पर भव दुःख तूं पासी रे। सम०। रूड़ो उपदेश देई मुनिराया, त्याग चोरी ना कराया रे ॥ २०॥ तस्कर कहै मुझ डुवता ने तास्रो, विषम, कर्म्म सूं वास्रो रे। सम०। वारु विविध गुण करत विख्यात, प्रगट थयो प्रभात रे॥ २१॥ इतले वृक

तणो धणी आयो, ज्ञान नहीं घट माह्यो रे। सम०। पेड़ी ने नमस्कार करि प्रसिद्धो. कांयक लटको साधु ने ही कीधो रे॥ २२॥ तस्कर ने पूछा करी तिवार, कुण हो खोल्या किण दुवार रे। सम०। तस्कर बोल्या म्हें चोर छां ताम, अब तो त्यागे दीधी आम रे॥ २३॥ हुण्डी वटाय ने रुपया हजार, थेली मांहे मेहली थे तिवार रे। सम०। सो म्हे सांझे देखता था सोय, आया लेवण अवलोय रे॥ २४॥ साधां उपदेश देई समझाया, चोरी ना लखण छोड़ाया रे। सम०। साधां रो भलो होय जो कारज सार्या, तुरत डूबता ने तार्या रे॥ २५॥ मेसरी सुण ने हर्ष्यो मन माह्यो, पड़ियो साधां रे पायो रे। सम०। आप म्हारो हाट भलांई उतरिया, सकल मनोरथ सरिया रे॥ २६॥ थेली म्हारी आप राखी थिर थापी, प्रत्यक्ष लेजावता चोर पापी रे। सम०। हिवड़ा लेजावता रुपया हजार, निपट हुन्तो निराधार रे॥ २७॥ चार पुत्र मुझ चतुर विचारा, कर्म वश रहिता कुवारा रे। सम०। सुत चारूंई परणावसूं सार, ओ आप तणो उपगार रे॥ २८॥ इम कहै मेसरी वयण अथागो, ऋषजी तणो तो न रागो रे। सम०। धन राखण उपदेश म धार, ते तो तस्कर तारणहार

रे ॥ २६ ॥ कसाई समभयां वकरा कुशले कह्याजी, तस्कर समझ्यां धन रो धणी राजी रे । सम० । कसाई चोर तारण ऋष कामी, धन वकरा राखण नहीं धामी रे ॥ ३० ॥ तीजो दृष्टन्त कहूं तन्त सार, एक पुरुष लंपट अधिकार रे । सम० । सो पुरुष परनारी नो सेवणहार, अति ही बंधाणी पीत अपार रे ॥३१॥ ते लंपट आयो मुनि तणे पाय, साधां दियो समझाय रे । सम० । पर स्त्री नो पाप सुणी भय पायो, अधिक वैरागज आयो रे ॥ ३२ ॥ ते त्याग जाव जीव कीधा ते ठाम, गावै मुनि ना गुण ग्राम रे । स० आप मोने डूवता ने उबास्यो, निकुच विसन थी निवास्यो रे ॥ ३३ ॥ शील आदरियो सुण्यो तिण नार, उपनो द्वेष अपार रे । सम० । उणने कहे म्हें धास्यो इकतार, धुरही थो थां पर धार रे ॥ ३४ ॥ काम औरां सूं नहीं मुझ कोय, इसड़ो धारी अवलोय रे । सम० । कहतो म्हारो कह्यो मानले तास, म्हां सूं करो गृहवास रे ॥ ३५ ॥ कह्यो न मानो तो कूवै पड़सूं, मोत कुमोते मरसूं रे । सम० । जब ते कहे मोने मिलिया जिहाज, प्रत्यक्ष भव-दधि पाज रे ॥ ३६ ॥ त्यां परनारी नो पाप वतायो, म्हे त्याग किया मन लायो रे । सम० । तिण सूं म्हारे थासूं

मूल न तार, करे अनेक प्रकार रे ॥ ३७ ॥ इम सुण स्त्री कुवे पड़ी आय, तिण रो पाप साधू ने न थाय रे । सम० । समझ्यो कसाई बकरा बच्या सोय, तस्कर समझ्यां रह्यो धन जोय रे ॥ ३८ ॥ नर लंपट समझ्यां कूवे पड़ी नारो, चतुर हिया में विचारो रे। सम० । तस्कर कसाई लंपट ने तारण, साधां उपदेश दियो सुधारण रे ॥ सम० ॥ ३६ ॥ ए तीनूं तिरिया साधु तारणहार, त्यांरो धर्म्म साधां ने उदार रे । स० । मुक्ति मारग यां तीनां रे बधाया, घणा जामण मरण मिटाया रे ॥ ४० ॥ बकरा बच्या धणी रे धन रहियो, तिण रो धर्म्म साधु रे न कहियो रे । स० । नार कुवे पड़ी तिणरो न पापो, अदल विचारो आपो रे ॥४१॥ केई अज्ञानी कहे भूला भरमो, जीव धन रह्यो तिण रो है धर्म्मो रे । स० । उणरी सरधा रे लेखे इम थापो, प्रत्यक्ष नार मुआरो है पापो रे ॥ ४२ ॥ नार मुआरो पाप दिल नाणै, जीव बचियां रो धर्म्म कांय जाणै रे । स० । वले धन रह्या रो धर्म्म कांय धारो, बुद्धिवन्त न्याय विचारो रे ॥ ४३ ॥ भिक्खु स्वाम इम भेद बताया, असल न्याय ओलखाया रे । सम० । कसाई तस्कर लंपट केरो, भिक्खु दृष्टन्त दियो भलेरो रे ॥४४॥ ऐसा भिक्खु ऋष महा अवतारी, त्यां श्रद्धा

शोधी तन्त सारो रे । स० । ज्यां पुरुषां री जे प्रतीत करसी, त्यां रो जीवतव जन्म सुधरसी रे ॥ ४५ ॥ ऐसा भिक्खु याद आवे मोय, हर्ष हिये अति होय रे । स० । स्मरण आप तणो नित्य साधूं, भिक्खु पारश साचो म्हे लाधूं रे ॥ ४६ ॥ सुर गिर सांप्रत आप सधीरा, मोने मिलिया अमोलक हीरा रे । सम० । पंचम आरा में कियो प्रकाश, सखरी फैली है वास सुवास रे ॥ ४७ ॥ दोय तीसमी ढाले दृष्टान्त, वर्णन बहु विरतन्त रे । स० । स्वाम भिक्खु ओलखायो विशेष, तिण म्हे पिण आख्यो सु अशेष रे ॥४८॥

॥ दोहा ॥

किणहिक भिक्खु ने कह्यो, जीव बचया ते जाण ।
दया कहीजे तेहने, जीवण दया पिछाण ॥ १ ॥
भिक्खु कहै कीड़ी भणी, कीड़ो जाणे कोय ।
ज्ञान कहीजे तेहने, के कीड़ो ज्ञानज होय ॥ २ ॥
तब ते कहै कीड़ो भणी, जे कोय कीड़ो जाण ।
ज्ञान कहीजे तेहने, पिण कीड़ो नहिं ज्ञान ॥ ३ ॥
वलि भिक्खु कहै कीड़ो भणी, कीड़ो सरधे कोय ।
समकित कहीजे तेहने, के कीड़ो समकित होय ॥ ४ ॥
तब ते कहै कीड़ो भणी, कीड़ो सरधे तन्त ।
समगत ते सरधा सही, पिण कीड़ो नहिं समकीत ॥५॥
त्याग कीड़ी हणवा तणां, दया तेह दीपाय ।
के कीड़ो रही तिका दया, भिक्खु पूछो वाय ॥ ६ ॥

तब तें कहै कीड़ी रही, तिका दया कहिवाय।
खोटी सरधा थापवा, बोल्यो झूठ बणाय ॥ ७ ॥
भिक्खु कहै पवने करी, कीड़ी उड़ गई ताहि।
तुझ लेखै दया उड़ गई, निरमल निरखो न्याय ॥ ८ ॥
जद उ कहै विचारने, कीड़ी हणवा रा त्याग कियाह।
दया तेहिज दीसै खरी, पिण कीड़ी रही न द्याह ॥९॥

॥ ढाल ३३ मीं ॥

(कर्म भुगत्यांईज छुटिये एदेशी)

वलता भिक्खु बोलिया, कीड़ी मारण रा पच्च-खाण लाल रे। तेहिज दया साची कही, वारु सुणो इक वाण लाल रे, जोयजो रे बुद्धि भिक्खु तणी ॥१॥ रूड़ी दया निज घट में रही, के कीड़ी पास कहाय लाल रे। तब ते कहे पोता कने, कीड़ी पास न कांय ला० ॥२॥ पूज कहे घट में दया, कीड़ी पै दया नहिं कांय ला०। किणरा जतन करणा कहो, साचो जाव सुहाय ला० ॥ ३ ॥ करणा जतन दया तणा, के कीड़ी रा यत्न कराय ला०। उ कहै यत्न दया तणा, इम साच बोलो आयो ठाय ॥४॥ त्रिविध त्याग हणवा तणा, दया संवर रूप देख ला०। त्याग विना ही हणै नहीं, सखर निर्जरा संपेख ला० ॥ ५ ॥ इमज छकाय हणे नहीं, दया तेहिज दीपाय ला०।

जगत हणे जीवां भणी, निज पोतारो दया न जाय ला० ॥६॥ भारी बुद्धि भिक्खु तणी, सखरी सिद्धन्त संभाल ला० । न्याय मिलाया निरमला, भांज्या भ्रम भयाल ला० ॥ ७ ॥ किणहिक इम पूछा करी, महा मोटो मुनि राय ला० । अति हो थाको उजाड़ में, चालण शक्ति न कांय ला० ॥ ८ ॥ सहजेई गाड़ो आंवतो, तिण गाडा ऊपर वैसाण ला० । गाम मांहे आण्यो सही, तेहने कांई थयो जाण ॥ ६ ॥ भिक्खु कहे गाड़ो नहीं, पूंणिया आवत पेख ला० । गधै चढ़ाय आण्यो गाम में, तिणमें स्यूं थयो तुझ लेख ला० ॥ १० ॥ तब उ बोल्यो तड़क ने, गधारी क्यूं करो बात ला० । स्वाम कहे साधु भणी, दोनूं अकल्प देखात ला० ॥ ११ ॥ गाड़े वेसाणे आण्यो गाम में, थे धर्म्म तणी करो थाप ला० । तो गधै वैसाण्यां ही धर्म्म है, पाप छै तो दोयां में ही पाप ला० ॥१२॥ उत्पत्तिया बुद्धि आपरी, निरमल चारित नीत ला० । सरधा शुद्ध शोधी सही, बारु स्वाम वदती ला० ॥ १३ ॥ पाणी अणगल पावियां, केई पाखण्डी कहे पुन्य ला० । केयक मिश्र कहे तिहां, ते दोनूंई सरधा जबून ला० ॥ १४ ॥ पुण्यवाला कहे पूजने, सुणो भीखणजी बात ला० । महा खोटी

सरधा मिश्र रो, किहांई मेल न खात ला० ॥ १५ ॥ भिक्खु स्वामी इम भणौं, किणरी फूटी एक ला० । किणरी दोय फूटी सही, धारु करलो विवेक ॥ १६ ॥ मिश्र कहै छै मानवी, त्यांरी फूटी एक ला० । पुन परूपे पधारो, दोनूं फूटी देख ॥ १७ ॥ जाब दियो इम जुगत सूं, अहो अहो बुद्धि अनूप ला० । अहो अहो खिम्या आपरी, चित्त चरचा हद चूंप ला० ॥१८॥ तुम चिन्तामणि सुरतरु, पंचमे कियो प्रकाश ला० । आशा पूरण आप छो, वारु तुझ विसवास ला० ॥ १९ ॥ तन्त ढाल तेतीसमी, भिक्खु गुण भण्डार । अन्तर्य्यामी मांहरा, सुख सम्पति दातार ला० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

पचावने वर्ष पूजजी, शहर कांकड़ोली सार ।
सेहलोतांरी पोल में, ऊतरिया तिण वार ॥ १ ॥
प्रत्यक्ष वारी पोलरी, जड़ी हुन्ती जिग वार ।
आप भिक्खु रहितां थकां, एक दिवस अवधार ॥ २ ॥
बारी खोली बारणें, दिशा जायवा देख ।
निसरिया भिक्खु निशा, पूछे हेम संपेख ॥ ३ ॥
स्वामी बारी खोलण तणो, नहीं कांई अटकाव ।
तब भिक्खु बोल्या तुरत, प्रत्यक्ष ते प्रस्ताव ॥ ४ ॥
पाली शहर तणो प्रत्यक्ष, नाम चौथ जी न्हाल ।
दर्शण करवा आवियो, ए देखै इण काल ॥ ५ ॥

अति शंकिलो एह छै, पिण इण थातरी ताम ।
शंका इणरे ना पड़ी, केम पड़ी तुझ आम ॥ ६ ॥
हेम कहै म्हारे हिये, कांई शंका रो काम ।
पूछण रूप रहे पूछियो, नहिं शंका रो नाम ॥ ७ ॥
पूज कहै पूछे इसी, इणरो नहिं अटकाव ।
अटकाव हुवे जो एहनो, म्हें खोलां किण न्याव ॥८॥
हेम सुणी जाण्यो हिये, किवाड़ियो खोलाय ।
आहार लियां में दोष नहीं, खोल्यां दोष किम थाय ॥९॥

॥ ढाल ३८ मी ॥

(सुणजो नरनाथ ए देशी)

स्वाम भिक्खूरा दृष्टान्त सुहाया । भव्य उत्तम जीवां मन भाया, सुणजो चित्त शांति भिक्खुना भारी दृष्टन्त ॥ १ ॥ वचन सुधा वागरै वारु, शुद्ध भविजन तारण साह । सुणजो सुखदाया, स्वामीना दृष्टन्त सुहाया ॥ २ ॥ असल न्याय भिन्न २ ओलखाया, प्रभु पन्थ भिक्खू हद पाया ॥ ३ ॥ भेषधारी सरधा हीन भयाला, दियो दृष्टन्त पूज दयाला ॥४॥ समकत हीण जे अधिक असार, यांरो असल नहीं आचार ॥ ५ ॥ थोथा चणारी भखारी थी एक, सावतो चणो मूल म पेख ॥ ६ ॥ उंदरा रड़बड़ कीधी आखी रात, एक कण पिण नायो हाथ ॥ ७ ॥ सांग धार्यां मांहे समकत नाहिं, पड़े उंदर सम नर

पाय ॥ ८ ॥ कहो साध श्रावक त्यांने केम कहाय, ए तो दोनूं सरीखा देखाय ॥ ९ ॥ समकित रहित दोनूंई तन्त, दियो स्वाम भिक्खु दृष्टन्त ॥ १० ॥ कोयलां री तो रात्र अतिकाली, काला वासण में रांधी कराली ॥ ११ ॥ अमावस नी रात्रि आंधा जीमण वाला, परुसण वालाई आंधा पयाला ॥१२॥ जीमतां बोलै खुंखारा करता, कालो कुंखो टालजो मतिवन्ता ॥ १३ ॥ कहै खबरदार होय जीमजो सोय, रखे आय जायला कालो कोय ॥ १४ ॥ मूढ़ इतरो नहीं जाणै समेलो; कालोहिज कालो हुवो भेलो ॥ १५ ॥ ज्यूं सरधा आचार री नहीं ठिकाण, सगलो मिलियो सरीखो घाण ॥ १६ ॥ साध श्रावक पणारो अंश नहीं सारो, संवर लेखे दोयां रे अन्धारो ॥ १७ ॥ न्याय री वात नहीं शुद्ध नीत, वले बोले वचन विपरीत ॥१८॥ वस्त्र पात्रा अधिक राखे विशेष, आधा कर्म्मादि दोष अनेक ॥१९॥ वले कहै भीखण जी काढ़ो इण री तार, शुद्ध स्वाम बोल्या सुखकार ॥ २० ॥ तब पूज कहै काढ़े तार कांई; थाने डांडा ही सूझे नाहीं ॥ २१ ॥ सबल आधाकर्म्मी आदि न सूझै, कहो नान्हा दोष किम बूझे ॥ २२ ॥ दोषरी थाप थांरे दिन रेणो, कठिण काम सरधारो तो

कहणो ॥ २३ ॥ वायरे वंग घरटी मांड़ी वाई, पीसती जावै ज्यूं उड्यो जाई ॥ २४ ॥ आखी रात्री पीस ढाकणी में उसार्‍यो, एहवो दृष्टन्त भिक्खु उतार्‍यो ॥ २५ ॥ ज्यूं दोष लगाय ने डंड न लेवै. कुमति दोष री थाप करेवै ॥ २६ ॥ क्यांरे क्यांरे क्यूंही नहीं रहे कांई, देश सर्व दृष्टन्त देखाई ॥ २७ ॥ ऐसा भिक्खु ऋष आप उजागर, शरणागत महा वुद्धि सागर ॥ २८ ॥ उत्पत्तिया वुद्धि अधिक अमामी, धुर जिन आज्ञा परमति धामी ॥ २९ ॥ जिन आगन्या मांहैं धर्म्म जतायो, आज्ञा वारै अशुभ सहु आयो ॥ ३० ॥ सगला न्याय मेल्या सूत्र देख, वाह वाह भिक्खु वुद्धि विशेष ॥ ३१ ॥ याद आयां तन मन हुलसाय, रस कूंपिका तूं ऋषिराय ॥ ३२ ॥ स्यूं उपमा तुझ ने कहूं सार, अजिणा जिण सरसा उदार ॥ ३३ ॥ उववाई में उपम एह अनूप, सखर थिवरां ने दीधी सद्रूप ॥ ३४ ॥ आदिनाथ ज्यूं काढी धर्म्म आदि, सखरो उपजाई आप समाधि ॥ ३५ ॥ वारु शरण आपरो सुविशाल, म्हारे तूंहिज दीन दयाल ॥ ३६ ॥ स्वाम भिक्खु गुण गावत समरियो, म्हारो हिवड़ो हरष सूं भरियो । चौतीसमी ढाल भिक्खु चित्त चाह्या, वारु परमानन्द वरताया ॥ ३७ ॥

॥ दोहा ॥

कालवादी करलो घणो, नहिं समकित शुद्ध नींव ।
सिद्धां में पावै नहीं, आखै तास अजीव ॥ १ ॥
बखतरामजी नाम तसु, पुर माहें पहिछाण ।
कुकला कुबुद्धिज केलवी, विहार करि गया जाण ॥ २ ॥
इतलै भिक्खु आविया, चरचा करत पिछाण ।
मेघ भाट मुनि ने कहै, बगताजी री वाण ॥ ३ ॥
कालवादी इसड़ो कहै, अति घन वात अतीव ।
भीखण जी गाथा मुझे, कहै एकलड़ो जीव ॥ ४ ॥

ते गाथा ।

एकलड़ो जीव खासी गोता, जद् आड़ा नहिं आवै बेटा पोता ।
नरक मांहें खातां मारो, पायो मनुष जमारो मत हारो ॥१॥

॥ दोहा ॥

इण विध भीखणजी कहै, गाथा में इक जीव ।
वलि नव तत्व में पांच कहै, विरुद्ध वात अतीव ॥ ५ ॥
जो पांच जीव नव तत्व में, तो कहिणो पांचलड़ो जीव ।
एकलड़ो ते किम कहै, इम पूछा तिण कीव ॥ ७ ॥
पूज कहै तस पूछणो, सिद्धां में सुखकार ।
कहो आतमा केतली, तब कालवादी कहै चार ॥ ८ ॥
फिर त्यांने इम पूछणो, ते च्यारूं जीव के नाहिं ।
जब कहै च्यारूं जीव है, चार जीव तस न्याय ॥ ६ ॥
चौलड़ो जीव त्यांहि कह्यो, मुझ लढ़ अधिको एक ।
सांभल ने ते समझियो, मेघो भाट विशेष ॥ १० ॥

॥ ढाल ३५ मीं ॥

(राजा दशरथ दीपता रे ए देशी)

भिखणजी पधारिया रे, देश ढूंढार दीपायो रें, अति घणा श्रावगो आविया रे॥ चरचा करण चित्त चाह्यो रे, भारी वुद्धि भिक्खु तणी रे॥ १॥ स्वाम भणी कहै श्रावगो रे, नग्न मुद्रा मुनि नागा रे। तार मात्र वस्त्र न राखणो रे, राखै ते परीषह थी भागा रे, तन्त दृष्टन्त भिक्खु तणा रे॥२॥ वस्त्र राखो शीत टालवा रे, तो भागा शीत परीषह थी ताह्यो रे। तिण सूं वस्त्र नहिं राखणो रे, जद पूज वतावै न्यायोरो रे॥ ३॥ स्वाम कहै कितरा सही रे, परीषह भेद प्रकाशो रे। ते कहै परीषह वावीस छै रे, वलि पूछै पूज विमासो रे॥४॥ कहो प्रथम परीषहो कैसो रे, ते कहे क्षुध्या रो ताह्यो रे। पूज कहै थारा मुनि रे, आहार करै के नाह्यो रे॥ ५॥ श्रावगी कहै करे सहीरे, इकटंक आहार ते जागां रे। पूज कहै तुझ लेखै मुनि रे, प्रथम परीषह थी भागा रे॥ ६॥ ते कहै क्षुध्या लागां छतां रे, आहार करै अणगारो रे। स्वाम कहे सो लागां सही रे, वस्त्र म्हे राखां विचारो रे॥ ७॥ पूज वलि पूछा करी रे, प्रगट तुझ मुनि पहिछाणी रे। पाणी पीवै के पीवै नहीं रे, उत्तर

आपो सुजाणी रे ॥ ८ ॥ श्रावगां कहै पोवै सही रे, इकटंक उदक ते जागां रे। स्वाम कहे तुझ लेखै तिके रे, दूजा परीषाह थी भागा रे ॥ ९ ॥ ते कहै तृषा लागां छतां रे, उदक पिये अणगारो रे। स्वाम कहै सी टालिवा रे, वस्त्र ओढां म्हे विचारो रे ॥१०॥ भूख लागां अन्न भोगवै रे, प्यास लागां पिये पाणी रे। इम निर्दोषपण आचस्यां रे, न भागे परीषह थी नाणी रे ॥ ११ ॥ तिम शीत मंसादिक टालवा रे, मूर्च्छा रहित मुनिरायो रे। वस्त्र मानोपेत वावरै रे, ते परीषह थी भागै किण न्यायो रे ॥ १२ ॥ इत्यादिक उत्पात्त सूं रे, उत्तर दीधा अमामो रे। स्वाम गुणा रा सागरु रे, ऊंडी बुद्धि अभिरामो रे ॥ १३ ॥ एक दिवस बहु आविया रे, श्रावगी स्वामी पासो रे। कहै वस्त्र न राखो तो तुम तणी रे, वारु करणी विमासो रे ॥ १४ ॥ स्वाम कहै श्वेताम्बर शास्त्र थी रे, घर छोड़ थया अणगारो रे। तिण माहिं तीन पछेवड़ी रे, चोल पटादि कह्या सुविचारो रे ॥ १५ ॥ तिण कारण राखां तिके रे, आसता तुझ शास्त्र नी आयां रे। नग्न होय जासां वस्त्र न राखने रे, प्रतीत दिगम्बर नी पायां रे ॥१६॥ जाब दिया अति जुगत सूं रे, बुद्धिवन्त हर्षै विशेषो रे। न्याय नीत यांरे

निरमलो रे, पक्ष रहित संपेखो रे ॥ १७ ॥ वाह वाह भिक्खु मुनिन्द्र रे, अन्तर्य्यामी आपो रे। दीपक तूं इण काल में रे, जपूं तुमारो जापो रे ॥ १८ ॥ पैंतीसमी ढाल परवरी रे, चरचा दिगम्बर नी छाणी रे। भिक्खु भजन सूं भय मिटै रे, जय जश सुख हद जाणी रे ॥ १९ ॥

दोहा

दया धर्म्म अति दीपतो, श्री जिन आण सहीत।
भिक्खु स्वाम भली परे, पत्तर घलो अति पीत ॥ १ ॥
कोई हिंस्या धर्मी कहै, दया दया पुकारो कांय।
दया रांड लोटे पड़ी, उकरड़ी रे मांहिं ॥ २ ॥
भिक्खु आप भाखै भली, दया मात दीपाय।
उतराध्ययन चौबीस में, कहि आठ प्रवचन मांय ॥ ३ ॥
किण सेठ आउ पूरो कियो, स्त्री रही लारै सोय।
सपूत पूत हूं ते सही, यत्न करे ते जोय ॥ ४ ॥
कपूत हूं ते मात नैं, वदै वचन विकराल।
रंडकार नो गाल दे, बोले आप पंपाल ॥५॥
धणी धया ना दीपता, महावीर महाराज।
ते तो मोख सिधाविया, कीधा आत्तम काज ॥ ६ ॥
श्रावक साधां सपूत ते, दया मात इम जाण।
यत्न करै अति जुगत सूं, विरई न वदै वाण ॥ ७ ॥
प्रगट्या कपूत थां जिसा, बोलावो कहि रांड।
दया मात ने गाल दे, ते भव २ होवे भांड॥ ८ ॥
जिन मत एम जमावता, पाखण्ड मत परिहार।
स्वाम रवि जिहां संचरया, तिमर हरण इकतार ॥९॥

॥ ढाल ३६ मी ॥

(जोगीड़ो कपट करे छै परदेशी)

किणहिक भिक्खुने कह्यो रे, थे जावो जिण गाम रे मांहि। धसका पड़े लोकां तणे, तिण रो कांई कारण कहिवाय ॥ भिक्खु भवतारक भारी रे, आप प्रगट्या अवतारी रे। उत्पत्तिया बुद्धि अधिकारी रे, दृष्टन्त दिया सुविचारी रे ॥ १ ॥ स्वाम कहै तुम्हे सांभलो रे गारडु आवै गाम। डाकणियां ने काढण भणी, जद कहो डरै कुण ताम ॥ २ ॥ प्रभाते नीला कांटा मफे रे, वालस्यां डाकणियां ने वोलाय। तो धसका पड़ें डाकणियां तणै, तथा न्यातीलां रे पड़ै ताहि ॥ ३ ॥ दूजा तो लोक राजी हुवै रे, त्यांरे तो चिन्त न काय। जाणै उपद्रव्य शहर तणो मिटै, तिण सूं और तो हर्षित थाय ॥ ४ ॥ ज्यूं गाम में साध आयां छतां रे, भेषधार्यां रे धसका पड़न्त। के त्यांरा श्रावकां रे धसका पड़ै, भारी कर्मा तो इम भिड़कन्त ॥ ५ ॥ चारु सरधा आचार बताय ने रे, देशी म्हानें ओलखाय। त्यांरे धसका पड़ै तिण कारणै, हलुकर्मी तो मन हरषाय ॥ ६ ॥ उत्तम मन इम चिन्तवै रे, सुणसां साधांरा वखाण। दान सुपात्रे देई करी, करस्यां आतम तणा किल्याण ॥ ७ ॥

कुगुरां रा पक्षपाती भणी रे, सन्त मुनि न सुहाय। दृष्टन्त स्वाम दियो इसो। ते तो सांभलजो सुखदाय॥ ८॥ जुरवालो गयो जीमवा रे, जीमणवार में जाण। पकवान तो कड़वा घणा, वद वद कहे लोकां ने वाण॥ ९॥ लोक कहै लागै घणा रे, प्रगट मिठा पकवान। तुझ शरीर में ताव है, जिण सूं कड़वा लागै छै जान॥ १०॥ ज्यूं मिथ्यात रोग जाड़ो हुवै रे, सन्त तास न सुहाय। हलुकर्म्मी हिये हर्षता, चित्त में मुनि दर्शण चाहि॥ ११॥ भूख मरता रोटी वासते रे, सांग साधू नो धारन्त। त्यांने कहै चारित चोखो पालजो, जद स्वाम दियो दृष्टन्त॥ १२॥ वलवन्त वाले वांधने रे, तिणने कहै सिर नाम। सती माता तेजरा तोडजे, ते कांई तोड़े तेजरा ताम॥ १३॥ ज्यूं भेष पहिरे रोटी कारणै रे, तेहने कहो चोखो चारित्र पाल। ते कठिन चारित्र पाले किण विधे, दुक्कर कह्यो है दीन दयाल॥१४॥ चोखा खाटा गुरु उपरै रे, दियो नावा नो दृष्टन्त। काठ की नाव साजी कही, एक फूटी नावा छिद्रान्त॥ १५॥ तीजी नाव पत्थर तणी रे, उपनय हिये अवधार। शुद्ध सन्त साजी नाव सारिखा, तिके आप तिरे पर तार॥ १६॥ सांगधारी फूटी नावा सारिखा रे, आप

डुबे औरां ने डबोय। पत्थर नावा जिसा कह्या पाखंडी, जे तीन सौ तेसठ जोय ॥१७॥ उत्तम तास न आदरै रे, धाख्या हुवै तो छोड़णा सुलभ। सांगधारी फूटी नावा सारिखा, त्यांने छोड़णा घणा दुर्लभ ॥ १८ ॥ इम भिक्खु ओलखाविया रे, पाखण्डियां ने पिछाण। सूं बुद्धि कहिये स्वामनी वारु, किहां लग करूं वखाण ॥१९॥ ऊंडी तुझ आलोचना रे, तीरथ वच्छल ताम। शासण नायक स्वाम ने, करूं वारम्वार सलाम ॥२०॥ तन्त ढाल पट तीसमी रे, दाख्या स्वाम दृष्टन्त। भिक्खु भजन थी भय मिटै, अरु जय जश सुख उपजन्त ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

किणहिक भिक्खु ने कह्यो, टोला घणा नाहिं।
शीत उष्ण अति कष्ट सहै, कठण लोच कराय ॥ १ ॥
तप छठ अठमादिक तपे, सगरो करणो सोय।
यूंही जासी यां तणी, एहना फल अवलोय ॥ २ ॥
स्वाम कहै इक सेठ रे, पड्यो देवालो पेख।
तुरत लाख रुपयां तणो, विगड़ी बात विशेष ॥ ३ ॥
पछे एक पइसा तणो, आण्यो तेल तिवार।
पइसो तसु दीधो परहो, तो पइसा रो साहुकार ॥ ४ ॥
रुपया रा गहुं आणने, रुपयो पाछो दीध।
तो साहुकार रुपया तणो, प्रत्यक्ष ते प्रसिद्ध ॥ ५ ॥

इम पइसा रुपया तणो, साहुकार अवधार।
पिण देवालो लाख नो, तेहनो नहीं साहुकार ॥ ६ ॥
ज्यूं पंच महाव्रत पचखने, आधा कर्म्मो आदि।
थाप निरन्त दोषनो, मेट दीधी मर्य्याद ॥ ७ ॥
ओ देवालो अति घणो, लोच तपादिक कष्ट।
तेह थी किण विध उतरै, साध पणारो भिष्ट ॥ ८ ॥
मास क्षमणादिक पचखने, शुद्ध पाल्यां तसु साहुकार।
पिण महाव्रत भाग्यां तेहनो, साहुकार मत धार ॥ ६ ॥

॥ ढाल ३७ मीं ॥

(विछिया नी पदेशी)

किणहिक स्वाम भणी कह्यो। सांगधार्यां रे साधूरो सांग रे, उन्हो पाणी धोवण ए पिण आचरै॥ मान मूको रोटी खावै मांग रे, तुम्हें सुणज्यो दृष्टन्त स्वामी तणा ॥ १ ॥ वर्षा वर्षे लोच करावता, शीत तापादि सहे साक्षात रे। विहार नव कलपी विचरता, तो ए क्यूं नहीं साध कहात रे ॥ २ ॥ स्वाम कहै तुम्हें सांभलो, थिर चारित्र इम किम थाय रे। जेहवी वणी वणाई ब्राह्मणी, तिणरा साथी ए पिण कहिवाय रे ॥ ३ ॥ कुण वणी वणाई ब्राह्मणी, तव स्वाम कहे सुविशेष रे। मेरां रो इक गाम घाटा मझे, उठे उत्तम घर नहीं एक रे ॥ ४ ॥ महाजन आवै सो दुख पावै घणा, जब कह्यो मेरा ने जाम रे। अठै

उत्तम घर नहीं एक ही, तिण सूं दुख पावां छां ताम रे ॥ ५ ॥ घणी लागत देवांछां थां भणी, उत्तम घर विण इहां अवधार रे। पाणी रोटी तणी अद-खाई पड़ै, शुद्ध राखो उत्तम घर सार रे ॥ ६ ॥ जद मेरां शहर माहिं जाय ने, महाजना ने कह्यो मन ल्याय रे। उत्तम वसो म्हांरा गाम आयने, तिणरो ऊपर राखसां ताय रे ॥ ७ ॥ इम कह्यो पिण कोई आयो नहीं, एक ढेढां रो गुरु मुओ आम रे। तिण री स्त्री गुरुड़ी तदा, तिणने मेरां आणी तिण ठाम रे ॥ ८ ॥ बणाई मेरां तिण ने ब्राह्मणी, ब्राह्मणी जिसा वस्त्र पहराय रे। जागां कराय धवल राखी जिहां, तुलसो रो थाणो रोप्यो ताहि रे ॥ ६ ॥ दोय रुपयां रा गेहूं आणे दिया. अधेली रा मूंग दिया आण रे। एक रुपया तणो घृत आपियो, वदै मेरा तेहने इम वाण रे ॥ १० ॥ पइसा लेई महाजन रा दासां थकी, आवै ज्यांने रोटी कर आप रे। वर्ण पूछ्यां बतावजे ब्राह्मणी, थिर जात फलाणी थाप रे ॥ ११ ॥ जाता आता महाजन आवै जिके, पूछै घर उत्तम पहिछाण रे। ब्राह्मणी रो घर मेरा बता-वता, इम काल कितोयक जाण रै ॥ १२ ॥ इतरे चार व्योपारी आविया, घणा कोसां रा थाका ते

ते गाम रे। आय पूछ्यो मेरा ने इण तरह, उत्तम घर बतावो आम रे॥ १३॥ तब मेरा कहै जावो तुम्हे, तिण ब्राह्मणी रे घर तास रे। जद आया व्यापारी चारूं जणा, प्रगट वचन कहे तिण पास रे॥ १४॥ बाई रोटियां कर रूड़ी रीत सूं, झट घाल थाका आया जाण रे। जद इण गोहां री रोट्यां जाड़ी करी, सुरहो घृत घाल्यो सुविहाण रे॥ १५॥ कीधी दाल तिणमें घाली काचरयां, जीमवा लागा चारूंई जाण रे। करड़ी भूख रोट्यां पिण करकड़ी, वणिक जीमता करैं वखाण रे॥ १६॥ रांधण देखी फलाणा गामरी, अमकड़िया नगर नी अवलोय रे। रांधणा देखी बड़ा बड़ा शहर नी, इसड़ी चतुराई नहिं देखी कोय रे॥ १७॥ कहै देखो रे दाल किसी करो अति चोखी है स्वाद अत्यन्त रे। माहं काचरियां किसी स्वाद है, घणी करे प्रशंसा जीमन्त रे॥ १८॥ जद आ बोली वीरां बात सांभलो तीखण मिली हुन्ती ताम रे। खबर पड़ती काचरियां रे स्वाद री, पिण ते मिली नहिं अभिराम रे॥ १९॥ जद यां पूछ्यो तीखण कहै केहने, तब आ कहै तीखण छूरी ताम रे। काचरियां बनावा कारणे, छूरी मिली नहीं अभिराम रे॥ २०॥ तव यां पूछ्यो छूरी तो नें ना

मिली, तो किण सूं बनारी तेह रे। आ कहे दातां सूं बनार २ ने, इण ढाल माहें म्हाखी एह रे ॥२१॥ तब ये बोल्या तड़कनें हे पापणी, म्हाने भिष्ट किया ते जिमाय रे। इम कहिने लागा थाली पटकवा, तब आ बोली उतावली तांय रे ॥ २२ ॥ वीरां थाली भांगजो मती, अमकड़िया डूमरी आणी मांग रे। जद ए बोल्या हे पापणी! तूं कुण जातरी कुण तुझ सांग रे ॥ २३ ॥ जद आ बोली वीरां वात सांभलो, वणी वणाई ब्राह्मणी छूं ताहि रे। असल जातरी तो गुरुड़ी अछूं, मेरा ब्राह्मणी दीधी वणाय रे ॥ २४ ॥ धुर सूं वात सारी कही मांड़ने, सांभल ने च्यारूंई पछतात रे। भिक्खु कहै साथी ब्राह्मणी तणा, सांगधारी सर्व साक्षात रे ॥ २५ ॥ उन्हो पाणी धोवण नित्य आचरै, पिण समकित चारित्र नहीं काय रे। तिण सूं वणी वणाई ब्राह्मणो, तिण रा साथी कह्या इण न्याय रे ॥ २६ ॥ दृष्टन्त स्वाम इसो दियो, शुद्ध हेतु मिलाया सार रे। भारीकर्म्मा सुण द्वेष माहें भरै, चित्त पामै उत्तम चिमत्कार रे ॥२७॥ स्वाम सावद्य निर्वद्य शोधिया, व्रत अव्रत जूआ बताय रे। आज्ञा अण आगन्या ओलखाय ने, दोधी दान दया दीपाय रे ॥ २८ ॥ भिक्खु स्वाम प्रगटिया

भरत में, आप कीधो अधिक उद्योत रे। ऐसो उपगारी कुण इण काल में, जिन ज्यूं घण घट घाली जोत रे ॥ २९ ॥ इसा उपगारी गुण आगला, त्यांरा दृष्टन्त सांभल तन्त रे। हलुकर्म्मी हरष हिवड़े धरै, बहुलकर्म्मी रो मुंह विगड़न्त रे ॥ ३० ॥ तन्त ढाल कही सात तीसमी, स्वामी मेल्या है न्याय साक्षात रे। रखे शंका कंखा भ्रम राखने, मत पड़िज्जो मिथ्यात रे ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

किणहिक भिक्खु ने कह्यो, पाखंडी पहिछाण।
सूत्र सार जिन वच सरस, वाचे सखर बखाण ॥ १ ॥
स्वाम कहै तुम्हे सांभलो, वाचे सूत्र वखाण।
जीव खवायां पुण्य मिश्र, छेहड़े इम करै छाण ॥ २ ॥
जिम बायां राती जगे, संसार लेखे जान।
गीत भला भला गावती, तीखे मन कर तान ॥ ३ ॥
गीतां छेहड़े गावती, मोसो मारू मन्द।
ज्यूं प्रथम सूत्र प्रगमायने, छेहड़े-सावद्य फन्द ॥ ४ ॥
दीपावे सावद्य दया, दाखे सावद्य दान।
मोसा मारूनीं परे, सर्व विगाड़े तान ॥ ५ ॥
किणहिक भिक्खु ने कह्यो, बुद्धिहीन इक बाल।
भाठा सूं कीड्यां भणी, कचरतो तिणकाल ॥ ६ ॥
उणरो पथर ले उरहो, खोसी करी कषाय।
कहो तिणने कां सूं थयो, जद स्वाम कहै सुण वाय ॥७॥

तसु पासा थी खोसले, तसु कर में स्यूं आत ।
तब ओ बोल्यो उण तणे, भाठो आयो हाथ ॥ ८ ॥
भाखे पूज विचारलो, धर्म्म जिन आज्ञा मांहि ।
जवरी को जिण ना कह्यो, इम सर्व वस्तु गिणाय ॥६॥

॥ ढाल ३८ मी ॥

(सत्य कोई मत० पदेशी)

किणहिक भिक्खु ने कह्यो । टोला वाला ताह्यो रे, साध न सरधो यां भणी ॥ तो साध कहो किण न्यायो रे, तंत दृष्टन्त भिक्खु तणा ॥ १ ॥ ए साध अमकड़िया टोला तणा, फलाणा टोलारा साधो रे । इम साध कहो वैण उचर्‌यां, बच सत्यके मृषावादो रे ॥ २ ॥ स्वाम कहे किणहि शहर में, किरियाबर किणरे थायो रे । नेहता फेरै नगर में, वदै इसी पर वायो रे ॥ अमकड़िया रे नेहतो अछै, खेमा साहरा घर रो जाग्ग रे । अमकड़ियां रे नेहतो अछे, खेमा साहरा घर रो पिछाण रे ॥ ४ ॥ देवालो त्यां काढ़ दियो, तो पिण बाजे साहरे । खेम देवाल्यो बाजै नहीं. द्रव्य निक्षेपो देखायो रे ॥ ५ ॥ ज्यूं संजम नहीं पाले जिके, नाम धरावे साधो रे । द्रव्य निक्षेपे साधू कह्यां, मूल न मृषावादो रे ॥ ६ ॥ लकड़ी रा घोड़ा भणी, अश्व कह्यां दोष नाह्यो रे । नाम असद्भाव थापना, कहिण मात्र कहिवायो रे ॥

७ ॥ किणहि भिक्खु ने कह्यो, टोला वाला में ताह्यो रे। कहो साध यामें कवण छै. असाधु कुण यां मांह्यो रे ॥ ८ ॥ स्वाम कहै इक शहर में, आख आख म पूछै वायो रे। नागा कितरा इण नगर में, कितरा ढकिया कहिवायो रे ॥ ६ ॥ वैद विचक्षण इम वदै, औषध तुझ आंख्यां माह्यों रे। घाल सूझतो तो भणी. हूं कर देसूं ताह्यो रे ॥ १० ॥ नागा ढकिया तूं निरखले, वैद बोल्यो इम वायो रे। स्वाम कहै साध असाधरी, ओलखणा देस्यां बतायो रे ॥ ११ ॥ पछै साध असाध तूं परखले, कहो नाम लेई कोयो रे। कजियो पहिलो तिण सूं करै, जिणसूं कहणो अवसर जोयोरे ॥ १२ ॥ किण हिक वलि इम पूछियो, कुण यांमें साध असाधोरे। स्वाम कहै तुम्हें सांभलो, विरुओ तज विषवादो रे ॥ १३ ॥ संजम लेई पालै सही, ते साधू सुख दायो रे। महाव्रत आदरै मूकदे, असाधु ते असु-हायो रे ॥ १४ ॥ दृष्टन्त भिक्खु दियो इसो, किण-हिक पूछ्यो किवारो रे। साहुकार कुण शहर में, कुण है देवालो बिकारो रे ॥ १५ ॥ लेई पाछो देवै लोक में, साहुकार कहै सोयो रे। देणो न देवै देवालियो, झगड़ा उलटा मांड़ै जोयो रे ॥ १६ ॥

ज्यूं संजम लेई पाल्यां साध है, दोष थाप्यां नहीं साधो रे। अथवा डंड न आदरै, वरतानें देवै बिराधो रे ॥ १७ ॥ भिक्खु इसा न्याय भाषिया, स्वाम विना कुण शोधै रे। पूज गुणानो पिंजरो, पूज भविक प्रतिबोधै रे ॥ १८ ॥ भिक्खु है दीपक भरत मे, भिक्खु भलो भव तारण रे। साहेव भिक्खु साचलो, भिक्खु है विघ्न विडारण रे ॥ १९ ॥ याद आयां हियो उलसे, अन्तर्य्यामी आपो रे। स्मरण सूं सुख संपजै, थिर चित्त म्हे करो थापो रे ॥ २० ॥ स्वाम जिसो इण भरत में, दीन दयाल न दूजो रे। भविक जीवां तुम्हे भाव सूं, पवर भिक्खु गुण पूजो रे ॥ २१ ॥ तन मन सेती तुझ भणी, हृदय उलख हरख्यो रे। आशा पूरण आप हो, म्हें तो प्रत्यक्ष भिक्खु परख्यो रे ॥ २२ ॥ आखी ढाल अड़तीसमी, समझो है भिक्खु सनूरो रे। जय जश सुख सम्पति मिले, दालिद्र दुःख गया दूरो रे ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

उपयोग री खामी ऊपरे, दियो स्वाम दृष्टन्त।
निरमल नीकी नीत सूं, शुद्ध जाणो तसु तन्त ॥ १ ॥
कुणको देखी गुरु कह्यो, ए कुणको शिष्य जोय।
ऊपर पग दीजो मति, तहत कियो शिष्य सोय ॥ २ ॥

थोडो वार थी शिष्य तिको, फिरतो फिरतो आय।
पग दीधो तिण ऊपरे, तव गुरु बोल्या ताहि ॥ ३ ॥
तुझ म्हें वरज्यो थो तदा, मत दीजो पग साक्षात।
शिष्य कहै उपयोग शुद्ध, चूको स्वामी नाथ ॥ ४ ॥
बीजी बेलां शिष्य वलि, फिरतां २ फेर।
पग दीधो कण ऊपरे, गुरु निषेध्यो घेर ॥ ५ ॥
आगे तुझ वरज्यो हुंतो, कहै शिष्य कर जोड़।
महाराज उपयोग मुझ, चूक गयो इण ठोड़ ॥ ६ ॥
गुरु कहै अवके चूकियो, तो काल विगैरा त्याग।
फिरतां फिरतां शिष्य फिरी, वलि चूक्यो ते जाग ॥ ७ ॥
इम वार वार खामी पड़ी, ते विगय टालण थी ताहि।
वलि कण ऊपर पग दैण थी, राजो नहिं मन मांहि ॥ ८ ॥
कर्म्म योग उपयोग में, खामी तो अधिकाय।
पिण नीत शुद्ध अरु थाप नहिं, साध पणो ते न्याय ॥ ९ ॥

॥ ढाल ३६ मी ॥

(जाणे छे राय तू वात ए देशी)

स्वाम भिक्खु ने सोय ए, किण ही पूछा करी इम जोय ए। साध साधवियां रे मांहि ए ॥ अव-गुण दीसै अधिकाय ए ॥ १ ॥ ज्यांरे नहीं इर्यारो ठिकाण ए, भाषा सुमति में पिण दिसै हाण ए। केई करै चालता वात ए, शून्य उपयोग री साक्षात ए ॥ २ ॥ सुमति एषणादिक में सोय ए, अधिक फेर दिसै अवलोय ए। तीन गुप्त कहीं तन्तसार ए, अति हि दिसै है फरक अपार ए ॥ ३ ॥ कैकांरी प्रकृति

करड़ी धार ए, छेड़वियां सूं करैं फूंकार ए। मान माया लोभ में मंत ए, किम कहिये तिणने सन्त ए ॥ ४ ॥ करड़ी प्रकृति देख्यां साध ए, कोई बोल्या वचन विराध ए। यांमें साधपणारो न अंश ए, अवगुणरो करां केम प्रशंस ए ॥५॥ वर वोल्या है भिक्खु वाय ए, सुण दृष्टान्त एक शोभाय ए। एक साहुकार अवधार ए, कराई हवेली सुखकार ए ॥ ६ ॥ रुपया हजारां लगाविया ए, जाली झरोखा अधिक झुकाविया। ओपै मालिया महिल अनेक ए, शुद्ध शोभता सखर संपेख ए ॥ ७ ॥ चारु रूप विविध चित्राम ए, अति कोरणियां अभिराम ए। सुखदाई रूप सुविहाण ए, पुतलियां मनहरणी पिछाण ए ॥८॥ आवै लोक अनेक ए, देख देखने हरषै विशेष ए। नरनारी हजारां आवता ए, घणा देख देख गुण गावता ए ॥ ६ ॥ महिल मालिया महा श्रीकार ए, तिके जु जूआ देखै तिवार ए। कहै देखो कोरणियां ताम ए, चतुर रूप रच्या चित्राम ए ॥ १० ॥ साहुकारादिक सहु आय ए, एतो सगलाई रह्या सराय ए। जठे भंगी देखण आयो जान ए, धुन सेतखाना सूं ध्यान ए ॥ ११ ॥ महिल मालिया साहमी न दिष्ट ए, जाली झरोखा सूं नहीं इष्ट ए।

तिणरे सेतखानां सूं काम ए, तिण सूं तेहिज छै परिणाम ए ॥ १२ ॥ कहै सेतखानो तो आछो नहीं ए, सेठ सुणतां अवगुण बोले सही ए। जब सेठ कहै सुण वाय ए, ताड़तखानो किण वासते ताय ए ॥१३॥ सेतखानो आछो किम थाय ए, महा नीच वस्तु इण माहिए। निन्दनीक वस्तु ए निदान ए, तूं पिण नीच तिण सूं थारो ध्यान ए ॥ १४ ॥ झरोखा जाल्यां आदि दे जाण ए, प्रगट आछा है अधिक प्रधान ए। स्वाम कहै सुविचार ए, कहूं उपनय ए अवधार ए ॥ १५ ॥ संजम तप तो हवेली समान ए, सेतखांना ज्यूं अवगुण जान ए। साहुकारादिक अवगुण देखणहार ए, ते सम उत्तम जीव उदार ए ॥ १६ ॥ त्यांरी दिष्ट संजम ऊपर ताम ए, पिण अवगुण सूं नहीं काम ए। गुणग्राही उत्तम गुणवंत ए, तेतो संजम तप जाणै तंत ए ॥ १७ ॥ संजम गुण जाणै शुद्ध मान ए, पिण अवगुण सूं नहीं ध्यान ए। छिद्रपेही भंगी सम छार ए, संजमने नहीं जाणै लिगार ए ॥ १८ ॥ छट्ठो गुणठाणो इण विध जाय ए, त्यांने ते पिण खबर न काय ए। छट्ठो गुणठाणो इम ठहराय ए, ते पिण जाण पणो नहीं ताहि ए ॥ १६ ॥ अवगुण ने करै

अगवाण ए, महानिन्दक मातंग माण ए। कहै अवगुण आछा नाहिं ए, तिण ने कहिणो इणरो कहिसी कांय ए॥ २०॥ अवगुण तो कदेही आछा न होय ए, येतो प्रत्यक्ष ही अवलोय ए। ये तो निंदवा जोग निषेध ए, इण में तो कांई काढ्यो भेद ए॥ २१॥ पिण संजम गुण इण माहिं ए, तिण सूं वंदवा जोग कहाय ए। तू मुंहढे आणै अवगुण बार बार ए, थारे कुमति हिया में अपार ए॥ २२॥ दीधो हवेलीरो दृष्टान्त ए भिक्खु भविक नी भांजण भ्रान्त ए। स्वामी सूत्र न्याय श्रीकार ए, त्यांरा जाण भिक्खु तंतसार ए॥ २३॥ ओतो दियो भिक्खु दृष्टन्त ए, त्यांरा हेतुने पुष्ट करंत ए। सूत्र साख कहै जय सार ए, तिणरो सांभलजो विस्तार ए॥ २४॥ कह्यो सूत्र भगवती माहि ए, शतक पचीस में सुखदाय ए। उत्तर गुण पड़िसेवी पिछाण ए, बुकस नियंठो श्री जिन वाण ए॥ २५॥ जगन दोय सौ कोड़ ते जान ए, नहीं विरह कदे नहिं हानि ए। पंचम पद छट्ठे गुण ठाण ए, चारित्रना गुण लेखै पिछाण ए॥ २६॥ मूल गुण ने उत्तर गुण माहिं ए, दोष लगावै ते दुखदाय ए। पड़िसेवण कुशील पिछाण ए, जगन दोय सौ कोड़ ते जाण

ए ॥ २७ ॥ नहीं विरह एह थी ओछा नाहिं ए, ये पिण छट्ठे गुण ठाणै कहिवाय ए। यांमे चारित गुण श्रीकार ए, तिण सूं वंदवा योग विचार ए ॥ २८ ॥ पुलाग नेयंठो पिछाण ए, लब्धि फोड्यां कह्यो जिन जाण ए। थिति अन्तर मुंहूर्त्त थाय ए, लब्धि नी थिति तो अधिकाय ए ॥ २९ ॥ विरह उत्कृष्ट संखेज वास ए, पछै तो अवश्य प्रगटे विमास ए, यामें चारित्र गुण श्रीकार ए, तिण सूं वंदवा योग विचार ए ॥ ३० ॥ कषाय कुशील नियंठा माहि ए, पांच शरीर छः लेश्या पाय ए। षट समुद्घात कहिवाय ए, इण रो पेटो भारी है अथाय ए ॥ ३१ ॥ वहु फोड़वै लब्धि प्रकाश ए, मोह कर्म्म उदय थी विमास ए। पिण चारित्र गुण श्रीकार ए, तिण सूं वंदवा योग विचार ए ॥ ३२ ॥ पुलाक बुकस पड़िसेवेणा पेख ए, दिल सूं कषाय कुशील देख ए। या में दोष तणो डंड जोय ए, वले दोषरी थाप न कोय ए ॥ ३३ ॥ तिण कारण चारित्र चीज ए, दोष थाप्याँ जावै गुण छीज ए। जितरो डंड तितरो चर्या जाय ए, दोष थाप्यॉ सर्व विललाय ए ॥ ३४ ॥ हीण बृद्धि पजवा में होय ए, प्रगट शतक पचीसमों जोय ए। फेर अनन्तगुणो पजवा मांहिं ए, तो पिण

चारित्र गुण सुखदाय ए ॥ ३५ ॥ दशमें ध्ययन ज्ञाता में दयाल ए, कह्यो चन्द दृष्टन्त कृपाल ए। एकम आदि पूनम चन्द पेख ए, वलि विद पख चन्द विशेष ए ॥ ३६ ॥ ते सम सन्त समृद्धि ए, यतिधर्म दशमें हीन वृद्धि ए। क्षान्ति आदि ब्रह्मचर्य्य माहि ए, एकम थी पूनम तांई गिणाय ए ॥ ३७ ॥ इम विद पख चन्द समान ए, क्षमादिक गुण में फेर जान ए। किहां एकम किहां पूनम चन्द ए, दशूं धर्म एम वृद्धि मंद ए ॥ ३८ ॥ चौथे ठाणे चौभंगी उपन्न ए, शील सम्पन्न चरित्र सम्पन्न ए। दूजो शील सम्पन्न न देख ए, चरित सहित कह्यो विशेष ए ॥३९॥ तीजो शील सम्पन्न स्वभाव ए, विले* चारित्र सम्पन्न साव ए†। चौथो शील चारित नहीं ताम ए, शील शीतल स्वभाव नो नाम ए ॥ ४० ॥ शीतल प्रकृति तो नहिं कोय ए, दूजे भांगे चारित कह्यो जोय ए। वर न्याय हिये सुविचार ए, प्रकृति देखी म भिड़को लिगार ए ॥ ४१ ॥ निशीथ वीस में न्हाल ए, बार बार रो डंड विशाल ए। इम सांभल छांड अनीत ए, राखो सूत्र नो प्रतीत ए ॥ ४२ ॥

---

* विले=नाश।

† पिण चारित्र तणो अभाव ए। ऐसा भी पाठ है।

भारीकर्मा सुणी भिड़काय ए, बोलें ऊंधमति इम वाय ए। करै ढोली परूपणा काज ए, हिवै दोष तणी कांई लाज ए ॥४३॥ इम बोलै मूढ़ गिंवार ए, ज्यांरा घट माहें घोर अन्धार। पिण इतरी न जाणै साख्यात ए, सर्व कही सूतर नी वात ए ॥४४॥ स्थिर राखण समगत सार ए, अति मेटण भ्रम अन्धार ए। आगम रहीस बतावै अमाम ए, ते तो एकन्त तारण काम ए ॥ ४५ ॥ अति मानणो तसु उपगार ए, थिर समगत राखणहार ए। रह्यो गुण मानणो तो ज्यांहीज ए, उलटी क्यूं करो त्यां पर खीज ए ॥ ४६ ॥ परम दुर्लभ समगत पाय ए, रखे शंका राखो मन माहिं ए। शङ्का राख्यां सूं समकित जाय ए, तिण सूं बार २ समझाय ए ॥ ४७ ॥ पज्जवा ने हिण पाडै कोय ए, बुकस पड़िसेवणादिक जोय ए। तो तिणरी तिणने मुशकल ए, पिण पोते क्यूं घालो सल ए ॥ ४८ ॥ खोड ऊंटरी ऊंठने होय ए, ज्यूं पज्जवा हीण तसु सोच जोय ए। न फिरै छट्ठो गुण ठाण ए, तठा तांई असाध म जाण ए ॥ ४६ ॥ श्रावक कह्या मात तात समान ए, पवर चौथे ठाणै पहिछान ए। हेत सूं कहै रूड़ी रीत ए, पिण अंतरंग में अति प्रीत ए ॥ ५० ॥ स्वाम भिक्खु तणे प्रसाद

ए, पामी समकित चरण समाधि ए। दीधी हवेली रो तो दृष्टान्त ए, संखेप थको चित शान्त ए ॥५१॥ त्यांरा प्रसाद थी अनुसार ए, साखा न्याय कह्या जय सार ए। सूत्र में जिम न्याय बताविया ए, लेश मात्र अणहुन्ता न लाविया ए॥ ५२ ॥ धिन २ भिक्खु स्वाम ए, साख्या घणा जणा रा काम ए। त्यांरी आसता राखो तहतीक ए, तिण सूं होवै मोक्ष नजीक ए ॥ ५३ ॥ स्वामी दान दया दीपाय ए, आज्ञा अण आज्ञा ओलखाय ए। ज्यांरा गुण पूरा कह्या न जाय ए, प्रत्यक्ष पार्श्व भिक्खु पाय ए ॥ ५४ ॥ स्वामी याद आवै दिन रैण ए, चित्त में अति पामै चैन ए। ऐसा भिक्खु उजागर आप ए, स्मरण सूं मिटै सोग संताप ॥ ५५ ॥ नव तीसमी ढाल निहाल ए, भ्रम भंजन समय संभाल ए। हवेली रो हेतु कह्यो स्वाम ए, सूत्र साख जोत कही ताम ए ॥ ५६ ॥

॥ दोहा ॥

विचरत पूज्य पधारिया, पादु शहर मझार।
शिष्य हेम साथे सखर, संत अवर पण सार ॥ १ ॥
एक भायो इह अवसरे, भिक्खु भणी भणेह।
हेम चद्दर हाथे करी, अधिकी दीसे एह ॥ २ ॥
चतुर स्वाम ते चद्दर ले, माप दिखायो मान।
लांब पणे चौड़ा पणे अधिक नहीं उनमान ॥ ३ ॥

पूज कहै देषो प्रगट, पछेवड़ी परमाण ।
ते कहै अधिको तो नहीं, ए तो छै उनमान ॥ ४ ॥
तूं अधिको कहींतो तदा, तद ने बोल्या तान ।
मुझ झूठी शंका पड़ी, तव थगो निरेख्यो स्वाम ॥ ५ ॥
च्यार अंगुलरे वासते, संजम खोयो सार ।
मुझ भोला जाण्या इसा, आण्यो भ्रम अपार ॥ ६ ॥
एतो प्रतीत न तो मणी, तो मारग रे मांय ।
पग कात्रो पाछे तदा, थाने खबर न काय ॥ ७ ॥
इत्यादिक वचने करी, अधिक निरेख्यो आप ।
कर जोड़ी ने ने कहे, कूड़ी शंका किन्हाय ॥ ८ ॥
खरी इण पर सीख दे, खोड़ मिटावण काम ।
फिर शंका तसु ना पड़ी, पवर स्वाम परिणाम ॥ ९ ॥

॥ ढाल ४० मी ॥

(जाणपणुं जग दोहिलो एदेशी)

स्वाम भिक्खु गुण सागरु रे लाल, खरा भिक्खु खिम्यावान सुखकारी रे। संतली वेंण स्वामजी रे ला०, सुणो सूरत दे कान ॥ सु० ॥ सुण जो गुण स्वामी तणा रे लाल ॥ १ ॥ शोभाचंद सेवक हुंतो रे लाल, नांदोला नु नेहाल । सु० । आयो पाली में एकदा रे लाल, तिण ने कहे पाखंडी ते काल ॥ सु० ॥ २ ॥ तू विश्वर जोड़ भीखणजी तणा रे लाल, तो ने देसां वहु रुपया ताम । सु० । भीखणजी सूं वातां कर जोड़सूं रे लाल, इम कहे शोभाचन्द

आम ॥ सु० ॥३॥ इम कहि खैरवे आवियो रे लाल, जिहां पूज विराज्या जाण । सु० । उभो भिक्खु रे आगले रे लाल, वंदणा कीधी आण ॥ सु० ॥ ४ ॥ पूज कहै वच परवड़ा रे लाल, तुझ नाम शोभाचंद ताय । सु० । शोभाचंद कहै हां सही रे लाल, एहिज नाम कहाय ॥ सु० ॥ ५ ॥ भिक्खु वलि तसु इम भणै रे लाल, सुत रोहीदास नो सोय । सु० । सेवक कहे स्वामी भणी रे लाल, सत वच तुझ रा अवलोय ॥ ६ ॥ वलि शोभाचन्द बोलियो रे लाल, आप आछी न कीधी एक । सु० । उंथापो श्री भगवान ने रे लाल, विरुई वात विशेष ॥ सु० ॥ ७ वलता भिक्खु बोलिया रे लाल, म्हें क्यांने उथापां भगवान । सु० । म्हे भगवंत रा बचना थकी रे लाल, घर छोड़ साधु थया जाण ॥ सु० ॥ ८ ॥ वलि शोभाचन्द बोलियो रे लाल, आप देवरो दियो उथाप । सु० । जाव देवै स्वामी जुगत सूं रे लाल, चतुर सुणै चुप चाप ॥ सु० ॥ ९ ॥ हजारां मण पत्थर देवल तणा रे लाल, कड़ो उथापिये केम । म्हेतो सेर दो सेर प्रयो-जन बिना रे लाल, आघो पाछो करां नहीं एम ॥ सु० ॥ १० ॥ फेर शोभाचन्द पूछतो रे लाल, आप जिन प्रतिमा दी उथाप । सु० । प्रतिमाने कहो

पाषाण छै रे लाल, ए आछी न करी आप ॥ सु० ॥ ११ ॥ स्वाम कहै तूं सांभल रे लाल, म्हे प्रतिमा उथापा किण काम । सु० । म्हारे त्याग है भूठ बोलण तणारे लाल, इणरो न्याय कहूं अभिराम ॥ १२ ॥ सोना री प्रतिमा भणी रे लाल, सोनारी प्रतिमा कहंत । सु० । रूपा री प्रतमा भणी रे लाल, म्हे रूपा नी कहां धर खंत ॥१३॥ सर्वधातु नी प्रतमा भणी रे ला०, सर्वधातु नी कहां सोय । सु० । पाषाण री प्रतिमा भणीरे ला०, कहां पाषाण री जोय ॥१४॥ पाषाण री प्रतिमा भणी रे ल० । सोनारी कह्यां लागे भूठ । सु० । तिण सूं कहां छां प्रतिमा पाषाणरी रे ला०, म्हे तो भूठ ने दीधी पूठ ॥सु०॥१५॥ शोभाचंद इम सांभली रे ला०, हर्ष्यो घणो हिया मांय । सु० । इसड़ा उत्तम महा पुरुषां तणा रे ला०, किम अवगुण कहिवाय ॥ १६ ॥ गुण चाहिजे ए पुरुषना रे ला०, वारु इसड़ी विचार । सु० । दोय छन्द जोड्या दीपता रे ला०, सांभलतां सुखकार ॥ सु० ॥ १७ ॥ स्वामीनें छन्द सुणायने रे लाल, पाछो आयो पालो माहिं । सु० । पाखंडमतिया पूछियो रे ला०, थे छन्द वणाया के नाहिं ॥ सु० ॥ १८ ॥ ते कहै छन्द वणाविया रे ला०, पाखण्डमति वोल्या फेर । सु० । भीखण

जी रा श्रावक आगले रे ला०, छन्द कहिजे होय सेर ॥सु०॥१६॥ स्वामीजी रा श्रावकां कने रे ला०, आया सेवक लेई साथ। सु०। पाखण्डमति कहै श्रावकां भणी रे ला०, त्रारु सुणो मुझ वात ॥ सु० ॥ २० ॥ सेवक ओ निरापेखी सही रे ला०, अदल कहसी अवलोय। सु०। थारे म्हारे श्रद्धा पक्ष नो रे ला० इणरे तो पक्ष नहिं कोय ॥ २१ ॥ शोभाचन्द ने इम कहे रे ला० भीखणजी साधु किसाएक। सु०। शुद्ध छै किंवा अशुद्ध छै रे ला०, तव सेवक कहै सुविशेष ॥ २२ ॥ उणारी श्रद्धा उणा कने रे ला०, आपांरी आपां पास। सु०। तो पिण पाखंडमतिया कहै रे लाल, तूंतो निशंक प्रकाश ॥ २३ ॥ जव शोभाचन्द कहे सांभलो रे लाल, गुण अवगुण भीखणजी में होय। सु०। कहिसूं म्हाने दर्शसी जिसा रे लाल, तव ए कहे दरशे जिसा तोय ॥ २४ ॥ शोभाचन्द सेवक इम सांभली रे ला० शुद्ध कह्या छन्द त्यां श्रीकार। सु०। ते छन्द दोनूं गुण तणा रे ला० सांभलजो सुखकार ॥ २५ ॥

॥ शोभाचन्द सेवक कृत छन्द ॥

अनभय कथणी रहणी करणी अति, आठूंई कर्म जीपै अधिकाई। गुणवंत अनंत सिद्धन्त कला

गुण, प्राक्रम पोंच विद्या पुण भारी। शास्त्र सार वतीस जाणै सहु, केवल ज्ञानी का गुण उपगारी। पंचेंद्री कूं जीत न मानत पाखंड, साध मुनिन्द्र वड़ा सतधारी। साधु मुक्ति का वास वंदा सहु, भीखम स्वाम सिद्धंत है भारी ॥ १ ॥ स्वामी परभव के स्वार्थ साच है, वाचै सूत्र कला विरतारी। तेरा हि पंथ साचा तिहूं लोक में, नाग सुरेन्द्र नमें नर नारी। सूणिये सत वात सिद्धन्त सुज्ञान की, बहुत गुणी करणी वलिहारी। पृथ्वी के तारक पञ्चम आरा में, भीखम स्वाम का मारग भारी ॥ २ ॥

॥ ढाल तेरहि जहै ॥

शोभाचन्द कह्या इसारे ला०, सांभल ते गया सरक। सु०। मन माहें मुर्भाणा घणा रे ला०, स्वामी जी रा श्रावक होय गया गरक ॥ २६ ॥ पूज खिम्या रा प्रताप सूं रे ला०, पाड़ी पाखंडियांरी आव। सु०। ऐसा भिक्खु गुण आगला रे ला०, सुजश विसतरियो सताव ॥ २७ ॥ ऊंडी पूज आलोचना रे ला०, वारु बुद्धि ना जाव। सु०। धोरी धर्म तणा पूरा रे ला०, दियो पाखंड मत दाव ॥ २८ ॥ अवतरिया इण भरत में रे ला०, खरे मारग रह्या खेल। सु०। सूत्र बुद्धि समसेर सूं रे ला०, पाखण्ड मत दियो ठेल ॥

२६ ॥ स्मरण तुझ गुण संभरूं रे ला०. आवे निश दिन याद । सु० । रोम २ सुख रति लहूं रे ला०, पामूं पर्म समाधि ॥ ३० ॥ चारु ढाल चालीसमी रे ला० भय भ्रम भञ्जन स्वाम । सु० । जय जश सम्पति दायका रे ला०, आशा पूरण आम ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

बूंदी में पुजा करी, सवाई रामजी सोय ।
बखाण सम्पूर्ण हुवां पछै, आप नेहत मांगो अवलोय ॥१॥
मुहत घाल सोगंध करो, इछड़ी कहो छो आप ।
कांई आपरे ई तोटो अछै, ते तोटो पूरण थाप ॥ २ ॥
सुता परणाई सेठ किण, न्यात जिमाई न्याल ।
तोटो पूरण नेहत ले, ज्यूं सूं तोटो तुम भाल ॥ ३ ॥
स्वाम कहे एक सेठ तिण, सुता परणाई सोय ।
बोलाया बहु गाम रा, न्यात मित्र अवलोय ॥ ४ ॥
जीमण कर जीमाविया, सगलां ने पकवान ।
दिवस घणा राख्या पछे, सीख दीधी सनमान ॥ ५ ॥
एक एक पकवान री, साथे कोथली दीध ।
रसते भूख भांजण भणी, इम सुखे पुगता कीध ॥६ ॥
ज्यूं म्हें पिण बहु दिवस लग, बखाण में विस्तार ।
वातां विविध वैराग नी, संभलाई सुखकार ॥ ७ ॥
हलुकर्मी सुण हर्षिया, कर्म काट्या अधिकाय ।
छेहड़े एक पकवान री, कोथलो रूप कहाय ॥ ८ ॥
त्याग करावां तेहने, सुखे मोक्ष में जाय ।
इम तोटो मेटण अवरनुं, नुंहत मांगां इण न्याय ॥ ९ ॥

———

॥ ढाल ४१ वीं ॥

(धीज करै सीता सती रे लाल पदेशी)

स्वाम भिक्खु बुद्धि सागरु रे ला०, निर्मल मेल्या न्याय रे। सुगुण नर। सुविनीत सुण हर्षे सही रे लाल, अवनीत ने न सुहाय रे। सुगुण नर ॥ सुणजो दृष्टान्त स्वामी तणा रे लाल ॥ १ ॥ अवनीत साधु ऊपरै रे लाल, दीधो स्वाम दृष्टान्त रे। सु०। एक साहुकार नी स्त्री रे लाल, पाणी काजे गई धर खंत रे सु० ॥ २ ॥ बेहड़ो तो माथे पाणी सूं भर्यो रे लाल, पोतारे घर आवता पेख रे। सु०। मार्ग में तिण री वाहिलो मिली रे ला०, वातां करवा लागी विशेष रे ॥ ३ ॥ एक घड़ी तांई उभा थका रे ला०, हिल मिल वातां करी हर्षाय रे। सु०। पछै घर आवी निज पिउ भणी रे ला०, तिण हेलो पाड्यो ताहि रे ॥ ४ ॥ तुर्त घड़ो उतारो मुझ सिर तणुं रे ला०, जो किंचित वेलां थी भरतार रे। सु०। बेहड़ो उतार्यो तिण वेरनो रे ला०, तो क्रोध मा आवी अपार रे ॥ ५ ॥ कहै म्हारे माथे तो बेहड़ो उदकनो रे ला०, सो हूं भारे मुई घणी सोय रे। सु०। थाने तो मूल सूजै नहीं रे ला०, जिण सूं वेलां इतरी लगाई जोय रे ॥ ६ ॥ संसार तणे लेखे सही रे ला०, नार इसड़ी

अविनीत रे। सु०। रस्ते एक घड़ी वेहड़ो छतां रे ला०. पोते वात करती धर प्रीत रे॥ ७॥ किंचित् जेज पिउ करी रे ला०, तड़का भड़का करवा लागी तामरे। सु०। इसड़ी अजोग ते स्त्री रे ला०, अवनीत जग कहे आम रे॥८॥ अविनीत साधु एहवो रे ला०, गोचरियांदिक माहिं रे। सु०। किणही वाई भाई सूं वातां करे रे ला०, एक घड़ी उभा ताहि रे॥ ९॥ अथवा दर्शण देवा भणी रे ला०। झट चलाई ने परहो जाय रे। सु०। तिहां उभा घणी वेलां लगे रे ला०, वातां करै वणाय रे॥ १०॥ वड़ा थोड़ो ई काम भलाइयां रे ला०, करता कठ मठाठ करै जेह रे। सु०। तथा पाणी राख्यो ते लेवा मेलियां रे लाल, टाला टोला कर देवै तेह रे॥ ११॥ अथवा जातो दोहरो हुवे रे ला०, देवै मुंह विगाड़ रे। गुरु सीख दिये चूक थी पड्यो रे ला० तो करै उलटो फुंकार रे॥ १२॥ अवनीत साधु ने दीधी उपमा रे, अवनीत स्त्री नी भिक्खु आप रे। इम सांभल उत्तमा नरा रे, चित्त सुविनय थाप रे॥१३॥ वलि वनीत अवनीत री चौपई विषै रे, आख्या दृष्टन्त अनेक। सु०। संक्षेप थकी कहूं छूं सही रे लाल, सांभलजो सुविवेक॥ १४॥ अवनीत ने थावरिया नीं उपमा रे लाल, गर्भ-

वती ने कह्यो डाकोय सु० । पुत्र होसी पुन्य आगलो रे, पाड़ोसण ने कहे पुत्री होय रे ॥ १५ ॥ गुरु भगता श्रावक श्राविका कने रे ला०, गावैं गुरु रा गुणग्राम । सु० । आपरे वश जाणै तिण कने रे लाल, अवगुण बोले ताम ॥ १६ ॥ कने रहे साधु ते थकी रे ला०, वेर बुद्धि ज्यूं जाण सु० । और अलगा रहे ते थकी रे ला०, हेत राखे सुविहाण ॥ १७ ॥ कुह्या कानां री कुती भणी रे ला०, कांढ़े घर सूं सहु कोय सु० । ज्यूं अवनीत जिहां जावें तिहां रे ला०, आदर मान न होय ॥ १८ ॥ भंडसुरो कण छांड़ि ने भींष्टो भखै रे ला०, हरियां जव छांड़ी मृग पड़े पास सु० । ज्यूं अवनीत विनय छांड़ी करी रे ला०, अविनय धारै उलास ॥ १९ ॥ गधो घोड़ो गलियार अवनीतड़ो रे ला०, कूट्यां विन आघो नहीं चालैं कोय । ज्यूं अवनीत ने काम भलावियां रे ला०, कह्यां नीठ २ पार होय रे ॥ २० ॥ बुटक ने गधे मासे बलदने रे ला०, मरायो कुबुद्धि सीखाय । ज्यूं अवनीत री संगत कियां रे ला०, भव २ में दुःख पाय ॥ २१ ॥ वेश्या मुतलब थी पुरुषांने रिझावती रे ला०, स्वार्थ न पूगां तुरत दे छेह रे सु० । ज्यूं अविनीत मुतलब विनय करै घणुं रे ला०, स्वार्थ नहीं सझ्यां तोड़े

सनेह रे ॥ २२ ॥ बांध्यो कालारी पाखती गोरियो रे ला०, वर्ण नावे तों पिण लक्षण आय रे। ज्यूं अवनीत री सङ्गत करे रे ला०, तो उवे अविनय कुबुद्धि सीखाय ॥ २३ ॥ सोक रा सोक लोकां कने रे, अवगुण बोलै ने बांछे घात। ज्यूं अविनीत बरते गुरु थकी रे, अवगुण ग्राही साख्यात ॥ २४ ॥ कुजातिरी त्रिया पिउ से लड़ी रे, ताकै कुवे के उठै और साथ रे। करे अविनीत क्रोध सूं सलेषणा रे, के गण छोड़ जूदो होय जाय ॥ २५ ॥ शोर ठंडो हुवै मुख में घालियां रे, तातो अग्नि में गालियां हुवैं ताय। ज्यूं वस्त्रादिक दियां अवनीत राजी रहे रे, स्वार्थ अण पूगां अवगुण गाय ॥ २६ ॥ शोर शोरीगर रा घर थकी रे, दूर रहे बुद्धिवान रे। ज्यूं अवनीत सूं अलगा रहे रे, ते डाहा चतुर सुजाण ॥ २७ ॥ आछी वस्त घाले अग्नि में रे, ते छिन माहें हो जावै छार। ज्यूं अविनय अग्नि में गुण बले रे। अवगुण प्रगटे अपार ॥ २८ ॥ नाग खिजावै नान्हो जाण ने रे, तो ओ घात पामैं तत्काल। ज्यूं नाना गुरुनो निंद्या कियां, आपदा पामैं असराल ॥ २९ ॥ कालो नाग कोप्यां करै, जीव घात सूं अधिक म जाण। पण गुरु ना अप्रसन्न कियां, अबुद्धि दुर्गत

दुख खाण ॥ ३० ॥ कदा अग्नि न वाले मन्त्र जोग सूं रे, कदा कोप्या सर्प न खाय। कदा तालपुट विष पिण मारै नहीं, पिण गुरु हेलणा सूं मुक्ति न जाय ॥ ३१ ॥ कोई वांछे सिर सूं गिरि फोड़वा रे, सूतो ही सिंह जगाय। कोई भाला रे अणी मारे टाकरा रे, ज्यूं गुरुनी असातना थाय ॥ ३२ ॥ कदा गिरि पण फोडै कोई मस्तके रे, कदा कोप्यो सिंह न खाय। कदा भालो न भेदै टाकर मारियां रे, पण गुरु हेलणा सूं शिव नाहिं ॥ ३३ ॥ ज्यूं काष्ट वहो जाय जल मझे रे, ज्यूं अविनीत ताणीजे संसार। कुशिष्य क्रोधी अभिमानी आत्मा रे, धूर्त्त मायावियो धार ॥ ३४ ॥ गुरु सीख दिये अविनीत ने रे, तो क्रोध करे तिण वार। ते डांडे कर ठेलै खिज्मी आवती रे, सांची सीख न श्रद्धे लिगार ॥३५॥ केई हाथी घोड़ा अविनीत छै रे, दीखै प्रत्यक्ष दुःख। तो धर्माचार्य ना अविनीत ने रे, कहो हुवे किम सुख ॥ ३६ ॥ अविनीत नर नारी इण लोक में रे, विकल इन्द्री सरीखा विपरीत। ते डांडे शस्त्र करी ताड़ीजता रे, अति दुःख पामें गुरु नो अवि- नीत रे ॥ ३७ ॥ वले देव दाणव अविनीत छै रे, दुखिया ते पण देख। गुरु नां अविनीत ने दुःख

अति घणा, काल अनन्त संपख ॥ ३८ ॥ विनीत अविनीत जातां वाट में रे, दोनूं जणा हथिणी नो पग देख। अविनीत कहे पग हाथी तणुं, इण ने ऊंधो सूझे अशेप ॥ ३६ ॥ विनीत कहै हथिणी पण काणी डावी आंखरी रे, ऊपर राजा री राणी सहित। वले पुत्र रत्न तिणरी कूख में रे, विवरा सुध बोल्यो सुविनीत ॥ ४० ॥ एक बाई प्रश्न आगे पूछियो रे, ऊभी सरवर पाल। म्हारो सुत प्रदेश ते मिलसी कदे रे, कहै अविनीत उण कियो काल ॥ ४१ ॥ हूं काटूं वाढूं जीभड़ली तांहिरी रे, तूं विरुओ बोल्यो केम। धसको क्यूं न्हाखे पापी एहवो रे, जब विनीत कहे छे एम ॥४२॥ पुत्र थारो घर आवियो रे, आज मिलसी तो सूं निशंक। इणरो वचन म मान ओ झूठो घणूं, इण रे जीभ वैरण रो वंक ॥ ४३ ॥ ए दोनूं बोलां में अविनीत झूठो पड्यो रे, पछे गुरु सूं झगड़्यो आय। कहे मोने न भणायो कपटे करी, गुरु पूछे निरणुं कियो ताहि ॥ ४४ ॥ इह लोक मां गुरु ना अवनीत री रे, अकल विगड़ गई एम। तो धर्मो-चार्य नां अवनीतरी रे, ऊंधी अकल रो कहिवो केम ॥ ४५ ॥ ज्यूं नकटी छुटी कुलहीणी नार ने रे, परहरे निज भरतार। जोगी भखरादिक तिण ने आदरै,

उवा पिण जावै उण लार ॥ ४६ ॥ नकटी सरीषो अविनीतरो रे, तिण सूं निज गुरु न धरे प्यार । तिण ने आप सरीषो आवी मिले रे, तव पामें हर्ष अपार ॥ ४७ ॥ नकटी तो जोवे भक्करादिक भणी रे, अवि-नीत जोवै अजोग । जो अशुभ उदै हुवै अविनीत रे, मिल जावै सरीषो संयोग ॥ ४८ ॥ सौ वार पाणी सूं कादो धोवियां रे, विरुई न मिटै वास । घणूं उपदेश दे गुरु अविनीत ने रे, पिण मूल न लागै पास ॥ ४९ ॥ अविनीत उजिया भोगवती जिसो रे, ऋषिया रोहणी जिसो सुवनीत । गुरु गण सूंपे सुविनीत ने रे, पूरी तिण री प्रतीत ॥ ५० ॥ किणही गाय दीधी चार विप्रां भणी रे, ते वार २ दूहे ताहि । पिण चारो न नीरे लोभ थकी रे, तिण सूं दुःखे २ मुई गाय ॥ ५१ ॥ गाय सरिषा आचार्य मोटका रे, दूध सरीषो ज्ञान अमोल । शिष्य मिला ब्राह्मण सारिषा रे, ते ज्ञान लिये दिल खोल ॥ ५२ ॥ आहार पाणी आदि व्यावच तणी रे, न करे सार संभाल । एहवा अविनीतां रे वश गुरु पड्या, त्यां पण दुःखे २ कियो काल ॥ ५३ ॥ ब्राह्मण तो एक भव मझे रे, फिट २ हुवा इहलोक । गुरु ना अविनीत रो कहिवो किसो रे, पीड़ा विविध परलोक ॥ ५४ ॥

गर्ग आचार्य ने मिल्या रे, पांच सौ शिष्य अविनीत। तिण रो विस्तार तो छै घणुं, उत्तराध्ययन माहें संगीत ॥ ५५ ॥ एकल थको बुरो अवनीतड़ो रे, साधांरा गण माहें जाण। साम द्रोही सेवग सारीषो रे,, दुमनुं चाकर दुश्मण समान रे ॥ ५६ ॥ छलवल खेले चोर ज्यूं रे, छिद्री थको रहे टोला माहिं। चर्चा उपदेश तिणरो अति बुरो, फाड़ां तोड़ा काजे करे ताहि ॥ ५७ ॥ और साधांरा काढ़े गृहस्थ खूंचणा रे, तिण सूं बात करै दिल खोल। अन्तरंग में जाणे आपरो, तिणने सिखावे चर्चा बोल ॥ ५८ ॥ गुण ग्राम गावै सुविनीत रा रे, अविनीत सूं सह्या नहीं जाय। निज आपो प्रगट करै, म्हाने तो ललपल न सुहाय ॥५९॥ और साधांरी आसता उतारवा रे, आपो प्रगट करै मूढ़। गुरु सीख दे खामी मेटवा रे, तो सांह्मों मंड जाय करे खोटी रूढ़ ॥ ६० ॥ जिण ने आप तणुं करै रागियो रे, शङ्का औरां री घाल। अभिमानी अविनीत नी रे, पहवी छै ऊंधी चाल ॥ ६१ ॥ सुविनीत रा समझाविया रे, साल दाख ज्यूं भेला होय जाय। अविनीत ना समझाविया, कोकला ज्यूं कानी थाय ॥ ६२ ॥ समझाया सुविनीत अविनीत रा रे फेर

कितोयक होय। ज्यूं तावड़ो ने छांहड़ी रे, इतरो अन्तर जोय ॥ ६३ ॥ अविनीत ने अविनीत मिले रे, ते पामें घणो मन हर्ष। ज्यूं डाकण राजी हुवै रे, चढ़वा ने मिलियां जरख ॥ ६४ ॥ डाकण मारै मनुष ने रे, ओ करै समकित नी घात। डाकण चोर राजा तणी रे, ओ तीर्थंकर नो चोर विख्यात ॥ ६५ ॥ लंपट रूपगृद्धि फिट २ हुवै, जे न गिणै जाति कुजाति। अविनीत गृद्धि घणो खाणरो रे, विकला ने मंडै विख्यात ॥ ६६ ॥ ए अविनीत साधु ओलखाविया रे, इमहिज साधवी जाण। वले श्रावक ने श्राविका रे तिम हिज करजो पिछाण ॥ ६७ ॥ साघ साधवियां री निन्दा करै, अवगुण बोलै विपरीत। सूंस करावै गृहस्थ भणी रे, त्यांरी भोला माने प्रतीत ॥ ६८ ॥ केई श्रावक खावै घर तणुं, केयक मांगे खाय। पिण अविनीत पणो छूटै नहीं, तो गरज सरै नहीं काय ॥ ६६ ॥ त्यांने दीधां में पुन्य परूपियां, स्वान ज्यूं पूंछ हिलाय। साधु पाप प्ररूपे त्यांरा दान में, तो लागै अभ्यन्तर लाय ॥७०॥ कोई अविनीत हुवै साध साधवी, कदा गुरु दे लोकां ने जताय। जो अविनीत श्रावक सांभले, तो तुर्त कहे तिणने जाय ॥ ७१ ॥ साधां ने आय वंदणा करै, साधवियां ने न वांदे रूड़ी

रीत। त्यांने श्रावक श्राविका म जाणजो रे, तेतो मूढ़ मति छै अविनीत ॥ ७२ ॥ तिण श्री जिन धर्म न ओलख्यो रे, वले भण भण करै अभिमान। आप छांदे माठी मति उपजे, तिण ने लागो नहीं गुरुकान ॥ ७३ ॥ मोटो उपगार मुनि तणूं, कृतघ्न कीधो न गिणंत। एहवा अविनीत साधु श्रावक ऊपरै, भिक्खु आख्यो एक दृष्टन्त ॥ ७४ ॥ कोई सर्प पड्यो उजाड़ में रे, चैन नहीं सुध कांय रे। तिण सर्प री अणुकम्पा करी, दूध मिश्री घाली मुख मांय ॥ ७५ ॥ ते सर्प सचेत थयां पछै रे, आडो फिरियो आय। जो ओंलूंठो हुवै तो उण ने दाव दे रे। काचो हुवै तो दे डङ्क लगाय ॥ ७६ ॥ सर्प सरीषा अविनीत मानवो रे, एकल फिरै ज्यूं ढोर रुलियार रे। तिणने समकित चारित्र पमाय ने रे, कीधो मोटो अणगार ॥ ७७ ॥ एहवो उपगार कियो तिको रे तत्काल भूले अविनीत उलटा अवगुण बोलै तेहना रे, उणरे सर्प वालो छै रीत ॥ ७८ ॥ आहार पाणी वस्त्रादि कारणैं रे, ते पिण झूटो झगड़ो जोय। इण रे ऊपरलो हुवे तो दावै डङ्क दे, आघो काढे तो उलटो भांड़े सोय ॥ सर्प ने मिश्री दूध पायां पछै रे, डङ्क दे ते गैरी सर्प देख। ज्यूं ओ समकित चारित्र लियां पछै रे, हुवो

साधां रो वैरी विशेष ॥ ८० ॥ वले खाण पीणा रो हुवे लोलपी रे, आप रो दोष न सूझै मूल । छेड़वियां सूं रहामो मएडे, वलि क्रोध करै प्रतिकूल ॥ ८१ ॥ तिण ने दूर करे तो दुश्मण थको रे, बोले घणुं विपरीत । असाध परूपै सगला साधने, तिण रे गैरी सर्प नी रीत ॥ ८२ ॥ सुगुरा साप ने दूध पायां थकां रे, ओ करै पाछो उपगार । तिण ने धन देई धनवन्त करै रे, वले दीठां हुवै हर्ष अपार । सु० । भाव सुणो सुविनीत रा रे लाल ॥ ८३ ॥ केई आप छांदे फिरै एकला रे, पिण सरल प्रणामी शुद्ध रीत रे । तिणने समझाय समकित चारित्र दियो रे, ते आज्ञा पालै रूड़ी रीत ॥ ८४ ॥ तिण रे समकित ने संजम विहुं रे, रुचिया अभ्यन्तर सार । चलावै ज्यूं चालै छान्दो रूंधने रे, ज्यांसूं करै पाछो उपगार ॥ ८५ ॥ मोटो उपगार त्यांरो किम विसरै रे, सूंपै सर्व देही त्यांरे काज । त्यांरे दर्शण देख हर्षत हुवै, सर्व काम में धोरी ज्यूं समाज ॥ ८६ ॥ वले गामा नगरां फिरतां थका रे, सदा काल करे गुणग्राम । ते सुविनीत गुणग्राही आत्मा रे, त्यांने वीर वखाणया ताम ॥ ८७ ॥ शिष्य सुविनीत ने शोभती रे, उपमा दीधी अनेक । सूत्र न्याय भिक्खु स्वामजी रे, सांभलजो सुविशेष रे

॥ ८८ ॥ भद्र कल्याणकारी घोड़े चढ्यो रे, असवार रे हर्ष आणन्द। ज्यूं सीख दियां सुवनीत ने रे, गुरु पामैं परमानन्द ॥ ८६ ॥ सुविनीत हय देखी चावको रे, असवार रे गमतो चालन्त। चावका रूप बचन लागां बिना रे, सुविनीत वर्ते चित्त शान्ति ॥ ६० ॥ अग्निहोत्री ब्राह्मण सेवै अग्नि ने रे, ते घृतादिक सींची करै नमस्कार। सुविनीत सेवै इम गुरु भणी, केवली छतो पिण अधिकार ॥६१॥ सुविनीत हय गय नर नारी सुखी रे, सुखी देव दानव सुविनीत। ते तो पूर्व पुन्य रा प्रभाव सूं रे, दीसै लोक में विनय सुरीत ॥ ६२ ॥ केई पेट भराई शिल्प कारणै, संसार ना गुरु कने सोय। राजादिक ना कुंवर डांडादिक संहै रे, करड़ा बचन संहै नर्म होय ॥६३॥ तो सिद्धन्त भणावे ते सतगुरु तणी रे, किम लोपै विनयवन्त कार। समगत चारित्र पमावियो रे, ओ उत्कृष्टो उपगार ॥ ६४ ॥ धर्म रूप बृक्षरो विनय मूल छै, बीजा गुण शाखादिक सम जाण। तिण सूं शीघ्रबुद्धि कीत्त सूत्र नी रे, दशवैकालिक नवमा रे दूजै वाण ॥६५॥ बृक्ष रो मूल सूकां छतां रे, शाखा पान फलादि सूक जाय। ज्यूं विनय मूल धर्म विणसियां रे, सगलाई गुण विललाय ॥ ६६ ॥ एहवो विनय गुण वर्णव्यो

रे, सांभल ने नर नार । अविनय ने अलगो करो रे, करो विनय धर्म अङ्गीकार ॥ ९७ ॥ अविनीत रा भाव सांभली रे, अविनीत बहु दुख पाय । केई कुगुरु सुध बुध बाहिरा रे, ते पिण हर्षत थाय ॥ ९८ ॥ विनीत रा गुण सांभली रे, विनीत रे आनन्द ओछाव । तो पिण कुगुरु हर्षत हुवै रे, विनय करावण चाव ॥ ९९ ॥ जे समझै नहीं जिन धर्म में रे, आज्ञा ओलखै नांय । ते व्रत विहुंणा नागड़ा रे, प्रत्यक्ष प्रथम गुण ठाणो देखाय ॥ १०० ॥ हाल देखी हंसली तणी रे, बुगली पिण काढ़ी चाल । पिण बुगली सूं चाल आवै नहीं रे, ए दृष्टान्त लीजो संभाल ॥ १०१ ॥ कुगुरु साध ने देखी करी रे, ते पिण करवा लागा अभिमान । आडम्बर कर विनय करावता रे, नहिं श्रद्धा आचार नुं ठिकाण ॥ १०२ ॥ कोयल रा टउकार सुणी करी रे, कां कां शब्द करै काग । शोभाग सुण सतियां तणा, कूदै असतियां अथाग ॥ १०३ ॥ सांगधारी कुसतियां काग सरीषा रे, अशुद्ध श्रद्धा आचार रे मांहि । ठाला बादल ज्यूं थोथा गाजता रे, विनय करावता लाजै नाहिं ॥१०४॥ गैवर नी गति देखने, भूलै स्वान ऊंचा कर कान । ज्यूं भेषधारी देखी साधने रे, स्वान ज्यूं कर रह्या तान

॥ १०५ ॥ ते पिण विनय करावण रा भूखा घणा. साथी सीप सिंगोड्या रा सोय। मिथ्यादृष्टि ते मूलगा रे, त्यांने ओलखे वुद्धिवन्त लोय ॥ १०६ ॥ त्यां ठाम २ थानक वांधिया, थापैं जीव खवायां पुन्य। ते पिण नाम धरावैं साधरो, रुव ज्यो न सूझे समकित शून्य ॥ १७ ॥ पोपां वई रा राज में, नव तूंवा तेरे नेंगदार। ज्यूं विकल सेवका स्वामी मिल्या रे, एहवो भेषधाऱ्यां रे अन्धार ॥ १०८ ॥ वस्त्र पात्र अधिका रावता रे, आडा जड़े किंमाड़। मोल लिया थानक माहें रहे, इसड़ी थाप निरन्तर धार ॥ १०९ ॥ आज्ञा वारैं पुन्य श्रद्धता, आज्ञा में पाप समाज। काचो पाणी पायां पुन्य श्रद्धता रे, प्रत्यक्ष पोपां वाई रो राज ॥ ११० ॥ ते समझ न पड़े श्रावकां भणी, ज्यांरा मत माहें मोटी पोल। पिण आंधा ने मूल सुझै नहीं, तांवा ऊपर झोल ॥१११॥ कुगुरु निषेध्यां अविनीतड़ो, ऊंधा अर्थ करै विपरीत। ते सत गुरुनें कुगुरु कहे, नहिं विनय करण री नीत ॥ ११२ ॥ उण सूं विनय कियो जावै नहिं, तिण सूं वोले कपट सहित। कहै विनय कह्यो छै शुद्ध साधनो रे, इण रे अन्तर खोटी नीत ॥११३॥ साधां ने असाध सरधा- यवा रे ला०, वोलै माया सहित। तिणने वुद्धिवन्त

हुवे ते ओलखे रे, ओ पूरं मतैं अविनीत ॥ ११४ ॥ कहे आचार में चूके घणा घणा रे, म्हां सूं विनय कियो किम जाय। ते बुद्धिहीण जीव बापड़ा रे, न जाणै सूत्र न्याय ॥ ११५ ॥ बुकस पड़िसेवण भेला रहे रे, अवधि मनपर्यव केवल अवङ्क। ते भेला आहार करता शंके नहीं, इणने विनय करतां आवै शङ्क ॥११६॥ देखो अंधारो अवनीत रे रे, निज अव-गुण सूझे नांय। विनय नो गुण पोते नहीं, तिणसूं पर तणुं औगुण देखाय ॥ ११७ ॥ दर्शण मोह उदय घणुं, पूरो विनय कियो नहीं जाय। ओलखे अवगुण आपरो, ए उत्तम पणो सुहाय ॥११८॥ ते कहे केवली बुकस भेला रहे, मोह बल्यो तिण सूं नावे लहर। लहर आवे चित्त थिर नहीं, ते जाणै निज कर्म रो जहर ॥ १६ ॥ बुकस पड़िसेवण कदे नहिं मिटै रे, तीनूं ही काल रे मांय। दोय सौ कोड़ सूं घटै नहीं, चित्त अथिर सूं ते न मिटाय ॥ १२० ॥ ज्यांरे सूत्र तणी नहीं धारणा, अति प्रकृति घणी अजोग रे। ते थोड़ा में रंग विरंग हुवै रे, मोटो दर्शण मोह रोग ॥ १२१ ॥ कै कांरे दर्शण मोह तो दिसै घणो, पिण सैणा घणा बुद्धिवान। ते गुरुने सुणाय निशङ्क हुवै रे, ज्यांरे समकित रो जोखो मति जाण ॥१२२॥

दोष री थाप गुरां रे नहीं, दोपरा डंडरी थाप। और री कीधी थाप हुवै नहीं, इम जाण निशंक रहे आप ॥ १२३ ॥ इम सांभल उत्तमा नरां रे, राखो देवगुरां नी प्रतीत। आसता राख आगै घणा, गया जमारो जीत ॥ १२४ ॥ वर्ण नाग नतुआ तणो, मित्र तस्यो प्रतीत सूं पेख। ते उत्तम पुरुषां री प्रतीत सूं, तिख्या तिरे ने तिरसी अनेक ॥ १२५ ॥ भिक्खु स्वाम कह्या भला, दीपता वर दृष्टन्त। केयक तो सूत्रे करी, केयक बुद्धि उपजंत ॥ १२६ ॥ उत्पत्तिया बुद्धि अति घणी स्वाम भिक्खु नी सार ॥ स्वाम गुणा नो पोरसो, स्वाम शासण शिणगार ॥ १२७ ॥ स्वाम दिसावान दीपतो, स्वाम तणी वर नीत। आसता तास न आदरै ते अपछंदा अविनीत ॥ १२८ ॥ भिक्खु दीपक भरत में, प्रगट्यो बहु जन भाग। स्वाम भिक्खु गुण संभरूं रे, आवै हर्ष अथाग ॥ १२६ ॥ ढाल भली इकचालीसमी, आख्या दृष्टन्त अनेक। भिक्खु स्वाम प्रसाद थी, जय जश करण विशेष ॥ १३० ॥

॥ दोहा ॥

इत्यदिक दृष्टान्त अति, सूत्र न्याय घलि सार।
सखरा मेल्या स्वामजी, भिक्खु बुद्धि भण्डार ॥ १ ॥

अणुकम्पा रे ऊपरे, करणी पढ़म गुण ठाण।
इन्द्री वादि ऊपरे, वहु दृष्टान्त वखाण ॥ २ ॥
पोत्यावंध ऊपर प्रत्यक्ष प्रज्याबादि पिछाण।
कालवादी की चौपई, दृष्टान्त त्यां वहुजाण ॥ ३ ॥
व्रत अव्रतरी चौपई, अरु श्रद्धा आचार।
जिण आज्ञा पर युक्ति सूं, सखरा हेतू सार ॥ ४ ॥
टीकम डोसी कच्छ नो, सूक्ष्म पूछा सोय।
जाब दिया अति जुक्ति सूं, इम भिक्खु अवलोय ॥ ५ ॥
भिक्खु नाम कह्यो भलो, सूत्रां में वहु ठाम।
भेदे कर्म भणी भलो गुण निप्पन्न तुम नाम ॥ ६ ॥
पंच महाव्रत अंक पंच, बार व्रत ना बार।
अव्रत बारे अंक धर, त्रि कर्ण जोग प्रकार ॥ ७ ॥
इण विध मांड बतावता हेतु न्याय अनेक।
आप देखाया अधिक ही, वर्णवे केम विशेष ॥ ८ ॥
दाख्या ते दृष्टान्त नो संकलना सुविशाल।
कहूं छूं संक्षेपे करी, शुचा मात्र संभाल ॥ ६ ॥

॥ ढाल ४२ वीं ॥

(डाम मूंजादिक नी डोरी० ए देशी)

पांच सौ मण चणा पिछाण, पंच सिखां हेत ते जाण १ डांकरा ने चणा सेर दीधूं, पीस पोय जल सूं तृप्त कीधूं २ ॥ १ ॥ आखा पजुसणा में न्हाल, चौड़े परंपरा थित चाल ३ माता वेश्या ने तें जल पायो, पाप छै पिण सरीषा न थायो ॥ २ ॥ तिम श्रावक कसाई न सरिषो, पाप सुणी कोई मत

भिड़को ४ ॥ चद्दर ले गयो तसकर एक, एक दीधी प्रायछित किण रो संपेख ५ ॥३॥ थांरा धणी रो नाम नाथू होय, कहे क्यांने नाथू हुवै सोय ६ मूला दियां कांई हुवे त्याने, पूछ्यो अमरसिंघजी रा साधां ने ॥ ४ ॥ पड़िया तसकर ने आकू खवायो, ते तो सेठ नो वैरी छै तायो ८ खेत पाकां करसणी रे वालो तिण रो रोग मेट्यां फल म्हालो ६ ॥ ५ ॥ ममता उतरी कहै प्रसिद्धि, दश वीगा खेती किणने दीधी १० सावज दानरा तू करै त्याग, म्हाने भांडवा ने के वैराग ११ ॥ ६ ॥ जल लोटो सूंपजो म्हारे हाट, ज्यूं पुन्य कहै सांनी रे वाट १२ पड़िमाधारी ने दियां सूं होय, लेणवाला ने ते अव्रलोय १३ ॥ ७ ॥ कोई काचो पाणी किणने पावै, कोई पारकी खाई लुटावै। ४ धन दियो अव्रतीने ताहि, लाय मां सूं न्हाख्यो लाय माहि १५ ॥ ८ ॥ घृत तम्बाकू भेला न मेल, ज्यूं व्रत अव्रत में नहीं भेल १६ आंख जीभ औषध रो दृष्टन्त, व्रत अव्रत ऊपर उपजंत १७ ॥ ६ ॥ शोर अग्नि न्यारा सूं न नाश, ज्यूं व्रत अव्रत जुजुवा तास १८ सोमल मिश्री पसारो रे न्यार, व्रत अव्रत जुवा विचार १६ ॥ १० ॥ कहै गृहस्थ रो है छन्द, छांदा में धूल है मंद २० खांड घृत मेदो खरा होय, ज्यूं

चित्त वित पात्र सुजोय २१ ॥ ११ ॥ थाने असाध जाण ने दियो दान, उत्तर खाधी मिश्री विष जान। २२ आक थोर रो दूध अशुद्ध, २३ सावज दया अनुकम्पा न शुद्ध २४ ॥ १२ ॥ लाय वुभायां मिश्र थापंत, तो नार मार्‍यां न पाप एकन्त। २५ वले करुणा घणा रो आण, कसाई ने मार्‍यो मिश्र जाण २६ ॥ १३ ॥ वले उरपुर ने मारे विशेष, तिणमें पिण मिश्र छै त्यांरे लेख २७। वले अटवी बालतो जाण, तिण ने मार्‍यां मिश्र क्यूं न माण २८ ॥ १४ ॥ कतल करता तुर्कादिक ताय, तिणने मार्‍यां मिश्र त्यांरे न्याय २९ गायांदिक हिंसक जीव संघारे, त्यांने मार्‍यां मिश्र क्यूं नहिं धारे ३० ॥ १५ ॥ फांसी काढ़े ते धर्मी कहिवायो, तो थारा गुरु न काढ़े किण न्यायो ३१ चोर ग्यारह में एक छुड़ायो, तिण रो सेठ प्रत्यक्ष फल पायो ३२ ॥१६॥ उरपुर खाधो उजाड़ रे मांयो, मन्त्रवादि भाड़ो दे बचायो ३३ साधां सुणायो श्री नवकार, आज्ञा में किसो छै उपगार ३४ ॥ १७ ॥ साहुकार नी स्त्रियां दोय, एक रोवै न रोवै ते जोय। कहो साधुजी किणने सरावै, संसारी रे मन कुण भावै ३५ ॥ १८ ॥ मोहकमसिंहजी पूछ्यो महाराज, आप गमता लागो किण काज। नारो हर्षे कासीद

ने निरख, तिम शिव मग नो थांरे हर्ष ३६ ॥ १६ ॥ तुझ अवगुण काढ़ै है ताय ३७ थारो मुंहड़ो देख्यां नर्क जाय ३८ ताकड़ी डांडी रो दृष्टान्त ३६ कहै उघा भणी वांदन्त ४० ॥ २० ॥ गुणगोली सीरा सूं शोभाय ४१ एक भांगां पांचूं किम जाय ४२ करो थानक म्हे कद आख्यो ४३ सीरो करो जमाई न दाख्यो ॥ २१ ॥ सखरी मुझ करो सगाई । डावरे कद कह्यो थो ताहि ४४ जति रो उपासरो कहाय, मथेण रे पोशाल है ताय ४५ ॥ २२ ॥ झालर सुण स्वान रुदन करन्त, विहाव री मुवांरी न जाणन्त ४६ दुःख नी रात्रि मोटी देखाय, सुख नी रात्रि छोटी दीसे ताय ४७ ॥ २३ ॥ गाम रे गोरवें खेती बाही, गधा न पड्यां तो ते ठहराई ४८ करड़ा दृष्टान्त कहो किण न्याय, करड़ो रोग फूं जाल्यां न जाय ४६ ॥ २४ ॥ गोहां री दाल हुवै नाहिं, अल्प बुद्धि न समझे ताहि । ५० आपरी भाषा नहिं ओलखाय, पोते लिख्यो वाच्यो नहिं जाय ५१ ॥ २५ ॥ गौ पग डांडो पाखण्ड मग ताहि, जिण माग रस्तो पात शाहो ५२ पाग चौरी मुदो न पोंचाय, झूठो ठाम २ अटक जाय ५३ ॥ २६ ॥ साधां सूंस करायो सोय, भाग्यां साध ने पाप न होय । कपड़ो बेच नफो लियो

सार ५४ साधु ने घृत दियो उदार ५५ ॥ २७ ॥
वैरागी वैराग चढ़ावै, कसूंबो गलियां रंग पमावै
५६ कहै म्हे जीव बचावा ए ठागो, चोकी छोड़
चोरयां करवा लागो ५७ ॥ २८ ॥ श्रपपात्र जिम छै
तिम राखे, पूरो न पलै पंचम काल भाषे ५८ तेलो
तीन दिना रो ते काल, हिवड़ां पिण तीन दिवस
नो न्हाल ५९ ॥ २९ ॥ दीख्या लेऊं पिण आंसू तो
आय, जमाई रोयां शोभ न पाय ६० बाल विधवा
देखी लोक रोय, तिण रा काम भोग वांछै सोय ६१
॥ ३० ॥ डावरा रे माथे दियां द्वेप, लाडू दियो ते
राग संपेख ६२ जाटणी रो उदक जाच्यो जाय,
चारो निरखां दूध दे गाय ६३ ॥ ३१ ॥ और गण रो
थारे मांय आय, तिण ने दीख्या देई लेवो मांय ६४
नरक में जाय कुण तसु ताणे, पथर ने कुवे तले कुण
आणै ६५ ॥३२॥ कुण स्वर्ग ले जावे ताय, काष्ट जल
पर कुण ठहराय ६६ पइसो डूबै बाटकी तिराय,
संजम तप सूं हलको थाय ६७ ॥ ३३ ॥ पात रे रंग
कुंथवा दोहरा, काला लाल सूं देखणा सोहरा ६८
म्हारे केलु सूं रहना रा भाव, कच्चा केलु छोड़े किण
न्याव ६९ ॥ ३४ ॥ कुजागां रा करै एक माथे, एक
कर्ज मिटे निज हाथे ७० चोर हिंसक कुशीलिया

तीन, त्यांरा तीन दृष्टान्त सुचीन ७३ ॥३५॥ कीड़ी ने कीड़ी जांणै ते नाण, पण कीड़ी ज्ञान मति जाण ७४ साधु थाका ने गाडे वेसाण, किणही गधै वेसा-यंयो जाण ७५ ॥ ३६ ॥ पुन्य मिश्र ऊपर अवलोय किण री एक फूटा किण री दोय ७६ पोल वारी खोली दीसां बार, देखी हेम ने उत्तर उदार ७७ ॥ ३७ ॥ थोथा चणा री भखारी विख्यात, ऊंदरा रड़-बड़ की सारी रात ७८ कोयलां री राब बासण काला, बलि आंधा जीमण परुसण वाला ७९ ॥ ३८ ॥ तार काढो काढ़े तार कांई, थाने डांडा ही सूझै नाहीं ८० वाय बंग घरटी उडै जाय, दोष थाप्यां संजम किम ठहराय ८१ ॥ ३९ ॥ एकलड़ो जीव कहो किण लेख, त्यांरे लेखे ही चोलड़ो देख ८२ वस्त्र राख्यां सी परीषह भी भांजै, तो अन्न सूं प्रथम रहे किण लाजै ८३ ॥ ४० ॥ श्वेताम्बरी शास्त्र थी घर छांड, तिण सूं राखां छां तीन सुडण्ड ८४ अनार्य कहै दया ने रांड, करै कपूत माता ने भांड ८५ ॥ ४१ ॥ डाकणियां डरै गारडू आयां, साधु आयां पाखण्डी भय पाया ८६ कड़वा पकवान जुर सूं कहाय, मिथ्या जुर सूं साधु न सुहाय ८७ ॥ ४२ ॥ बांधी बाल्यां किम तेजरा तोड़ै, चारित्र वैराग विण

किम जोड़ै ८८ दियो तीन नात्रा रो दृष्टान्त, सुगुरु कुगुरु ऊपर शोभन्त ८९ ॥ ४३ ॥ भेषधारी पिण तप करे ताय, मोटो देवालो केम मिटाय ९० वर्णी वणाई ब्राह्मणी रो वात, साम्प्रत तिण रा साथी साख्यात ९१ ॥ ४४ ॥ सूत्र वाचे छेहड़े हिंस्या थापै, छेहड़े मोख्या मारू ज्यूं किलाप ९२ पत्थर खोस्यां तिण ने कांई होय, तिण रे हाथ आयो ते तूं जोय ९३ ॥४५॥ खेमा साहरा घर रो नेहतो होय, द्रव्य साध या ने कहां सोय ९४ साध असाध कुण कहो वाय, नागा ढकिया कितरा गाम मांय ९५ ॥ ४६ ॥ वले कुण देवाल्यो साहुकार, लखण वतावूं करलो विचार ९६ दियो कुणकां पर पग तीन चार, खामी छै पिण तिण सूं न प्यार ९७ ॥ ४७ ॥ दियो सेतखाना रो दृष्टान्त, छिद्र पेही ऊपर दाखन्त ९८ हेम पछे-वड़ी कहि अधिकाय, तिण ने कठिण सीख समभाय ९९ ॥ ४८ ॥ शोभाचन्द ने कह्या शुभ न्याय, पाषाण ने सोनूं न कहाय १०० नेहत मांगो आन किण न्याय सुता व्याव में मित्र बोलाय १०१ ॥ ४९ ॥ अविनीत त्रिया ने पिछाण, अविनीत साधु ऊपर जाण १०२ कह्या संखेप थी अलर मात, पाछै वर्णवी सगली वात ५० चौपी विनीत अवनीत री तास, आसरे

तिण सूं हेतु पचास। ते इकतालीमी ढाल में आख्या, तिण कारण इहां न भाख्या ॥ ५१ ॥ इत्यादिक कह्या हेतु अनेक, पूरा कह्या न जाय विशेष। हुवा भिक्खु उजागर ऐसा, साम्प्रत काल में श्रीजिन जैसा ॥५२॥ तसु भजन चिंतामण सरखो, प्रत्यक्ष पारश भिक्खु परखो। म्हारे प्रबल भाग्य प्रमाण, इणकाल अवतरिया आण ॥ ५३ ॥ नित्य स्मरण कर नर नार, सुख सम्पति कारण सार। दुःख दोहग टालणहार, इह भव परभव सुखकार ॥ ५४ ॥ निर्मल ज्ञान नेत्रे करी निरखो, पूज भिक्खु त्रिविध कर परखो। चर पूरो है तसु विश्वास, अति वंछित पूरण आश ॥ ५५ ॥ बयालीसमो ढाल विमास, शुद्ध दूजो खण्ड सुप्रकाश। स्वामी जय जश करण सुहाया, प्रबल भाग बले भिक्खु पाया ॥ ५६ ॥

॥ कलश ॥

दृष्टान्त चारु अधिक सारु, स्वामनाज सुहामणा। भव उदधि तारण जग उद्धारण, स्वाध भिक्खु रलियामणा ॥ सुख वृद्धि सम्पति दमन दम्पति, भ्रम भंजन अति भलो। हद बुद्धि हिमागर सुमति सागर नमो भिक्खु गुण निलो ॥ १ ॥

तृतीय खण्ड।

सोरठा।

आख्यो द्वितीय खण्ड रे, असि आउ सा प्रणम।
मुनि वर्णत महिमण्ड रे, तीजो खण्ड निसुणो तुम्हें ॥ १ ॥

वेणीरामजी स्वामी कृत।

॥ दोहा ॥

चारित्र लीधो चूंप सूं, पाखण्ड पन्थ निवार।
भवियण रे मन भांवता, हुवा मोटा अणगार ॥ १ ॥
उद्देर पूजा कही, समण निग्रन्थ नी जाण।
तिण सूं पूज्य प्रगट थया, ए जिन वचन प्रमाण ॥ २ ॥
उपम तो आछी कही, समण निग्रन्थ नें श्रीकार।
चौरासी अति दीपती, सूत्र अनुयोग द्वार मझार ॥ ३ ॥
वले दशमा अंग अधिकार में, कही तोल उपमा तंत।
समण भिक्षु ने शोभती, भाख गया भगवंत ॥ ४ ॥
वले पटद्श उपमा, बहु श्रुतिने श्रीकार।
उतराध्ययन इग्यार में, श्री वीर कह्यो विस्तार ॥ ५ ॥
इण अनुसारे ओलखो, भिक्खु ने भली भंत।
उपम गुण आछा घणा त्यांरो पार न कोई पामंत ॥ ६ ॥
गुणवन्त गुरु ना गुण गांवतां, तीर्थङ्कर नाम गौत बन्धाय।
हिवे उपम सहित गुण वर्णवूं, ते सुणज्यो चित्तलाय ॥७॥

॥ ढाल ४३ मी ॥

(हरिया ने रंग भरिया जी निला जिन निरखूं नैन सूं एदेशी)

आदिनाथ आदेश्वरजी, जिनेश्वर जग तारण गुरु, धर्म आद काढी अरिहन्त। इण दुषम आरे कर्म कटिया जी, प्रगटिया आदि जिणन्द ज्यूं, ए इचरज अधिक आवन्त॥ श्याम वरण अति सोहैजी, मन मोहै नेम जिणन्द ज्यूं, ज्यांरो वाणी अमीय समान। भवियण रे मन भायाजी, चित्त चाह्या तीरथ चारमां, मुनि गुण रत्नारी खाण॥ साध भिक्खु सुखदायाजी मन भाया भवियण जीवने ॥ १ ॥ कालवादी आदि जाणीजी मत आणी मार्ग उथापवा कुवादयां केलविया कूड़। अै पाखण्ड घोचा पोचाजी कांई ज्ञान करी गिरवा मुनि, चरचा कर किया चकचूर ॥ साध० ॥ २ शंख उज्वल श्रीकारीजी, पयधारी दोनूं दीपता, नहीं विगड़ै दूध लिगार। ज्यूं थे तप क्रिया कोधी जी, कर लीधी आतम उजली, पय दश यति धर्म धार ॥ ३ ॥ कम्बोज देश नो घोड़ो जी, अति सोरो करै सिरदार ने, नहीं आणै अहिल लिगार। ज्यूं भवियण ने थे तारयाजी, उतारया पार संसार थी, सुखे जासी मोक्ष मझार ॥ ४ ॥ शूर शिरोमण साचोजी, नहीं काचो लड़ता

कटक में, सुत्रनीत अश्व असवार। ज्यूं कर्म कटक दल दीधो जी, जश लीधो जाझो जगत् में, चढ़ सूत्र अश्व ओकार॥ ५॥ हाथी हथणया परवारै जी, वल धारै दिन २ दीपतो, वधै साठ वर्ष शुद्ध मान। ज्यूं तयाली वर्ष लग जाझाजी, तप ताजा तेज तीखा रह्या, प्राक्रम पिण परधान॥ ६॥ वृषभ सिंह खन्ध भारी जी, सिरदारी गायां गण मझे, थेट भार वहै भली भन्त। ज्यूं थे गण भार थेट निभायाजी; चला-या तीरथ चूंप सूं; सहु साधां में शोभन्त॥७॥ सिंह मृगादिक नो राजाजी, तप ताजा दाढ़ा तेज सूं, जीव न जीपै जोय। ज्यूं आप केशरी नी परै गुंज्या जी, धूज्या पाखण्डी धाक सूं, थाने गञ सक्यो नहीं कोय॥ ८॥ वासुदेव वल जाणोजी, वखाण्यो वीर सिद्धन्त में, शंख चक्र गदा धरण हार। थारा ज्ञान दर्शण चारित्र तीखाजी, नहीं फीका त्यांकर तेज सूं, पूज्य पाखंड दियो निवार॥ ६॥ आखा भरत नो राजाजी, अति ताजा सेन्या सझ करी, आणै नैखां नो अन्त। थे पाखण्ड सहु ओलखायाजी, हटाया कुव्य उत्पात्त सूं, तत्व वताया तन्त॥ १०॥ शक्रेन्द्र सिरदारी जी, वज्रधारी सुर में शोभतो, जक्षादिक ने जीपै जाण। जिम सूत्र वज्र ओकारीजी, वल धारी

वुध्य उत्पात्त सूं, पूज्य पाड़ी पाखण्ड री हाण ॥११॥ आदित्य उग्यो आकाशेजी, विणाशे तिमिर तेज सूं, अधिको करै उद्योत। ज्यूं थे अज्ञान अन्धारो मिटा-योजी, वतायो मारग मुगत रो, घण घट घाली जोत ॥ १२ ॥ चन्द सदा सुखकारीजी, परिवारी ग्रह ना गण मझे, सोमकारी शोभन्त। ज्यूं चार तीरथ सुखदायाजी, मन भाया भवियण जीव रे, भिक्खु भला जशवन्त ॥ १३ ॥ लोक घणा आधारीजी, अति भारी धानांकर भर्यो, ते कोठागार कहाय। ज्यूं ज्ञानादिक गुण भरियाजी, परवरिया पूज्य प्रगट थया, आधार भूत अथाय ॥ १४ ॥ सर्व वृक्षा में अति सोहैजी, मन मोहै दीसै दीपतो, जम्बु सुदर्शण जाण। ज्यूं सन्ता में सिरदारीजी, मतभारी भिक्खु भरत में, उपना इचरजकारी आण ॥ १५ ॥ सीता नदी सिरै जाणीजी, वखाणी वीर सिद्धन्त में, पांच से जोजन प्रवाह। ज्यूं तप तेज अति तीखाजी, नहीं फीका रह्याज फावता, सदाकाल सुखदाय ॥१६॥ मेरु नी उपमा आछीजी, नहीं काची कही कृपालजी, ते ऊंचो घणुं अत्यन्त। औषध अनेक छाजैजी, विराजै गुण त्यांमें घणा, ज्यूं औ वहुश्रुति वुद्धवन्त ॥ १७ ॥ स्वयंभूरमण समुद्र रूड़ोजी, पूरो पात्र राज

पिहुलो कह्यो, प्रभूत रतन भरपूर। सागर जेम गम्भीराजी, शूरा वीरा गुण कर गाजता, सूत्र चरचा में शूर ॥ १८ ॥ ए षटदश उपम आछीजी, कांई साची सूत्र में कही, बहुश्रुति ने श्रीकार। इण अनुसारे जाणोजी, पिछाणो करल्यो पारीखा, भिक्खु गुण भण्डार ॥ १६ ॥ उपमा अनेक गुण छाज्याजी, विराज्या गादी वीर नी. पूज्य पाट लायक गुण पाय। समुद्र जेम अथागाजी, जल थागा जिन कह्यो नहीं, ज्यूं पूरा केम कहाय ॥ २० ॥ पाट लायक शिष्य भालीजी सुहाली प्रकृति सुन्दरु, भारमलजी गहर गम्भीर। पदवी थिरकर थापीजो, आ आपी आचारज तणी, जाण सुविनीत सधीर ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

भाग बली भिक्खु तणे, संत हुवा गण मांहि।
वर्णन संक्षेपे पवर, आखूं धर उछाहि ॥ १ ॥
केयक पण्डित मरण कर, कीधो जन्म कल्याण।
कर्म जोग केइयक टल्या, सुणज्यो चतुर सुजाण ॥ २ ॥
बड़ा संत भिक्खु थकी, जनक सुतन वर जोड़।
पिता स्वाम थिरपाल जी, फतेचन्द सुत मोड़ ॥ ३ ॥
बड़ा टोला में था बिहुं, राख्या बड़ा सुरीत ॥
सरल भद्र बिहुं श्रमण शुद्ध, पूरी तसु प्रतीत ॥ ४ ॥
तपसी तप करता बिहुं, शीत उष्ण बरसाल।
बड़ वयरागी विनय धर, रूड़ा मुनि अणपाल ॥ ५ ॥

निर अहङ्कारी निर्मला, निरलोभी निकलङ्क।
हलुआकर्मी उपधि करें, आर्जव उभय अवङ्क ॥ ६ ॥
सीतकाल अति सीत सहै, पछेवड़ी परिहार।
जन निशि देखी जाणियो, ए तपसी अणगार ॥ ७ ॥
कोटे आप पधारिया, महिपति आवण हार।
साम्भल ने ते संत बिहुं, ततक्षण कियो विहार ॥ ८ ॥
निज आतम तारण निपुण, बार बेपरवाह।
तप मुद्रा तीखी घणी, चित्त इक शिवपद चाह ॥ ९ ॥

॥ ढाल ४४ वीं ॥

(राणा भाखे हो दासी सांभल बात० ए देशी)

सन्त दोनूं हो शोभै गुणवन्त नीत २ त्यांसूं प्रीत पूर्ण भिक्खु तणी। भिक्खु सेती हो ज्यांरे पूण प्रीत २ गुण ग्राही आतमधणी ॥ १ ॥ पद आचार्य हो भिक्खु बुद्धि ना भण्डार २ जन बहु देखतां युक्ति सूं। आप मूकी हो पद नो अहंकार २ करजोरी वन्दना करै भक्ति सूं ॥ २ ॥ किण टोला ना हो तुमे सन्त कहिवाय २ इण विध लोक पूछै घणा। मान मूकी हो बोलै विहुं मुनिराय २ म्हे भीखणजी रा टोला तणा ॥ ३ ॥ प्रश्न चरचा हो त्यांने कोई पूछन्त २ तो सन्त दोनूं इम भाखता। भिक्खु भाखै हो तेहिज जाणज्यो तन्त २ रूड़ी आसता भिक्खु नी

राखता ॥ ४ ॥ म्हाने तो हो पूरी खबर न कांय २ भीखणजी ने पूछी निर्णय करो। शुद्ध जाणो हो तेहिज सत्यवाय २ प्रगट कहै इम पाधरो ॥ ५ ॥ त्यांरा तपनो हो अधिको विस्तार २ कायर सुण कम्पै घणा। अति पामै हो शूरा हर्ष अपार २ सन्त दोनूंई सुहावणा ॥ ६ ॥ संजम पाल्यो हो बहु वर्ष श्रीकार २ विचरत बरलू आविया। धर्म मूर्त्ति हो ज्ञानी महा गुण धार २ हलुकर्मी हर्षाविया ॥ ७ ॥ शुद्ध तपस्या हो फतेचन्दजी सेंतीस २ अधिक कियो तप आकरो वारु करणी हो ज्यांरी विश्वावीस २ क्षान्ति गुणे मुनिवर खरो ॥ ८ ॥ पिता दीधो हो तसु पारणो आण २ ठण्डी घाट बाजरी तणी। फता करले हो पारणो पहिछाण २ सरल पणे कहै सुत भणी ॥ ९ ॥ निरममती हो सुत सन्त निहाल २ प्रगट अपथ्य कियो पारणो। कर गयो हो तिण जोग सूं काल २ सुमति जन्म सुधारणो ॥ १० ॥ एकतीसे वर्ष हो सम्वत अठार २ फतेचन्द फते कर गया। निरमोही हो तात निमल निहार २ थिरचित संजम अति थया ॥ ११ ॥ मुनि आयो हो खेरवा शहर माहिं २ संलेखणा मण्डिया सही। चिहुं मासे हो पारणा चित्त चाहि २ आसरै चवदे किया वही ॥ १२ ॥ थिर चित्त सूं हो

मुनिवर थिरपाल २ वर्ष वतीसे विचारियो। कर तपस्या हो मुनि कर गयो काल २ जीतव जन्म सुधारियो ॥ १३ ॥ जोड़ी जुगती हो तात सुतन जिहाज २ स्वाम भिक्खुरा प्रसाद थी। पण्डित मरणो हो ओतो भवदधि पाज २ पाम्या हे पर्म समाध थी ॥ १४ ॥ सखरो भाषी हो चमालीसमी ढाल २ स्वाम भिक्खु गुण सागरु। वारु करवे हो जय जश सुविशाल २ अधिक गुणारा आगरु ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

समत अठारह वतीस में, भिक्खु बुद्धि भण्डार।
प्रकृति देख साधु तणी, लिखत कियो तिणवार ॥ १ ॥
सहु साधांनें पूछने, वांधी इम मर्याद।
सुखे संजम पालण भणी, टालण क्लेश उपाधि ॥ २ ॥
पद युवराज समापियो, भारीमाल ने जाण।
सर्व साध ने साधवी, पालज्यो यांरी आण ॥ ३ ॥
भारमलजी री आज्ञा थकी, विचरवो शेषे काल।
चौमासो करिवो तिको, आज्ञा ले सुविशाल ॥ ४ ॥
दीक्षा देणी अवर ने, भारी माल रे नाम।
पिण आज्ञा लीधां विना, शिष्य न करणो ताम ॥ ५ ॥
इच्छा हुवे भारीमाल री, शिष्य गुरु भाई सोय।
पदवी देवे तेहने, तसु आज्ञा अवलोय ॥ ६ ॥
एक तणी आज्ञा मझे, रहिवो रूड़ी रीत।
पहवी रीत परंपरा, बांधी स्वाम बदीत ॥ ७ ॥

टोलामां सूं कोई टलै, एक दोय दे आदि।
धूर्त बुगल ध्यानी हुवे. तिणने न गिणवो साध ॥ ८॥
तीर्थ में गिणवो न तसु, चिउं संघ नो निन्दक जाण।
एहवा ने वान्दे तिके, आज्ञा बार पिछाण ॥ ९॥

॥ ढाल ४५ मी ॥

(पाड़वा बोल म बोल ए देशी)

एहवो लिखत अमाम, सखर मर्याद हो बांधी स्वामजी। नीचे साधांरा नाम, कठिण संजम ने पालण कामजी ॥ १ ॥ मेटण क्लेश मिथ्यात, थिर चित्त थापण हो मर्यादा थुणी। वारु वुद्धि विख्यात सुगुण सुबुद्धि हो हर्ष पामै सुणी ॥ २ ॥ अपछन्दा अवनीत, दोषण काढ़ै हो इण मर्याद में। कुबुद्धि कहै कुरीत, अवगुण ग्राही हो आत्म असमाधि में ॥३॥ विगड़चो पछै वीरभाण, आज्ञा लोप्यां सूं स्वामी अलगो कियो। पाछे कह्यो प्रवन्ध पहिछाण, दर्शण मोह पिण तिणने दवावियो ॥ ४ ॥ टोकरजी तन्त-सार, हाजर रहिंता हो स्वामी हरनाथजी। सन्त दोनूं सुखकार, वर जश वारु हो तास विख्यातजी ॥५॥ भारीमाल ने भाल, पद युवराज पूज समापियो। सन्त वड़ा सुविशाल, दम्भ मेटीने हो थिर चित थापियो ॥ ६ ॥ सोम्य मूर्त्ति सुखकार, स्वाम प्रशंस्या अंत्य समय सही। साझ थी संजम सार, कीर्ति हो

आप मुखे कहो ॥ ७ ॥ वगड़ी शहर विशेष, स्वाम टोकरजी हो संथारो लियो। देश ढुंढार में देख रे, हद संथारो हरनाथजी कियो ॥ ८ ॥ स्वाम भिक्खु रे प्रसाद, सन्त दोनूं हो जन्म सुधारियो। उपजे मन अहिलाद, स्मरण साचो अति सुखकारियो ॥ ९ ॥ भारीमाल युवराज, सेवा स्वामी नी अन्त तांई शिरे। पदवीधर भव पाज, अणशण आछो वर्ष अठन्तरे ॥ १० ॥ लिखमेंजी संजम लीध, कर्म प्रभावे गण सूं न्यारो थयो। पड़िवाई कहो कद सिद्ध, देसुण अध पुद्गल हो उत्कृष्ट जिन कह्यो ॥ ११ ॥ अखैरामजी सु मण्ड, स्वाम भिक्खु पै संजम आदस्यो। भेष-धास्यां ने छंड, शुद्ध मन सेती यो पवर चरण धस्यो ॥ १२ ॥ पारख जाति पिछाण, पारख साची हो थें पूर्ण करी। लोहावट ना सुजाण, चरण अराध्यो हो थिर चित्त आदरी ॥ १३ ॥ घर तप छेहड़े धिंन, छतीस तेला चोला में चलता रह्या। अखै दीवाली दिन, वर्ष इकसट्ठे परभव में गया ॥ १४ ॥ अमरोजी छुटक धार, पंच काया थी अभवी अनन्त गुणा। अभवी थी अधिकार, ज्ञानी देवां भण्या पडिवाई अनन्त गुणा ॥ १५ ॥ सन्त बड़ा सुखराम, वासी लोहावट ना पोत्यावन्ध सही। समझाया भिक्खु

स्वाम, सुरतरु सरीषो हो चरण लियो सही ॥ १६ ॥
देव मूर्त्ति सम देख, धुनि इर्या नी हो निर्मल धारणा।
चारु वर्ण विशेष, सौम्य प्रकृति महा सुख कारणा ॥
१७ ॥ आसरै बयालीस वास, निर्मल चारित्र हो
स्वामी गुण निलो। बासठे वर्ष विमास, दिवस
पचीसे अणशण अति भलो ॥ १८ ॥ स्वाम भिक्खु
साख्यात, तत्त्व ओलखाई बहुजन तारिया। वर्ण-
विये सुबात, स्वाम सौभागी महा सुखकारिया ॥१६॥
समरूं हूं दिन रैण, याद आयां सूं हो हिवड़ो
उल्लसे। चित्त माहिं पामूं चैन, बंछित पूर्ण तू मुझ
मन वसै ॥ २० ॥ पांच चालीसमी ढाल, श्रमण
शोभाया हो भजन बंछित फलै। जय जश करण
विशाल, स्मरण सम्पति मन चिन्तत मिलै ॥ २१ ॥

सोरठा।

छुटक तिलोकचन्द रे, वासी चेलावासरा।
चन्द्रभाण कर फन्द रे, जिलो बांध ने फटाविया ॥ १ ॥
मौजीराम गण माहिं रे, शुद्ध मन सूं संजम लियो।
फर्मा दियो छकाय रे, ते पिण छुटक जाणज्यो ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

शिवजी स्वामी शोभता, स्वाम तणा सुवनीत।
पण्डित मरण कियो पवर, गया जमारो जीत ॥

॥ सोरठा ॥

जाति चौरड़िया जाण रे, पुरना वासी पिछाणज्यो ।
चारित्र चन्द्रभाण रे, शुद्ध मन सूं संजम लियो ॥ १ ॥

भण्या बुद्धि भरपूर रे पिण प्रकृति अहङ्कारनी ।
अविनय अवगुण भूर रे, आज्ञा कठिण आराधवी ॥ २ ॥

जिलो वांधियो जाण रे, तिलोकचन्द सूं तुरत ही ।
मन में अधिको मान रे, साध फंदाया अवर ही ॥ ३ ॥

संत अवर समझाय रे, स्वाम भिक्खु सिंह सारिषा ।
एकर ने ताहि रे, छोड्या विहुं नें जु जूआ ॥ ४ ॥

अवगुण अधिक अजोग रे, त्यां बोल्या भिक्खु तणा ।
प्रत्येक्ष कषाय प्रयोग रे, असाध प्ररूप्या स्वाम ने ॥ ५ ॥

भिक्खु बुद्धि भण्डार रे, शुद्ध मन सूं समझाविया ।
प्राछित कर अङ्गीकार रे, पाछा आया गण मुझे ॥ ६ ॥

सहु ने किया निशङ्क रे आया डंड अंगीकरी ।
विरुओ यामें वंक रे, प्रत्यक्ष लोक पेखियो ॥ ७ ॥

श्रमणी संत समाध रे, किण ने डंड न ठहराचियो ।
सहु नें कह्या असाध रे, त्यांराहिज पग वांदिया ॥ ८ ॥

मान घणो घट माहि रे, विगड़ी तिण सूं वातड़ी ।
प्राछित नहीं ले ताहि रे, बिहुं ने साथे छोड़िया ॥ ९ ॥

वर्णन बहु विस्तार रे, रास माहि भिक्खु रच्यो ।
अल्प इहाँ अधिकार रे, दाख्यो मैं प्रस्ताव थी ॥ १० ॥

अणन्दे बिना विचार रे, संथारो कीधो सही ।
चौविहार चित्त धार रे, गाम विठौरै पूज्य गण ॥ ११ ॥

उपनी तृषा अपार रे, सतरै दिन सूं निसस्यो ।
सेणा करै संथार रे, तिण सूं पहलां तोल ने ॥ १२ ॥

पनजी छुटक पेख रे, संतोकचन्द शिवराम ने ।

चन्द्रभाणजी देख रे, दोनूं मणी फंटाविया ॥ १३ ॥
केई पोते हुवा न्यार रे, केइकां ने दूरा किया ।
अपछन्दा अवधार रे, त्यांने चारित्र दोह्लो ॥ १४ ॥

॥ ढाल ५६ मी ॥

(करकसा चार मिली० ए देशी)

नोत निपुण नम्रजी नो निर्मल, कुड़यां ना वसवान। संथारो कर कारज सास्यो, कियो जनम किल्याण ॥ सुवनीत शिष्य आय मिल्या। धन्य २ हो भिक्खु थांरा भाग्य, सुखदाई शिष्य आय मिल्यां ॥ १ ॥ स्वाम राम बुन्दी ना वासी, जाति श्रावकी जाण। जुगल जोडले दोनूं जाया, सोम्य भद्र सुविहाण ॥ सु० ॥ २ ॥ करि मनसोबो आया कैलवे, पूज भिक्खु पै ताम। आज्ञा रास भणी आपी ने, संजम दिरायो स्वाम ॥ ३ ॥ इह अवसर में श्रीजी द्वारे, साह भोपो सुत सार। नाम खेतसी निर्मल नीको, थयो संजम ने त्यार ॥ ४ ॥ दोय व्याह पहिली कर दीधा, तीजो करता त्यार। उत्तम जीव खेतसी अधिको, इणरे वंछा न लिगार ॥ ५ ॥ वहिन दोय रावलियां व्याही, जाय तिहां किण वार। बेन बनोई न्यातीलां ने, समझावै सुखकार ॥ ६ ॥ विणज करत मुख जयणा विध सूं, वर वैराग वधाय। चित्त चारित्र

लेवा चढ़तो, आज्ञा मांगी नहीं जाय ॥ ७ ॥ इसा विनोत तात ना अधिका, इतले तिण पुर मांहीं। संजम ले रंगुजी सती, सांभल्या भोपै साह ॥ ८ ॥ भोपो साह कहै खेतसी भणी रे, चिन्त तुझ लेण चरित्र। कहै खेतसी वेकर जोड़ी, मुझ मन अधिक पवित्र ॥ ६ ॥ आज्ञा हर्ष धरी ने आपी। वदै भोपो साह वाय। रंगुजी भेला करो रे, इणरा महोछव अधिकाय ॥ १० ॥ अड़तीसै संजम आदरियो, भिक्खु ऋष रे हाथ। विहार करी कोठारे आया, लारै तो चल गयो तात ॥ सु० ॥ ११ ॥ भिक्खु पूछ्यां सत जोगी भाखै, मन चिन्ता किम मोय। पहिली उवे अब आप मिलिया, पिय विरह पड्यो नहीं कोय ॥ सु० ॥ १२ ॥ परम विनीत खेतसी प्रगट्या, स्वाम भणी सुखकार। कार्य भलायां वेकर जोड़ी, तुर्त करण ने त्यार ॥ सु० ॥ १३ ॥ कोमल कठिन वचन करि भिक्खु, सीख दिये सुखकार। क्षान्ति हर्ष कर धरै खेतसी, तहत बचन तंतसार ॥ १४ ॥ हर्ष धरी रहै भिक्खु हाज़र, अन्तरंग प्रीत अपार। सेवकरी रिझाया स्वामी, सो जाण लिया तंतसार ॥ सु० ॥ १५ ॥ सतजुग सरिषा प्रकृत विनय सूं निमल सतजोगी नाम। गण आधार खेतसी गिरवो, सरायो भिक्खु

स्वाम ॥ सु० ॥ १६ ॥ सतजुगी चरित्र माहीं छै सगलो, विवरासुध विस्तार । इहां संक्षेप करी ने आख्यो, संत वर्णन मांहें सार ॥ सु० ॥ १७ ॥ पांच पांच ना पवर थोकड़ा, वर किया बोहलो वार । उत्कृष्टो तप दिवस अठारह, एकटंक उदक आगार ॥ सु० ॥ १८ ॥ उभा रहिवारी तपस्या अति, एक पहोर उन्मान । जे वहु वर्ष लग जाणज्यो रे, खेतसी जी गुणखाण ॥ सु० ॥ १६ ॥ सीत उष्ण मुनि सह्यो अधिको, सकल संघ सुखकार । स्वाम सतजुगी संभरयां रे, आवै हर्ष अपार ॥ सु० ॥ २० ॥ सतजुगी तणा प्रसंग थी रे, अधिक हुवो उपगार । बे वहिन भाणेजे चारित्र लीधो, ते आगे चलसी विस्तार ॥ सु० ॥ २१ ॥ वर्ष बावीस स्वामी नी सेवा, छेहड़ा लग सुविचार । भारीमालनी छेह लग भक्ती, आसरै वर्ष अठार ॥ सु० ॥ २२ ॥ संलेखणा छेहड़े करी सखरी, सखरोई संथार । भिक्खु भारीमाल पछै पर-भव में, असीये वर्ष उदार ॥ सु० ॥ २३ ॥ भिक्खु स्वाम प्रसाद थी रे, सतजुगी संजम भार । पछै स्वामजी संजम पच्चख्यो, ओ भिक्खु तणो उपगार ॥ सु० ॥ २४ ॥ भिक्खु भांज्या भ्रम घणारा भिक्खु भव-दधि पाज । भिक्खु दीपक भरत क्षेत्र में, जंगत

उद्धारण जिहाज ॥ सु० ॥ २५ ॥ भाग चले भिक्खु ऋष भारो, शिष्य मिलिया सुविनीत। भिक्खु याद आवै निशदिन मुझ, पर्म भिक्खु सूं प्रीत ॥सु०॥२६॥ पवर ढाल कही छयालीसमी, सतजुगी नो विस्तार। सेव करे स्वामी नी सखरी, जय जश करण उदार ॥ सु० ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

साम राम साधु सरल, संता ने सुखदाय।
भद्र प्रकृति भारी घणी, नीत निपुण नरमाय ॥ १ ॥
धर्म पैंसठे उणवास में, भिक्खु पाछे भाल।
पाली में परभव गया, निर्मल साम निहाल ॥ २ ॥
राम ऋषि रलियामणा, इन्दुगढ़ में आय।
चोला में चलता रह्या, सितरे वर्ष साय ॥ ३ ॥
देवगढ़ दीख्या ग्रही, संभुजी सुविचार।
वार २ शङ्का पड़ी, छोड़ दियो तिण वार ॥ ४ ॥
तो पिण गण वारे छतो, करे साधां नी सेव।
साध आहार आण्यां पछै, आप ल्यावै नित्यमेव ॥ ५ ॥
प्रीत मुनि थी अति पवर, मुनि जिण गाम मझार।
आवै दर्शण करण कुं, पिण शङ्का थी हुवो खुवार ॥ ६ ॥
संभजी थो गुजरात रो, चर्ण लियो चित्त चाहय।
शिरियारी में निकल्यो, दुधर व्रत दिखाय ॥ ७ ॥
तदनन्तर संजम लियो, घरल्या वोहरा जोय।
एक चालीसे आसरे, नाम नानजी सोय ॥ ८ ॥
स्याम भिक्खु पाछै सही, एकोतरे अवलोय।
तेला में चलता रह्या, धर्म ध्यान में जोय ॥ ९ ॥

॥ ढाल ४७ मीं ॥

(परम गुरु पूज्यजी मुझ प्यारा रे ए देशी)

नानजी पछै चरण निहालो रे. मुनि नेम मोटो गुणमालो रे। वासी रोयट नो सुविशालो ॥ हर्ष ऋष-राय ने नित्य वन्दो रे ॥ १ ॥ पवर चर्ण भिक्खु पासे पायो रे, संजम बहु वर्ष शोभायो रे। मुनि जिन शासन दीपायो ॥ भिक्खु शिष्य शोभता नित्य वन्दो रे ॥ २ ॥ शहर नैणवे कियो संथारो रे, पाम्या भवसायर नो पारो रे। ओ तो भिक्खु तणो उपगारो ॥ ३ ॥ तदनन्तर वर्ष चमालो रे, वेणीरामजी अधिक विशालो रे। निकलंक चरण चित्त निहालो ॥ ४ ॥ दीख्या भीखणजी स्वामी दीधी रे, वसवान वगड़ी रा प्रसिद्धि रे। मुनि गण माहिं शोभा लीधी ॥ ५ ॥ हुवो वेणीराम ऋषि नीको रे, प्रवल पण्डित चरचा-वादी तीखो रे। मुनि लियो सुजश नो टीको ॥६॥ वारु वाचत सखर बखाणो रे, सखर हेतु दृष्टान्त सुजाणो रे। भर्त में प्रगट्यो जिम भाणो ॥ ७ ॥ हद देशना में हुंशियारो रे, श्रोताने लागे अधिक सु प्यारो रे चित्त माहें पामे चमत्कारो ॥ ८ ॥ जाय मालव देश जमायो रे, खरडी सूं चरचा कर तायो रे। बहु जनने लिया समझायो ॥ ९ ॥ त्यांरी धाक

सूं पाखराड धूजै रे, वेणीराम केशरी जिम गूंजै रे। प्रगट हलुकर्मी प्रतिबुजे ॥ १० ॥ उत्पत्तिया है बुद्धि उदारो रे, समझाया घणा नरनारो रे। हुवो जिन शासण शिणगारो ॥ ११ ॥ घणा ने दियो संजम भारो रे, धर्म वृद्धि-मूर्त्त सुखकारो रे। ए तो भिक्खु तणो उपगारो ॥ १२ ॥ कीधो स्वाम भिक्खु पछै कालो रे, शहर चासटु में सुविशालो रे। संवत अठारह सितरे निहालो ॥ १३ ॥ भिक्खु तास्या घणां नरनारो रे, भवितारक भिक्खु विचारो रे। स्वामी जय जश करण श्रीकारो ॥१४॥ सैंतालीसमी ढाल सुहायो रे, भिक्खु शिष्य मोटा मुनिरायो रे। स्वाम संग पर्म सुख पायो ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

तिण अवसर कोटा तणा दौलतरामजी देख।
आया तसु टोला थकी, सन्त च्यार सुविशेष ॥ १ ॥

॥ सोरठा ॥

दोय रूपचन्द देख रे, वारु अप वर्द्धमानजी।
सूरतोजी संपेख रे, स्वाम गणे संजम लियो ॥ १ ॥
रूपचन्द वहुमान रे, छूटो तेह प्रयोग थी।
प्रकृति अजोग पिछाण रे सूरतो पिण छूटक थयो ॥२॥

॥ दोहा ॥

बड़ा सन्त वर्धमानजी, संजम सरल सुधार।
विचरत २ आविया, देश ढूंढाड़ मझार ॥ २ ॥
लूं रा कारण थी लियो, मारग में संथार।
सम्वत् अठारह पचावने, लीधो संजम भार ॥ ३ ॥
लघु रूपचन्द स्वामगण, माधोपुर रे मांहि।
अणशण रो धंधो कियो, वेणीरामजी पाहि ॥ ४ ॥
पछै प्रणाम कचा पड़्या, बोल्यो पहवां वाय।
हूं थांरे नहीं काम को, रज कांकरो थाय ॥ ५ ॥
इम कही ने अलगो थयो, काल कितो इम थाय।
एक चेलो कीधां पछै, आयो इन्द्रगढ़ मांय ॥ ६ ॥
शिष्य तज कही गृहस्थां भणी, तन्त सूत्र मुझ ताम।
भिक्खु ने वहिरावज्यो, मुझ गुरु भिक्खु स्वाम ॥ ७ ॥
इम कही साध पणो पचल, दियो संथारो ठाय।
पांच दिवस रे आसरे, परभव पहोंतो जाय ॥ ८ ॥

॥ सोरठा ॥

जति भेष ने जाण रे, मयारामजी मूकियो।
प्रत्यक्ष ही पहिछाण रे, भेषधारयां में आवियो ॥ ३ ॥
भेषधारी ने छंड रे, संजम लीधो स्वाम पै।
बहु वर्ष चरण सुमण्ड रे, निकल कालवादी थयो ॥४॥
विगतो नाम विचार रे, वासी बोरावड़ तणो।
संजम ले सुखकार रे, कर्म प्रभावे नीकल्यो ॥ ५ ॥

॥ ढाल ४८ मी ॥

(बाजोट पर नहीं बेसणो मुनि पग ऊपर पग मेंल० एदेशी)

तदनन्तर टूंगचनावासी, सुखजी नाम सुखकार। स्वाम भिक्खु पे संजम लीधो, आणी हर्ष अपार रा॥ भिक्खु स्वाम उजागर आपरा सुविनीत भला शिष्य जिन मार्ग जमायो रे॥ सुगुणा परम पूज रे, प्रसंग सुज्ञानी जयजश छायो रे॥ १॥ भिक्खु स्वाम पछै चौसठै कांई शहर देवगढ़ सार। अणशण कर आतम उजवालियो तो शुद्ध दश दिन संथार॥ २॥ वर्ष तेपने शिरियारी वासी, हेम आछा हद जाति। संजम स्वाम समाण्यो सुवर्णन, हेम नवरसे विख्यात॥ ३॥ उत्पत्तिया वुद्धि आगला, स्वामी हेम सखर सुविनीत। प्रवल वुद्धि पुन्य पोरसा, कांई पूर्ण पूज्य सूं प्रीत॥ ४॥ परम विनयवन्त परखिया, वारु वुद्धि भारी सुविचार। हद कियो सिंघाड़ो हेम नो, भारी ज्ञानी गुणारा भण्डार॥ ५॥ हेम सुनिर्मल हिया तणा, अरु हेम स्वामी हितकार। हेम सुमति ना सागरु, अरु हेम गुप्ति गुणाकार॥ ६॥ हेम दिसावान दीपतो, मुनि हेम मोटो महाभाग। हेम उजागर ओपतो, वर हेम हिये वैराग॥ ७॥ हेम इर्या धुनि ओपतो, गति जाणै चाल्यो गजराज। हेम गम्भीर

गहरा घणा, ओतो हेम गरीबनिवाज ॥ ८ ॥ हेम दया दिल में घणी, शुद्ध सत दत हेम सधीर। हेम शील माहीं रम रह्यो, बारु कर्म काटण वड़वीर ॥६॥ हेम संग रहित सुरतरु, कांई हेम मेरु जिम धीर। हेम चिन्तामणि सारीषो, ओ तो हेम जाणौ पर पीर ॥ १० ॥ सुन्दर मुद्रा हेमनी, अरु अतिशय कारी अेन। पेखत चित्त प्रसन्न हुवै, चित्त माहें पामै चैन ॥ ११ ॥ सम्वत् अठारह सै तेपने पछै, धर्म वृद्धि अधिकाय। वंक चूलिया में वार्ता, आतो प्रत्यत्त मिली इहां आय ॥ १२ ॥ बारह संत तो आगै हुंता कांई स्वाम भिक्खु पै सोय। हेम हुवा संत तेरमा, त्यां पछै न घटियो कोय ॥ १३ ॥ भाग वली भिक्खु तणो, शिष्य हेम हुवा वृद्धिकार। पाखण्डी पग मांडै नहीं, पड़ै हेमनी धाक अपार ॥ १४ ॥ चौथे आरे सांभल्या, एतो त्तमा शूरा अरिहन्त। प्रत्यत्त आरे पञ्चमे, एतो हेम सरीषा सन्त ॥ भि० ॥ १५ ॥ भिक्खु भारीमाल ऋषराय रे, वर्तारा में हेम वदीत। चर्चा वादी शूरमा, लिया घणा पाखण्ड्यां ने जीत ॥ भि० ॥ १६ ॥ घणा जणा ने संजम दियो, देश व्रत घणानें सुलम्भ। बहु भणाया पंडित किया, हेम जिन शासन रो थम्भ ॥ भि० ॥ १७ ॥ हेम नवरसा

में कह्यो, वर हेम तणुं विस्तार। ग्रंथ वधतो जाणने, इहां संक्षेप्यो अधिकार ॥ भि० ॥ १८ ॥ भारी माल चलियां पछै, ऋषराय तणे वर्तार। उगणीसें चौके समै, शिरियारी में सन्थार ॥ भि० ॥ १६ ॥ भाग प्रबल भिक्खु तणा, हुवा सन्त शासण शिणगार। हेम गजेन्द्र समो गुणी, वलि आखूं अवर अणगार ॥ भि० ॥ २० ॥ आठ चालीसमी शोभतो, आखी ढाल रसाल अपार। स्वाम भिक्खु गण सुर तरु, ओ तो जय जश करण उदार ॥ भि० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

तदनन्तर तपसी भलो, वर चपलोत विचार।
वासी केलवा नो पवर, उदैराम अधिकार ॥ १ ॥
पचावने पाली मझे, पूज भीखणजी पास।
श्रावण में संजम लियो, अधिको धर्म उजास ॥ २ ॥
अति उमंग तप आदर्‌यो, वर आंबल वर्द्धवान।
बयालीस ओली लगे, चढ़ओज चढ़ते ध्यान ॥ ३ ॥
अवर तप कीधो अधिक, छठ २ आदि विचार।
आठ सौ इकतालीस आसरे, आंबल किया उदार ॥४॥
साठि स्वाम पछे सही, सखरो कर संथार।
चेलावास चलतो रह्यो, भारीमाल उतार्‌यो पार ॥५॥

सोरठा ।

तदनन्तर तिणवार रे, खुशालजी संजम लियो।
प्रकृति कठिण अपार रे, कर्म जोग थी नीकल्यो ॥ १ ॥

ओटो जाति सोनार रे, वासी खारचिया तणो ।
स्वाम कने समाचार रे, आय कहे इद रीत सूं ॥ २ ॥
थति कायो हुवो बाप रे, आज्ञा दो मुझ इण परै ।
तू मुझ क्यूं दे ताप रे, कर तुझ दाय आवे जिसो ॥३॥
म्हारी कानो सूं जाण रे, जोगी जति के ढूंढ़ियो ।
इम नर सुणतां कहि वाण रे, स्वामी तब संजम दियो ॥४॥
प्रकृति तणे प्रताप रे, संजम पालणो दोहिलो ।
कठिण परीषाह ताप रे, छूटो ते तत्र छिनक में ॥ ५ ॥
नाथो जी पोरवाल रे, वासी देसुरी तणो ।
सुत गृह छांडी सार रे, संजम सतरे स्वाम पे ॥ ६ ॥
जीभा लोलपी जाण रे, मुनि बांधी मर्याद ने ।
छूटो तेह पिछाण रे, पिण श्रद्धा सनमुख रह्यो ॥ ७ ॥

॥ ढाल ४६ मी ॥

(जै जै जै गणपति रे नमूं एदेशी)

समत अठारै वर्ष सतावने, गाम रावलियां गुणिये । लघु वेस अपराय दीख्या ली, थिर चित्त सेती थुणिये, जै जै जै गणपति रे नमुं ॥ १ ॥ बंध जाति चतुरो साह सुतवर नाम रायचन्द नीको । वर्ष इग्यारह आसरे वर्ष में, संजम सखर सधीको ॥ जै० ॥ २ ॥ हथिणी होदे हर्ष हुओ अति, मातु कुशालां वारु । साथे संजम पूज समाप्यो, चैत्री पुनम चारु ॥ जै० ॥ ३ ॥ प्रबल बुद्धि गुण पुन्य पेखने, पर्म पूज फरमायो । पद लायक ए पुन्य पोरसो,

वचनामृत वरसायो ॥ ४ ॥ दिशावान ऋषराय दीपतो, भाग्य वली बुद्धि भारी। हस्तमुखो मूर्त्ति हद हर्षत, पेखत मुद्रा प्यारी ॥ ५ ॥ पाट तीजे आगुंच परूप्या, स्वाम वचन सुखदाया। जम्बू स्वाम जैसा जैवन्ता, जाभा ठाठ जमाया ॥ ६ ॥ अन्तकाल भिक्खु ने अधिको, साझ संखर सुखदाया। भारी माल रे पास भुजागल, रायचन्द ऋषराया ॥ ७ ॥ गुणंतरे वर्ष भारीमाल नी, आज्ञा ले अगवाणी। प्रथम शिष्य ऋष जीत कियो, निज पाट लायक सुविहाणी ॥ ८ ॥ भारीमाल ने साझ दियो अति, अन्त समय अधिकायो। आप ओजागर अधिक अनोपम, दीन दयाल दीपायो ॥ ९ ॥ तस उपगार तणो वर्णन, करतां अति ग्रंथ वधियो। भिक्खु तणो सम्बन्ध इहां, तिण कारण संखेपियो ॥ १० ॥ संसारी लेखे मामा सतजुगी महा मतिवन्ता। भल भाणेज रायचन्द भणिये, जशधारी जैवंता। भिक्खु ऋष अति भाग वली, शिष्य मिलिया रायचन्द नीका। गिरवा गहर गंभीर गुणागर, पूज्य प्रथम ही परीखा ॥ १२ ॥ वहु वर्षां लग मार्ग नी वृद्धि, जिन जी आगुं जाणी। भिक्खु रे अति भागवली, ऋष-राय मिल्या शिष्य आणी ॥ १३ ॥ ऐसा भिक्खु

आग उजागर, शिष्य पिण मिल्या सरीखा। तस पग छेहड़े सन्त हुवा ते, सांभलिये सुबुद्धिका ॥ १४ ॥ ए गुणपचासमी ढाल अनुपम, मिल्यो सन्त मन मान्यो। कहिये धर्म वृद्धि नो कारण, जय जश कर्ण सुजाणयो ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

समत अठारे सतावने, जेठे मास में जोय।
पिता पुत्र घर चरण पद, हरं बगो अति होय ॥ १ ॥
ताराचन्दजी तात सुत, डूंगरसी महामण्ड।
पिता भार्या परहरी, सुतन सगाई छण्ड ॥ २ ॥
वड वैरागी सन्त बिहुं, सखरो कर संथार।
भिक्खु स्वाम पछै उभय, समचित्त जन्म सुधार ॥३॥
अणशण इकतालीस दिन, ताराचन्द उवेख।
दश दिन अणशण दीपतो, डूंगरसी ने देख ॥ ४ ॥
तदनन्तर संजम लियो, वरल्या वोहरा ताहि।
जोवो मुनि तासोल नो, महा मोटो मुनिराय ॥ ५ ॥
सरल भद्र प्रकृति सखर, तीन गाढ नी ताम।
सेव करी साचे मने, पुन सुरालय में धाम ॥ ६ ॥
भिक्खु भारीमाल पाछे भलो, नेउए वर्षे निहाल।
गोघुंदे अणशण गुणी, महा मुनि गुणमाल ॥ ७ ॥

॥ ढाल ५० मी ॥

(चेत चतुर नर कहै तने सतगुरु परदेशी)

जोगीदासजी स्वामी जोरावर, तदनन्तर त्रिया त्यागी। स्वाम भीखणजी संजम दीधो, वाल

पणौ वड़ वैरागी। भ्रम छांड भिक्खु शिष्य भजले, तज मिथ्या मति तालंदा। कर्म जाल कोटो करणी कर, पर्म ज्ञान पर्मानन्दा ॥ १ ॥ शहर केलवा रा वासी शुद्ध, जोगीदास साचा जोगी। सखर सोभागी ममता त्यागी, भल सुमति पिण नहीं भोगी ॥ २ ॥ अल्प काल में अचाण चकरो, शहर पीसांगण में सुणियो। चौविहार संथारो चोखो, थिर चित्त सूं मुनिवर थुणियो ॥ ३ ॥ गुणसठे वर्ष मुनि गुणवंतो, पूज्य छतां परभव पहुंतो। आत्म तास्यो जन्म सुधास्यो हिये निर्मल ऋषराज हुंतो ॥ ४ ॥ तदनन्तर जोधो मारु ते, गाम केरड़ा ना गुणियो। स्वाम भिक्खु स्वहथ संजम शुद्ध, भारी तपसी तप भणियो ॥ ५ ॥ अढी मास तप आछ आगारे, तप उतकृष्ट पणो तपियो। सरल भद्र मुनिवर सौभागो, जाप विविध तन मन जपियो ॥६॥ दिन अड़तीस कोचले दीप्यो, संथारो सखरो सुणियो। स्वाम पछै परभव सुमति शुद्ध, जोधो धन माता जणियो ॥७॥ शहर खेरवा रा भगजी शुद्ध, वर आज्ञा दे वहिन वड़ी। संजम भिक्खु स्वाम समाप्यो, सखर विनय थी शोभ चढ़ी ॥ ८ ॥ जाति वैद मूंहता जश धारी, भगजी भक्ति करी भारी। भिक्खु भारीमाल ऋषराय तणी भल,

पेखत ही मुद्रा प्यारी ॥ ९ ॥ ऋपराय तणे वरतारे रूड़ो, पंडित मरण मुनि पायो। निनाणुवे आतम ने निन्दी, शुद्ध परिणामे शोभायो ॥ १० ॥

सोरठा ।

जोगड़ जाति सुजाण रे, वासी बीदासर तणुं ।
पूज समीप पिछाण रे, भागचन्द आवी करी ॥ १ ॥
चारु गुणसठे वासरे, चारित्र धारो चूंप सूं ।
वर्ष कितेक विमास रे, कर्म जोग थी नीकल्यो ॥ २ ॥
चन्द्रभाणजी माहिं रे, रह्यो पञ्च मास आसरे ।
भारीमाल पै आय रे, कहै मुझ ने ल्यो गण मझे ॥३॥
हूं रह्यो चन्द्रभाण माहिं रे, त्यांने साध न श्रद्धियो ।
थे मोटा मुनिराय रे, साधु श्रद्धतो स्वाम गण ॥ ४ ॥
भारीमाल ऋपराय रे, छेद दियो पटमास रो ।
लियो तास गण माहिं रे, अवलोकी भिक्खु लिखत ॥५॥
आपां मांहिलो जाण रे, जाय चन्द्रभाणजी मझे ।
अल्पकाल पहिछाण रे, आहार पाणी भेलो करै ॥६॥
पिण आपां ने साध रे, श्रद्धे शुद्ध मन सूं सही ।
श्रद्धे तास असाध रे, नवी दीख्या देणी न तसु ॥ ७ ॥
यथायोग दण्ड जाण रे, दे लेणुं तसु गण मझे ।
वर्ष सैंतीसे थाण रे, लिखत भिक्खु ऋप नो कियो ॥८॥
एहवो लिखत अवलोक रे, नवी दीख्या दीधी न तसु ।
छेद दे मेट्यो दोप रे, भारीमाल व्यवहार थी ॥ ९ ॥
पासत्था पास पिछाण रे, आहार आद लेवै देवै तसु ।
निशीथ वीस में जाण रे, डंड चौमासी दाखियो ॥१०॥
चौमासी डंड स्थान रे, वार वार सेव्यां छतां ।
व्यवहार प्रथम कही वाण रे, चौमासी प्राछित तसु ॥११॥

इम बहु न्याय विचार रे, वलि मर्याद् विमास नें।
याम देख व्यवहार रे, छेद देई माहें लियो ॥ १२ ॥
बीत्यो कितोयक काल रे, फिर छुटक थयो एकलो।
इक शिष्य कीधो न्हाल रे, नाम भवानजी तेहनो ॥१३॥
डण्ड ले आया माहिं रे, तपनो अभिग्रह आदस्रो।
नायो पालणी ताहि रे, तिण कारण थयो एकलो ॥ १४ ॥
काल केतोक वदीत रे, फिर आयो भारीमाल पै।
सन्त सत्यां ने सुरीत रे, कर जोड़ी वंदना करी ॥ १५ ॥
बोले वेकर जोड़ रे, मुझ ने लेवो गण मझे।
अढ़ी द्वीप ना चोर रे, त्यां सूं हूं अधिको घणो ॥१६॥
छठ २ तप पहिछाण रे, जावजीव अदराय दो।
कहो तो करूं संथार रे, पिण मुझ ने ल्यो गण मझे ॥१७॥
भारीमाल बहु जाण रे, दीख्या दे माहिं लियो।
संवत अठारै पिछाण रे, एकोतरे वर्ण आंदस्रो ॥ १८ ॥
मास खमण बहु वार रे, विकट तप मुनिवर कियो।
सन्ताणुवे सुखकार रे, जन्म सुधारी यश लियो ॥ १९ ॥

॥ ढाल तेहिज ॥

भारी तपसी भोप हुवो भल, कोसीथल वासी कहियो, जाति तणो चपलोत जाणिजै, लाभ खाम हाथे लहियो ॥ ११ ॥ पाली में संजम ले प्रत्यच, मुनि तपस्या करवा मंडियो। कबहिक छासठ कबहिक अड़सठ* चढ़त २ अधिको चढ़ियो ॥ १२॥ कदहिक

*नोट—मूल प्रत में 'अठावन' ऐसा पाठ है किन्तु गाथे के चतुर्थ चरणके भाव से 'अड़सठ' ही ठीक जंचता है तथा प्रथमावृत्ति में भी 'अड़सठ' ही छपा हुआ था। इस लिये अड़सठ रक्खा गया है। —संशोधक

चार मास में कीधा, सतर पारणा सुमति सहु। ग्रन्थ बहुल भय तप वर्णन गुण, तिण कारण सहु ते न कहूं ॥ १३ ॥ साढ़ी चार पहोर संथारो, स्वाम पछै शुद्ध गति सारु। पाली धर्म उद्योत प्रगट हद, वर्ष छासठे मुनि वारु ॥ १४ ॥ मुनि महिमागर अधिक उजागर, गुण सागर नागर ज्ञानी। वचन सुधा वागर धर्म जागर, धर्म धुनि धर, महा ध्यानी ॥ १५ ॥ अञ्जन मञ्जन चन्दन अञ्जन, शिव शञ्जन रञ्जन साधी। भ्रम भञ्जन भिक्खु गुरु भेटी, अरि गञ्जन मति आराधी ॥ १६ ॥ स्वाम शरण सुख करण तरण शुद्ध, तम भ्रम हरण स्वाम तरणी। शिव वधू वरण धरण दुधर सम, कहा कहूं मुनि नी करणी ॥ १७ ॥ सुर गिर धीर गंभीर समीर, सदा सुख सीर सुतार सजै। तोड़ जंजीर वीर वड़ तुम हो, ऋष भिक्खु गुण हीर रजै ॥ १८ ॥ पर्म प्रतीत रीत प्रभु वच से, लोक वदीत अनीत लजै। ज्ञान संगीत नीत हद गुणियण, भल भिक्खु ऋष जीत भजै ॥ १९ ॥ वाण विमल अति निमल कमल वर, जमल अमल शिव मग जाणी। समल तमल मिथ्या मति सोषी, आप सुर्ति अघदल आणी ॥ २० ॥ आप तणै प्रसाद अनोपम, तंत मुनीश्वर बहु तरिया। आप सुरतरु आप गुणो दधि

आप घणा ना अघ हरिया ॥ २१ ॥ समरण स्वाम तणो नित साधूं. स्वाम तणो मुझ नित शरणो। आशा पूरण स्वाम अनोपम, निर्मल चित्त कीधो निरणो ॥ २२ ॥ सखरा स्वाम मुनि गुण साचा, म्हे संक्षेप थकी गुणिया। जल सागर किम झाले गागर, गुण अनन्त अथग अनघ गुणिया ॥ २३ ॥ निर्मल पचासमी ढाल निहाली, भल भिक्खु गुण सूं भरिया। जय जश सम्पति करण जाणजो, इण खण्ड भिक्खु अवतरिया ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

अड़तालीस मुनि अख्या, पूज छतां पहिचाण।
चारित्र लीधो चित्त धरी, उज्झम अधिको आण ॥१॥
अठवीस गण में सही, सखर रह्या सुजगीस।
गुरु छन्दे गिरवा गुणी, अलग रह्या छै वीस ॥ २ ॥
वीसां मांहे एक वर, रूपचन्द शुद्ध रीत।
छेहड़े अणशण चर्ण लिये, पूज आण प्रतीत ॥ ३ ॥
पूज थकां चारित्र प्रगट, अब सतियां अधिकार।
कैईक बारै नीकली, पहोंती कैईक पार ॥ ४ ॥
एक साथ व्रत आदर्या, तीन जण्यां तिण वार।
कुशलां जी वड़ी करी, कुशल क्षेम अवतार ॥ ५ ॥

॥ ढाल ५१ मी ॥

(खम्यावन्त जोय भगवन्त रो ज्ञान पदेशी)

पवर चरण शुद्ध पालताजी, कुशलांजीने विचार।

दोघं पृष्ठ गुदोच में जी, ते डंसियो तिणवार ॥ खिम्यावंत धिन सतियां अवतार ॥ १ ॥ जन्त्र मन्त्र झाड़ा भणी जी, वंछयो नहीं तिण वार । शुद्ध परिणामे महासती जो, पोंहती पर लोक मझार ॥ २ ॥ मटूजी मोटी सती जी, स्वाम आण शिर धार । पद आराधक पामियोजी, ओ भिक्खु नो उपगार ॥ ३ ॥

॥ सोरठा ॥

अजबू प्रकृति अजोग रे, कर्म जोग सूं नीकली ।
प्रकृति कठिण प्रयोग रे, चारित्र खोवे छिनक में ॥ १ ॥

ढाल तेहिज ।

नाम सुजाणा निरमलीजी, देऊजी दीपाय । स्वाम तणे गण में सही जी, परभव पोंहती जाय ॥ ४ ॥

॥ सोरठा ॥

तदनन्तर तिण वार रे, साधुपणो लीधो सही ।
नेउ नाम निहाल रे, कर्म प्रयोगे नीकली ॥ २ ॥

ढाल तेहिज ।

सती गुमाना शोभती जी, संजम वर संथार । इमज कसूंवाजी अखी जी, अणशण अधिक उदार ॥ ५ ॥ जोऊजी वले जाणिये जी, स्वाम तणे गण सार । पोते वहु सुत परहरी जी, वासी रीयां रा विचार ॥ ६ ॥

काल कितेक पछै कियो जी, शहर पीपाड संथार।
इगताली खंडी ओपती जी, मांडी करी तिवार ॥ ७ ॥

॥ सोरठा ॥

फतू अखूजी न्हाल रे, अजबू चंदूजी अजा।
भेषधारयां में भाल रे, पछै चर्ण लियो पूज पै ॥ १ ॥
समत अठारै सोय रे, वर्ष तेंतीसे वारता।
लिखत करी अवलोय रे, मुनि लीधी टोला मझे ॥ ४ ॥
आप मते अवधार रे, मन छन्दे रही मोकली।
अति तसु कठिण अपार रे, छांदे गुरां रे चालणो ॥ ५ ॥
अशुद्ध प्रकृति अविनीत रे, सुमते जाणो स्वामजी।
शिष्य भिक्खु शुद्ध रीत रे, तन्तु भाख्यो तेहने ॥ ६ ॥
तुझ ने कल्पे तेह रे, ते तन्तु लेवो तुम्हे।
इम कही कपड़ो देह रे, फतु आदि पांचां भणी ॥ ७ ॥
पूछ्यो तास प्रमाण रे, कहै मुझ अधिको को नहीं।
पूज करै पहिछान रे, निसुणो निरणय निर्मलो ॥ ८ ॥
अखेराम अणगार रे, मेल्यो कपड़ो मापवा।
तस थानक तिणवार रे, माप्यां अधिको नीकल्यो ॥९॥
इम तन्तु अति राख रे, झूठ बोली बले जाणने।
शुद्ध नहीं संजम साख रे, नीत चरण पालण तणी ॥१०॥
च्यारूं ते पहिछान रे, दीशा मेली पंचमी।
यां पांचूं ने जाण रे, छोड़ी चंडावल मझे ॥ ११ ॥

मेणाजी मोटो सती जी, वासी पुरना विचार।
स्वाम कने संजम लियो जी, छांडो निज भरतार ॥८॥
पढ़ी भणी पंडित थई जी, बहु सूत्रां नी रे जाण।
साठे संथारो करेजी, कीधो जन्म किल्याण ॥ ६ ॥

॥ सोरठा ॥

धनू केलीजी धार रे, रत्तू नन्दूजी वली ।
माढां गाम मझार रे, छोड़ी यां च्यारां भणी ॥ १२ ॥

ढाल तेहिज ।

रंगूजी रलियामणाजी, ओजीद्वारा ना सार। पोरवाल प्रगट पणे जी, संजम लियो सुखकार॥ अड़तीसे व्रत आदस्यो जी स्वाम खेतसी रे साथ। शिरियारी चलता रह्या जी, वारु भणी विख्यात ॥११॥ सदांजी मोटी सतीजी, तलेसरा तंत सार। श्री जी द्वारनां सहोजी, सखर कियो संथार ॥ १२॥ सुत बहु तज संजम लियोजी, कंटाल्या ना कहिवाय। अणशण लोढोती मझेजी, फूलांजी सुखदाय ॥ १३ ॥ उत्तम अमरां आर्यांजी, स्वाम तणे उपगार। जीतव जन्म सुधारियोजी, सखरो कर संथार ॥ १४ ॥ ढाल एक पचासमी जी, भिक्खु ने गण भाल। वड़ी २ सतियां हुई जी। वारु गण सुविशाल ॥ १५ ॥

॥ सोरठा ॥

रत्तू ले चारित्र रै, छूटी खोयो वर्ण नै।
पाली माहिं पवित्र रै, पछै संथारो पचखियो ॥ १ ॥
उपाय किया अनेक रै, भेषधारयां लेवा भणी।
तो पिण राखी टेक रे, त्यां मांहे तो ना गई ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

शुद्ध चित्त सूं तेजु सती, पोरवाल पहिछाण ।
वासी ढोल कंथोल रा । संजम लियो सुजाण ॥ ३ ॥
काल कितेक पछे कियो, संथारो सुविहाण ।
दिवस बेयाली दीपतो, कीधो जन्म किलयाण ॥ ४ ॥

॥ सोरठा ॥

वनांजी सुविचार रे, संजम लीधो शुद्ध मने ।
कर्मां करी खुवार रे, टोला सूं न्यारी टली ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

वगतुजी बगड़ी तणा, वर कुल जाति सवेत ।
हीरां हीर कणी जिसी, भारीमाल ना नेत ॥ ६ ॥
नाम नगी गुण निर्मली, वैणीरामजी री वहेन ।
एक दीवस तीनूं अजा, चर्ण धार चित चेन ॥ ७ ॥
चौमालीसे वर्ष स्वामजी, संजम दे इक साथ ।
सूंप्या रंगुजी भणी, वारु जश विख्यात ॥ ८ ॥
ए तीनूं भिक्खु पछे, संथारा कर सार ।
महियल मोटी महासती, पामी भवनो पार ॥ ९ ॥
सरूप भीम ऋष जीत नी ऊजनू भुवा सुजोग ।
चौमाले श्रासो चर्ण, अठासीये परलोग ।
शिरियारी ना महासती, पन्नाजी पहिचाण ।
संजम पाल्यो स्वाम गण, संथारो सुविहाण ॥ ११ ॥

॥ सोरठा ॥

काफोली री कहाय रे, लालांजी संजम लियो ।
परवश सीत सुपाय रे, इण कारण गृह आविया ॥ १ ॥

बहु चर्चा सुविचार रे, श्रावक धर्मज साझियो ।
तप जप कियो उद्दार रे, फिर चारित्र नहीं पचखियो ॥१३॥

॥ ढाल ५२ मीं ॥

(ज्यांरा इन्द्र चन्द्र रखवाला एदेशी)

गुमाना महा गुणवन्ती, तासोल तणी चित्त शान्ति । जीत्रा मुनि री वड़ी मा जाणो, सती संजम लियो सुखदाणी हो लाल ॥ सतियां नामज मोटी ॥१॥ एक मास कियो अति भारी, दोय मास छेहड़े दिलधारी । शुद्ध राजनगर संथारो, सती सरल भद्र सुखकारो हो ॥ २ ॥ वर शहर बुन्दी रा वासी, बारु श्रावगी कुल सुविमासी । खेरवे संथारो खन्ती, खेमा जी खेम करन्ती हो ॥ ३ ॥

॥ सोरठा ॥

जूं परीषह थी जाण रे छूटी जसु छिनक में ।
चोखी टली पिछाण रे, फांकोली री विहुं कही ॥ १ ॥

ढाल तेहिज ।

सतजुगी री बहिन सुखवासी, ऋष रायचन्दजी री मासी । पिउ पुत्र तज्या पहिछाणी, रूपांजी महा-रलियामणी हो ॥ ४ ॥ संजम बावने सधीको, सता-वने संथारो नीको । खुशालांजी री लघु बहिन कहिये, रूपांजी जग यश लहिये हो ॥ ५ ॥ रूपांजी कंटाल्ये

संथारो, अग्रवाल जाति अवधारो। माधोपुर ना वसवानो, सुत तीन तज्या व्रत ध्यानो हो ॥ ६ ॥ वरजूजी वदीत विमासी, रूड़ी शील गुणा री रासी। तिण रो भिक्खु तोल वधायो, सती सुयश शासण में पायो हो ॥ ७ ॥ वीजांजी महा वृद्धकारी, धर चरण शील सुखकारी। करड़ो तप छेहड़े कीधो, सती जग माहें यश लीधो हो ॥८॥ वनाजी सुविनयवन्ती, शुद्ध चरण पालण चित्त शान्ति। सुखदायक गण सुविशाली. सती आतम ने उजवाली हो ॥ ६ ॥ शुद्ध यां तीना ने सिख्या, दीधी भिक्खु एक दिन दीख्या। सखरो छेहड़े संथारो, समणी हद मुद्रा सारो हो ॥ १० ॥

॥ सोरठा ॥

वीरां जाति कुमार रे, संजम लीधो स्वाम पे।
प्रकृति अशुद्ध अपार रे, तिण कारण गण सूं टली ॥२॥

ढाल तेहिज।

उदांजी उद्यमवंती, सती जाति सोनार सोहंती। बहु वर्ष चरण सुविचारो, आंचेट माहें संथारो हो ॥ ११ ॥ झूमांजी जाति पोरवाल, श्रीजी द्वारा ना सार। छपने वर्ष संजम लीधो, स्वाम पछे संथारो सिद्धो हो ॥ १२ ॥ वर्ष सतावने सुविचारो, ऋषराय चरण हित-

कारो। तिण बहुत हुवो उपगारो, तिणरो सांभल जो विस्तारो हो ॥ १३ ॥ संसार लेखे शोभाया, लख पती व्होड़े सजनाया। मतिवन्त हस्तु महिं मंडी, लीधो चरण पिउ सुत छंडी हो ॥ १४ ॥ दुःख घरका बहुलो दीधो, सती अडिग पणे व्रत लीधो। सताणुवै लाहवे संथारो, हस्तु गुण ज्ञान भंडारो हो ॥१५॥ कुशलांजी रावलियां रा कहिये, सतजुगी री बहिन व्रत लहिये। ऋषरायचन्दजी नी माता, संजम ले पामी साता। ओतो जिन शासन में सुखदाता हो ॥ १६ ॥ भल हस्तुजीनी भन्नो, सती कस्तुरांजी शुभ लन्नो। सुत पिउ छाड़ व्रत धारो, सतंतरे उजैण संथारो हो ॥ १७ ॥ व्हात्रा थी संजम लीधो, पिउ छांड़ पर्म रस पीधो। गणी बुद्धि अकल गुणवन्ती, जोतांजी महा जशवन्ती हो ॥ १८ ॥ शिरियारी रा सुमगन में, छोड्यो पिउ सती तिण छिन में। संथारो बहुतरे सिद्धो, नोरांजी जग जश लीधो हो ॥ १९ ॥ शुद्ध एक वर्ष में शिक्षा, दुर्गति तज लीधी दीक्षा, पांचां ही पिउ ने छंडी, त्यांरी प्रीत मुक्ति सूं मंडी हो ला० ॥ २० ॥ गुणसठे वर्ष गुणवंन्ती, बहु चरण धार बुद्धिवंती। त्यांमें तीन जणयां एक साथे, हद दीक्षा भिक्खु ने हाथे हो ॥ २१ ॥ कुशलांजो नाथां

जो बीजांजी, पाली ना तिहुं भ्रम भांजी। तीनूं शीलामृत कूंपी, दीख्या देई व्रजुजी ने सूंपीहो ॥ २२ ॥ सतंतरे कुशलांजी संथारो, भारीमाल भेला सुविचारो। माधोपुर मास कार्तिक में, परलोके पोंहता छिनक में हो ॥ २३ ॥ नाथांजी गाम जसोल न्हाली, वर संथारो सुविशाली। संसार लेखे ऋद्धि वंती, समणी शुद्ध प्रकृति सोहंती हो ॥ २४ ॥ तप दिवस बतीस सु तपियो, जिन जाप बीजांजी जपियो। तीन दिवस तणो सन्थारो, वर्ष छियासीये अवधारो हो ॥ २५ ॥ सरूप भीम जीत बा ताखो, कलुवें काकी कहिवायो। गुणसठे दीक्षा गुणवंती, गोमांजी नेवुये पार पहोंती हो ॥ २६ ॥ जशोदा खेरवा निवासी, डाहीजी नोजांजी विमासी। संजम भिक्खु छतां सारो, बहु वर्ष पाछै संथारो हो ॥२७॥ ए स्वाम तणो गण सारु, छपन गण चर्ण प्रकारु। सतरे छुटक हुई अज्जा, छोड़ी लोकिक लोकोत्तर लज्जा हो ॥२८॥ रही गुणचालीस गण राची, पिउ छांड़ सात व्रत जाची। दोय बहिन भायां रा जोड़ा, सतजोगी वेणीराम सु होडा हो ॥२९॥ ऋष रायचन्द मा साथे, संजम लीधो पूज हाथे। आख्यो समणी नो अधिकारो, ओ तो भिक्खु तणो उपगारो हो ॥ ३० ॥ आगे

संत कह्या अड़ताली, अजा छपन इहां भाली। सहु थया एक सौ चार, स्वामी गण लीधो चर्ण सुख कार हो ॥ ३१ ॥ वीस सतरे गण वारी, अठवीस गुण चालीस सुधारी। वीसां में रूपचन्द शुद्ध रीत, राखी स्वाम तणी प्रतीत हो ॥ ३२ ॥

छन्द भुजंगी।

थया सन्त मोटा वड़ा सु थिरपालं १ भलूं नन्द नीको फतेचन्द भालं २। विनयवंत धाठ सु टोकर.विशालं ३ निजानंदकारी हरनाथ न्हालं ४ ॥१॥ भला धर्म धोरी मुनी भारीमालं ५ चल्या आप चारु वड़ा नो सुचालं। अवै स्यान काजे अखैराम आछा ६ सदानन्दकारी सुखराम साचा ७ ॥ २ ॥ शिवानन्द सारु शिवो स्वाम शीशं ८ नगो स्वाम नीको नगेन्द्र नमीशं ६ भला स्वामजी सन्त हुवा सुभारी १० सही खेतसी जी सदा शान्तिकारी ११ ॥३॥ अभिराम रुड़ो भिक्खु शीश राजे १२। वलि नान जी स्वामी स्वामी विराजै १३ ॥ ४ ॥ निभे नेम जाचा मुनि नेम नामं। वड़ो सन्त ज्ञानी भला वैणीरामं १५ ॥ ५ ॥ वलि सन्त मोटो वड़ो वर्द्ध-मानं १६। सुखो स्वाम साचो शुभ ध्यान सुहानं १७ ॥ ६ ॥ हुवां हेम जैसा सु हेमं हजारी १८। उदैराम आछो तपस्वी उदारी ॥ ७ ॥ ऋदि पाट थाप्यो मुनि रायचन्दं २०। दीपै तेज तीखो सुमेरु दिनन्दं २१ ॥८॥ भला सन्त तारासुचन्द्र भणीजे २१। गिरेन्द्र समो सन्त डूंगर गिणीजै २२ ॥ ६ ॥ जयो जीवराजं २३ अरु जोगीदासं २२। दमीश्वर जोधो तपे देह त्रासं २५ ॥ १० ॥ भगो नाम नीको भिक्खु शीश भारी २६। सही भागचन्द पछेहि सुधारी २७ ॥ ११ ॥ थयो मोप भारी तपे ध्यान थापी २८। पका संत शूरा भिक्खु ने प्रतापी ॥ १२ ॥ रह्या स्वाम आण धुरा छेह रुड़ा। सही फेटली ने थया फेर शूरा ॥ १३ ॥ आख्या सन्त नाम अठावीस आछा। जिकै जीव तासा भिक्खु स्वाम जाचा ॥१४॥

॥ छप्पय ॥

इसा भिक्खु अणगार, सार जिण मारग शोधी।
अधिक कियो उपगार, बहु भवि नै प्रतिबोधी॥
श्रमणी सन्त सुजाण, सखर कीधा सुखकारी।
परम धर्म पहिछाण, धुरा जिण आणा धारी॥
अरु देश व्रत धारक अधिक, नित्य कृत भजन नूं नामको।
सुख करण शरण इह जग सुयश, सखर भीखणजी स्वामको॥१॥

॥ दोहा ॥

अठ्तीस मुनिवर अख्या, सखरा गण शिणगार।
बीस थया गण बाहिरे, तास नाम अवधार॥ १॥
वीरभाण १ लिखमो २ वलि, अमरोजी ३ अभिधान।
तिलोक ४ मोजीरामजी ५, चन्द्रभाणजी ६ जान॥ २॥
अणंदोजी ७ पनजी ८ अख्या, सन्तोष ९ शिवजीराम १०।
शंभु ११ संघजी १२ रूपजी १३, लघुरूपजी नाम १४॥ ३॥
सुरतोजी १५ संघ सूं टल्यो, मयाराम १६ पहिछाण।
वीगतो १७ खुशालजी १८ वलि, ओटो १९ नाथू २० जाण॥४॥
केइका ने न्यारा किया, केइक टलिया आप।
अब कहिये छे आर्जिका, चतुर सुणो चुपचाप॥ ५॥

॥ छप्पय ॥

कुशलां १ मट्टु २ कहाय, सुजाणा ३ कहिये साची।
देउ ४ गुमाना ५ देख, कसुंबांजी ६ नहिं काची॥
जीऊ ७ मेणा ८ जहाज, रङ्गू ९ सदां १० फूलां ११ सुखकारी।
अमरां १२ तेजु १३ आण, वलि वगतु १४ वृद्ध कारी॥
हीरां हीर कणी जिसी १५, सती शिरोमणी शोभती।
निकलंक नगां १६ अजबू १७ निमल, महियल प मोटी सती॥१॥

पन्ना १८ सती पिछाण, गुमाना १९ खेमां २० गुणिये ।
रूपांजी २१ वर रीत, सरूपां २२ समणी सुणिये ॥
वरजु २३ वीजां २४ विशाल, वनां २५ उदां २६ हद चारु ।
झूमां २७ हस्तु २८ जिहाज, कुशालां २९ गण सुखकारु ॥
कस्तुरां ३० जेतांजी ३१ कही, शुद्ध संजम नीरां सजी ।
इक वर्ष माहि व्रत आदर्या, पांचूं यां प्रीतम तजी ॥ २ ॥
सखर खुशालां ३२ सती, पवर नाथां ३३ पुनवन्ती ।
विनय वीजां ३५ सुविनीत, घणूं गोमां ३६ गुणवन्ती ॥
वर्ण यशोदा ३७ चित्त, हिये माहीं ३८ हरषन्ती ।
नौजां निमल निहाल ३९, स्वाम आणा समरन्ती ॥
ए गुण चालीस अजा गण में अखी, एक सोनार सुजाणिये ।
कुलवन्त इतरी सतियां कही, वड़ो वैराग वखाणिये ॥३॥

॥ दोहा ॥

सतरे छुटक नाम तसु, अजवू १ नेतू २ ताय ।
वलि फतू ३ ने अनू ४, फिर अजवू ५ कहिवाय ॥१॥
चन्दूजी चैना ७ छुटक, धनु ८ फेली धार ९ ।
रत्तू १० नंदू ११ फिर रतु १२ वना १३ थई गण बार ॥२॥
लालां १४ परवश नीकली, जसु १५ चोखी १६ वीरां १७ जान ।
सतरे छुटक सांभली, गण गुण्याली सुज्ञान ॥ ३ ॥

॥ ढाल तेहिज ॥

भिक्खु हुवा उजागर भारी, हद करणी री वलिहारी । नित याद आवे मुझ मन, तन मन अति होय प्रसन्न हो ॥३३॥ सुमतागर शासण स्वामी, जशधर अन्तरजामी, सखरो कुण स्वामी सरषो, पूज गुण

सुखम द्दग परखो ॥ ३४ ॥ आशा पूरण आपो. जपूं आप तणुं नित जापो । पूर्ण मुझ आप सूं प्रीतं, निरमल शुद्ध आपरी नीतं ॥ ३५ ॥ कही ए बावनमी ढालं, वर जय जश करण विशालं । मोने भाग प्रमाणे मिलिया, मननाज मनोर्थ फलिया । मुंह मांग्या पासा ढलिया ॥ ३६ ॥ तीजो खण्ड कह्यो तहतीको, निर्मल भिक्खु गण नीको । शासण सुखदाय सधीको, जय जश वृद्धि शिव नो टीको हो लाल ॥ ३७ ॥ सोरठा २ गाथा ३७ ॥

कलश

मुनि सुगुण माला वर विशाला, सुमति पाल सुजाणिये । तम कुगति ताला भ्रम ज्वाला परम दयाल पिछाणिये ॥ सुख सद्म संत महंत सुन्दर भ्रान्त भंजन अति भलो, सुमति सुसागर अमल आगर निमल मुनि गण गुण निलो ॥ १ ॥

चतुर्थ खण्ड।

॥ सोरठा ॥

समरूं गोयम स्वाम रे, सुधर्म जम्बू आद मुनि।
चले भिक्खु गुरु नाम रे, चौथो खण्ड कहूं चूंप सूं ॥ १ ॥
मुरधर देश मेवाड रे, हाडोती ढूंढाड़ में।
थावा देशज चार रे, समचित विचरया स्वामजी ॥ २ ॥
गेरूलालजी व्यास रे, श्रावक तेरां मांहिलो।
ते कच्छ देशे गयो तास रे, टीकम ने समझावियो ॥ ३ ॥
टीकम डोसी आम रे, देश कच्छ में दीपतो।
तेपने गुणसठे ताम रे, पूज्य कने आयो प्रगट ॥ ४ ॥
प्रगट तेह प्रयोग रे. कच्छ देशे धर्म थापियो।
स्वाम तणे संजोग रे, जीव हजारां उद्धरया ॥ ५ ॥
चर्म कल्याण पिछाण रे, इण भव आश्री जाणजो।
सुणजो चतुर सुजाण रे पूज भिक्खु नों प्रगट हिव ॥६॥

॥ दोहा ॥

पांचूं इन्द्रयां परवरी, न पड़ी कांई हीण।
वृद्ध पणे पिण पूजनी, शीघ्र चाल शुभ चीन ॥ १ ॥
थाणे फठेई ना थया, उद्यमी अधिक अपार।
चारु चरचा करण चित, पूज तणे अति प्यार ॥ २ ॥
उठे गोचरी आप नित, अतिशय कारी एन।
पूज सुमुद्रा पेखतां, चित्त में पामैं चैन ॥ ३ ॥
छेहला २ गाम फर्शता, छेहलाई करत विहार।
चाणोद सूं पींपाड लग, विचरया स्वाम उदार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ५३ मी ॥

(सल्हा मारूनां गीतनी पदेशी)

भ्रम भय भंजन हो जन रंजन गुण जिहाज, सुमति सुमंडन स्वाम शोभाविया । कुमति विहंडन मिथ्या खण्डन काज, विचरत २ सोजत आविया ॥ १ ॥ चोहटे चारु हो छत्री छै सुविचार, आज्ञा लेई ने स्वामी तिहां उतर्या । जन मन हर्ष हो निरख्यो पूज्य दिदार, जाणै के श्रीजिन आप समवसर्या ॥२॥ दर्शण कारण हो धारण चर्चा बोल, संत सती बहु स्वाम पै आविया। आज्ञा लेवा हो चौमासा री अमोल, पर्म पूज्य पे आवी सुख पाविया ॥ ३ ॥ दम सम सागर हो स्वामी परम दयाल, भलाया चौमासा संत सत्यां भणी । एटले आयो हो हुकमचन्द आछो न्हाल, पूज दर्शण कर प्रीत पामी घणी ॥४॥ येकर जोड़ी हो मान मरोड़ी बोलंत, विविध विनय करिकर रह्यो विनती । स्वामो चौमासो शिरियारी करो संत, सुजती छै पकी हाट मुझ शोभती ॥ ५ ॥ गुण निधि ज्ञानी हो गिरवा आप गम्भीर, ऋषपति अर्ज करूं हूं रीत सूं । बारू वचने हो विनती कीधी वजीर, सुगरु प्रसन्न हुवै शिष्य सुविनीत सूं ॥ ६ ॥ स्वामी मानी हो विनती तसु सार, विहार करी ने बगड़ी

आविया। निर्मल चित्त सूं हो अर्ज करे नर नार, शहर कंटाल्ये बगड़ी सुशोभाविया ॥ ७ ॥ गति गयवर-सी हो इर्या धुन गुण जिहाज, प्रवर संतांकर मुनिवर परवस्था। प्रत्यक्ष कहिये हो ऋषि भव दधि नो पाज, शहर शरियारी में स्वाम समवसरया ॥ ८ ॥ शहर शरियारो हो शोभै कांठा नी कोर, दोलो मगरो गढ़ कोट ज्यूं दीपतो। जन बहु वस्तो हो महाजनारो जोर, जूना २ केई पुर भणो जोपतो ॥९॥ निर्भय नगरी हो ऋद्धि सम्रृद्धि निहोर, ज्यां धर्म ध्यान घणो तप जापनो। राज करै छे हो दौलतसिंह राठोड़ कूंपावत कहिये करड़ी छापनो ॥ १० ॥ तिहां मुनि आया हो सत ऋषि तंत सार, जय जश धर्ण कर्ण मन जोपता। स्वामी शोभे हो गण नायक सिरदार, दमीश्वर पूज्य भीखणजो दीपता ॥ ११ ॥ भरत क्षेत्र में हो भिक्खु साम्प्रत भाण, आज्ञा लेई ने पकी हाट उतरया। जन बहु हर्ष्या हो पूज पधारया जाण, धर्मानुराग करि तन मन भरया ॥ १२ ॥ वखाण वाणी में हो आगे वाण विशाल, थिर पद पूज भीखण जी थापियो। भार लायक हो शोभे मुनि भारीमाल पद युवराज पहिलाहो समापियो ॥ १३ ॥ सखर सेवा में हो खेतसीजी सुवनीत, सतजुगो नाम

अपर शोभावियो। पूर्ण त्यांरे हो पूजजी री प्रतीत चार तीर्थ माहिं जश तसु छावियो ॥ १४ ॥ उदैराम जी तपसी अधिक उदार, ऋष रायचन्दजी बालक वय राजता। जीवो मुनि हो भगजी गुण ना भण्डार स्वाम तणो हद सेवा सुसाझता ॥ १५ ॥ ए तो आखी हो तीन पचासमी ढाल शरियारी में स्वाम आया सुख कारणा। रूड़ी निसणो हो आगल वात रसाल जय जश करण भिक्खु जन तारणा ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

श्रावण मासे स्वामजी, पूनम लगे पिछाण।
सखरी गोचरी शहर में, आप करी अगवाण ॥ १ ॥
आवसग अर्थ अनोपम, लिख लिख ने अवलोय।
शिष्य ने आप सिखावता, जश धारी मुनि जोय ॥ २ ॥
श्रावण सुद छेहड़े सही, मुनि तणे तन माहीं।
कांइक कारण ऊपनो, फेरा तणोज ताही ॥ ३ ॥
तो पिण उठे गोचरी, गाम माहिं मुनिराय।
दिसा बाहिर जावे सही, लांबी गिण तीन काय ॥ ४ ॥
औषध लियो अणाय ने, कारण मेटण काम।
पिण कारण मिटियो नहीं, पूज समा परिणाम ॥ ५ ॥

॥ ढाल ५४ मीं ॥

(केते पूजी गोराज्या केते ईस पदेशी)

चर्म कल्याण चतुर सुणो, मास भाद्रवा मांयो ए सुखदायो ए। धर्म वृद्धि अति धर्म नी क भवियण

ए ॥ १ ॥ पजुसण में परवड़ा, वारु हुवे बखाणो ए सुविहाणो ए। दरशे तीन टंक देशना क मुनिवर ए ॥ २ ॥ सुन्दर वाण सुहामणी, निसुणे वहु नर नारो ए सुखकारो ए। चौथज आई चांदणी क ॥ मु० ॥ ३ ॥ पिंजर तन हीणो पड्यो, पर्म पूज्य पहिछाणयो ए। मन जाणयो हे आउ नेड़ो उनमानथी क ॥ मु० ॥ ४ ॥ स्वाम कहे सतजुगी भणी, थे सखर शिष्य सुविनीतो ए धर प्रीतो ए। साझ दियो संजम तणो क ॥ मु० ॥ ५ ॥ टोकर जी तीखा हूंता विनय वंत सुविचारी ए। हितकारी ए। भक्ति करी भारी घणी क ॥ मु० ॥ ६ ॥ भारमल जी सूं भेलप भली, रहीज रुड़ी रीतो ए। अति प्रीतो ए। जाण के पाछल भव तणी क ॥ मु० ॥ ७ ॥ सखर तीनां रा साझ सूं वर संजम उजवाल्यो ए। म्हें पाल्यो ए। प्रत्यक्ष ही शूरा पणै क ॥ मु० ॥ ८ ॥ चित्त समाधि रही घणी म्हारा मन मझारो ए। हुंशियारो ए। यां तीनां रा साझ थी क ॥ मु० ॥ ९ ॥ शिष्य सुवनीत हुवै सही गुरु रहे आणंदो ए। चित्त चंदो ए। देव जिनेंद्र दाखियो क ॥ मु० ॥ १० ॥ गुण ग्राही एहवा गुणी, पूज्य भीखण जी पेखो ए। दिल देखो ए। स्वाम गुणज्ञ सुहामणा क ॥ मु० ॥ ११ ॥ ऐसी कीजे प्रीतड़ी

जैसो भिक्खु भारी मालो ए। सुविशालो ए। सत जुगी टोकरजी सारिषो क ॥ मु० ॥ १२ ॥ जोड़ी वीर गोयम जिसी, पवर स्वाम शिष्य प्रीतो ए। हद रीतो ए। चाल सखर चौथा तणी क ॥ मु० ॥ १३ ॥ ए चौपनमी ढाल में, सखरो कह्यो संबंधो ए। प्रबंधो ए। स्वाम भिक्खु नो शोभतो क ॥ मु० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

साध श्रावक ने श्राविका, बहु सुणतां तिणवार।
सिखामण दे स्वामजी, हद सखरी हितकार ॥ १ ॥
वीर जी मोक्ष विराजिया, धार किया बखाण।
सोलह पहोर रे आसरे, सीख दीधी सुविहाण ॥ २ ॥
इण दुखम आरा मझे, स्वाम भिखणजी सार।
प्रत्यक्ष श्री जिन नी परे, आखी सीख उदार ॥ ३ ॥
सखर बुद्धि वाणी सखर, सखर कला सुखकार।
नीत सखर चित निरमले, वचन वदे सुविचार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ५५ वीं ॥

(आगे जातां अटवी आवे ए देशी)

जिम मुझ ने जाणता, म्हांरी प्रतीतो रे। तिम हिज राखज्यो, भारमालजी री रीतो रे। सीख स्वामी तणी ॥ १ ॥ सहु सन्त सत्यां रा, भारीमाल जी नाथो रे। आज्ञा आराधज्यो, मत लोपज्यो वातो रे ॥ २ ॥ यांरी आण लोपी ने, निकले गण बारो रे। तसु

गिणज्यो मति, चिहुं तीर्थ मझारो रे ॥ ३ ॥ यांरी आण आराधे, सदा रहे सुविनीतो रे। तसु सेवा करो, ए जिन मग रीतो रे ॥ ४ ॥ मैं पदवी आपी, भारलायक जाणी रे, भारमलजी भणी, शुद्ध प्रकृति सुहाणी रे ॥ ५ ॥ नीत चरण पालण री, भल ऋष भारीमालो रे। शंक म राखज्यो, शुद्ध साधु नी चालो रे ॥ ६ ॥ शुद्ध श्रमण सेवजो, अणाचार्‌यां सूं दूरा रे। सीख दोनूं धर्‌यां, हुवै मुक्ति हजूरा रे ॥ ७ ॥ अरिहंत गुरु आज्ञा लोपे कर्म जोगो रे। अप-छन्दा तिके, नहीं वंदण जोगो रे ॥ ८ ॥ उसन्ना ने पासत्था, कुशील्या प्रमादी रे। अपछंदा इणा, जिण आण विराधी रे ॥ ९ ॥ यां ने वीर निषेध्या, ज्ञाता में विशालो रे। संग करणो नहीं, वांधी जिनपालो रे ॥ १० ॥ आणंद लियो अभिग्रहो, जिण गण थी न्यारु रे। तसु वादूं नहीं, पहली वचन उचारु रे ॥ ११ ॥ अन्यमति ना देव गुरु, अथवा जमाली रे। तास नमूं नहीं, नहिं वंदूं न्हाली रे ॥ १२ ॥ वलि बिगर बोलायां, बोलण रो नेमो रे, आहार आपूं नहीं, अभिग्रह लियो एमो रे ॥ १३ ॥ अभिग्रह जिन आगल, आणंद ए लीधो रे। सप्तम अङ्ग में, शुद्ध पाठ प्रसिद्धो रे ॥ १४ ॥ रीत एहिज राखणी, चिउं

संग ने चारु रे। टालो कुड़ तणी, संग दूर निवारु रे ॥ १५ ॥ ए रीत आराध्यां पामो भव पारो रे। श्रीजिन सीखड़ी सरध्यां सुख सारो रे ॥ १६ ॥ सहु साध साधवी, वर हेत विशेषो रे रूड़ो राखजो, धरणुं नहीं द्वेषो रे ॥ १७ ॥ वलि जिलो न बांधणो, गुरु आण सुगामी रे। सीख प्रथम सही, दी भिक्खु स्वामी रे ॥ १८ ॥ गुरु आज्ञा लोपी, बांधे जे जिल्लो रे। अति अविनीत ते, दियो कर्मां टिल्लो रे ॥ १९ ॥ एकल सूंई खोंटो, इसड़ो अविनीतो रे। तसु समझायने राखणो शुद्ध रीतो रे ॥२०॥ दिल देख देखने दीख्या शुद्ध दीजो रे। वलि जिण तिण भणी, गण में म मुंडीजो रे ॥ २१ ॥ श्रद्धा आचार रो, कल्प सूत्र नो बोलो रे। गुरु बुद्धिवन्त री, राखो प्रतीत अमोलो रे ॥ २२ ॥ कोई बोल न बैसे, केवलियां ने भलावी रे। ताण कीजो मती, मन ने समझावी रे॥ २३ ॥ अपछंदे विण आज्ञा, नहिं थापणो बोलो रे गुरु आज्ञा थकी, तीखो गण तोलो रे ॥ २४ ॥ एक दो तीन आदि, निकले गण बारो रे। साध म सरध जो, शुद्ध सीख श्रीकारो रे ॥ २५ ॥ इक आज्ञा में रहिजो ए रीत परंपर रे। लिखत आगे कियो, सहु धरजो खरा खर रे ॥ २६ ॥ कोई द्रोष लगावी, वलि

बोले कूड़ो रे। प्रायश्चित ना लिये, तिण ने कर दीज्यो दूरो रे ॥ २७ ॥ शासण प्रवर्तावण, सिख दीधी स्वामी रे। और कारण नहीं, भल अन्तर जामी रे ॥ २८ सुणतां सुखदाई स्वामी ना बोलो रे। बहु सुणतां कह्या, आछा ने अमोलो रे ॥ २९ ॥ ऐसा स्वाम अनोपम गण तारक ज्ञानी रे। कहा कहिये तसु, बतका सुनिहानी रे ॥ ३० ॥ पचावनमी चारु, कहि ढाल रसालो रे। बात सुणी वलि, जय जश सुविशालो रे ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

सोभायण श्री स्वामजी, आछो अधिक अनुप।
हलुकर्मी धारे हिये, सखरो सीख सद्रुप ॥ १ ॥
नीर गंगा ज्यूं निर्मला, पूज तणा परिणाम।
निर्मल ध्यान निकलंक चित, समता रमता स्वाम ॥ २ ॥
पट युवराज सु आदि मुनि, पूछा करे सुजोय।
अछे भेद सूं आपरे, स्वाम कहे नहिं कोय ॥ ३ ॥
निर्मल वर्ण वर कर्ण निज, विमल सुधा सम वाण।
अमल दिये उपदेश, अब सुणजो चतुर सुजाण ॥ ४ ॥

॥ ढाल ५६ मी ॥

(सायर लहर सूं जाणे मींडक परदेशी)

भारीमाल शिष्य भारीजी, आदि साधां भणी, स्वाम कहे सुविचारीजी। वाण सुहामणी ॥ १ ॥

पर भव निकट पिछाणो जी । दीसे मुझ तणुं, मुझ भय मूल म जाणोजी, हर्ष हिये घणो ॥ २ ॥ घणा जीवां रे घट माह्यों जी । सम्यक्त रूपियो, म्हे बीज अमोलक वाह्यो जी । मग ओलखावियो ॥ ३ ॥ देश व्रत दीपायो जी, लाभ अधिक लियो । साधपणो सुखदायो जी बहु जन ने दियो ॥ ४ ॥ म्हे जोड़ां करी सूत्र न्यायो जी, शुद्ध जाणो सही । म्हारे मन रे मांह्योजी, उणायत ना रही ॥ ५ ॥ थे पिण थिर चित्त थापी जी, प्रभु पंथ पालजो । कुमति कलेश ने कापी जी, आतम उजवालजो ॥ ६ ॥ रायचन्द ब्रह्म-चारी ने जाणो जी, सीख दे शोभती । तूं बालक छै बुद्धिमानो जी, मोह कीजे मती ॥ ७ ॥ ब्रह्मचारी कहे वाणीजी, शुद्ध वच सुन्दरु । आप करो जन्म रो किल्याणो जी, हूं मोह किम करूं ॥ ८ ॥ वले स्वामी सीख दे सारोजी, सहु सन्ता भणी । आरा-धजो आचारो जी, मत चूको अणी ॥ ९ ॥ इरिया भाषा उदारो जी, अधिकी एषणा । वस्त्रादि लेतां विचारो जी, परठत पेखणा ॥ १० ॥ सखरी पांच सुमति जी, गुप्त गुणी धरो । दय सत शील सुदती जी, ममता मत करो ॥ ११ ॥ शिष्य शिष्यणी पर सोयो जी, उपग्रण ऊपरे । मुर्छा म कीजो कोयोजी,

प्रमाद ने परहरो ॥१२॥ पुद्गल ममत प्रसंगोजी, तन मन सूं तजी। संजम सखर सुचंगोजी, भल भावे भली ॥ १३ ॥ आछी सीख अनूपी जी, अति अभिरामजी। अमृत रस नी कुंपीजी, दीधी स्वामजी ॥१४॥ आखी ढाल उदारो जी, पट पचासमी। जय जश करण श्रीकारोजी, स्वामी मति समी ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

दीन्ह सखर दे स्वामजी, इद वाणी हितकार।
स्वाम वचन सुणतां छतां, चित पामे चमत्कार ॥ १ ॥
समता खमता सखर चित, दमता रमता देख।
नमता जमता निमल मुनि, बमता वंक विशेष ॥ २ ॥
भव समुद्र तिरवा भणी, भिक्खु भलेज भाव।
वृद्धि भाव इद चोर रस, जाणे तिरणरो दाव ॥ ३ ॥
वर वायक वाणी विमल, दायक अभय दयाल।
पद लायक भिक्खु प्रगट, नायक स्वाम निहाल ॥ ४ ॥

॥ ढाल ५७ मी ॥

(धन धन जंबू स्वामी ने एदेशी)

शिष्य भारीमाल सोहामणा, परम भक्ता पहिछाण हो मुणन्द। पण्डित मरण पेखी पूज रो, बोले एहवी वाण हो मु० धन धन भिक्खु स्वाम ने ॥१॥ धन धन निर्मल ध्यान हो मु० धन धन पवर शूरापणुं, धन धन स्वामी नो ज्ञान हो ॥ २ ॥ सखर स्वाम ना संग थी

मन हुंशियारी माहिं हो मु० अबे विरहो पड़े आपरो जाणे श्री जिणराय हो ॥३॥ प्रभु गोयम री प्रीतड़ी चौथे आरे पिछाण हो मु० प्रत्यक्ष आरे पंचमें भिक्खु भारीमाल री जाण हो ॥ ४ ॥ तिण कारण भारीमालजी, आखी अल्प सी वात हो मु० विरह तुमारो दोहिलो, जाणे श्री जगनाथ हो मु० ॥ ५ ॥ भिक्खु वलता इम भणे, थे संजम पालसो सार हो। निर अतिचारे निर्मलो, होसो देव उदार हो ॥ ६ ॥ महा विदेह क्षेत्र मझे, मुझ थकी मोटा अणगार हो मु० अरिहन्त गणधर आद दे, देखजो तसु दिदार हो ॥७॥ सतजुगी भाखे स्वाम ने, आप जांता दिसो झंड माहिं हो मु० स्वामी कहे सुणो साधजी, चित्त में झंड तणी नहीं चाहि हो ॥ ८ ॥ सुख स्वर्गादिक ना सहु, पुद्गल रूप पिछाण हो मु० पामला सुख पोचा घणा, ज्यांने जाणूं जहर समान हो ॥ ६ ॥ वार अनन्ती भोगव्या, अधिका सुख अहमन्द हो मु० तो पिण नहीं हुवो तृपतो, तिण कारण ए सुख फंद हो ॥ १० ॥ तिण सूं म्हारे झंड तणी, वंछा नहीं लिगार हो मु० मुझ मन एकन्त मोक्ष में, शाश्वता सुख श्रीकार हो ॥११॥ वैरागी एहवा मुनिवरु, जाणयो पुद्गल जहर हो मु० स्वाम सम्बन्ध सुणावतां, आवे

संवेग नी लहर हो ॥ १२ ॥ सम्वत सतात्रनमी सांभली, ढाल रसाल अपार हो मु० समरण भिक्खु स्वाम नो, जय जश करण ओंकार हो ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

सुख कारण तारण सुजन, कुगति निवारण काम ।
विघन विदारण अति पवर, सीख समापी स्वाम ॥ १ ॥
पंडित मरण सुकरण पर, धरण आराधक धाम ।
शिव वधू वरण रु तरण शुद्ध, पूज पर्म परिणाम ॥ २ ॥
निर्मल नीत शुद्ध रीत निज, पूज प्रथमहि पेख ।
अंतकाल आयां छतां, धार अधिक विशेष ॥ ३ ॥
समय जाण स्वामी सखर, आलोवण अधिकार ।
आतम शुद्ध करे आपरी, ते सुणजो विस्तार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ५८ मी ॥

(कोसी जल नहि भेदै तिम ज्यारे पदेशी)

स्वाम भिक्खु तिण अवसरै रे, आउ नेड़ो आयो जाण । करै आलोवण किण विधे रे, सखर रीत सुविहाण । भविक रे भिक्खु गुण रा भण्डार ॥ १ ॥ तस थावर जीवां तणी रे, हिन्सा करी हुवै कोय । त्रिविध २ कर तेहनो रे, मिच्छामि दुक्कडं मोय ॥ २ ॥ क्रोध मान माया करी रे, लोभ वशे अवलोय । झूठ लागो हुवै जेहनो रे, मिच्छामि दुक्कडं मोय ॥ ३ ॥ अदत्त जे कोई आचर्यो रे, ज्यांरा भेद अनेक

सुजोय। हद जिन आज्ञा लोपी हुवै रे, मिच्छामि दुक्कडं मोय ॥ ४ ॥ ममंत धरी हुवै मैथुन सूं रे, सुता जागतां सोय। मन वचन काय माठा तणो रे मि० ॥ ५ ॥ परिग्रह नवूं प्रकार नो रे शिष्य शिष्यणी उपधि पर सोय। त्रिविध २ ममता तणुं रे मि० ॥६॥ किणहि सूं क्रोध कियो हुवे रे, वलि क्रोध वशे वच कोय। करड़ी सीख किण ने कही रे ॥ मि० ॥ ७ ॥ मान माया लोभ मन में धस्यो रे, दिल धस्या राग द्वेप दोय। इत्यादिक पाप अठार नो रे ॥ मि० ॥ ८ ॥ राग कियो हुवे रागी थको रे, द्वेषी सूं धस्यो हुवे द्वेप। मन साचै हिवे मांहरै रे, वर मिच्छामि दुक्कडं विशेप ॥ ६ ॥ पांचूं आस्रव पाडुवा रे, लागो जाणयो किण वार। सांभल २ स्वामीजी रे, आलोया अतिचार ॥ १० ॥ पञ्च सुमति तीन गुप्ति में रे, पञ्च महाव्रत मझार। याद करे अतिचार ने रे, आलोवै भिक्खु अणगार ॥ ११ ॥ सहु जीवाजोनि संसार में रे, चउरासी लाख सुचिन्त। ज्यांरा भेद जुजूआ जाणजो रे, खमावूं धर खन्त ॥ १२ ॥ वड़ा शिष्य सुविनीत छै रे, अन्तेवासी अमोल। आगैं लहर आई हुवै रे, खमावे दिल खोल ॥ १३ ॥ वले संत अने सातियां मझे रे, कैकांने करड़ा देख। कठिण

सीख कड़वो कह्यो रे, खलावूं सु विशेष ॥ १४ ॥
श्रावक ने वले श्राविका रे, केई कठिण प्रकृति रा
कहाय। कठिण वचन कह्यो हुवै रे, खांत करी ने
खमाय ॥ १५ ॥ केई गण बारै निकल्या रे, साध
साधवी सोय। करड़ो काठो कह्यो हुवै रे, ज्यां सूं
खमत खामणा जोय ॥ १६ ॥ चन्द्रभाणजी थली
मझे रे, तिलोकचन्दजी ताम। कहिजो खमत
खामणा मांहरा रे, त्यां सूं पड़ियो बोहलो काम ॥१७॥
चरचा कीधी चूंप सूं रे, घणा जणा सूं बहु ठाम।
वच कठण कह्या जाणया तसु रे, खमावै ले नाम
॥ १८ ॥ केई धर्म तणा द्वेषी हुंतारे, छिद्रपेही अध्य-
वसाय। त्यां ऊपर खेद आई तिकारे, सगलां ने देऊं
खमाय ॥ १६ ॥ चऊं तीर्थ शुद्ध चलायवा रे, सीखा-
मण देता सोय। कठिनवचन जो कह्यो हुवे रे, मुझ
खमत खामणा जोय ॥ २० ॥ इण विध करि आलो
वणा, रे गिरवा महा गुणवंत। स्वाम भीखणजी
शोभता रे, पदवीधर पूज महंत ॥ २१ ॥ एहवी
आलोवण कानां सुणयां रे, आवे अधिक वैराग।
करे त्यांरो कहिवो किसूं रे, त्यांरे माथे मोटा भाग ॥
अठावनमी शोभती रे, आखी ढाल सुऐन। जय जश
करण भिक्खु भलारे चित्त सुणतां पामे चैन ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

इण विध करि आलोवणा, निर्मल निरतिचार।
स्वाम हुआ शुद्ध रीत सूं, अब अणशण अधिकार ॥ १ ॥
भाद्र शुक्ल पंचम भली, सम्वतसरी नो सार।
स्वाम कियो उपवास शुद्ध, चित उजल चौविहार ॥ २ ॥
अतुल तृषानी ऊपनी, अधिक असाता आय।
सखर आर्ण शूरा पणो, समचित सहिज स्वाम ॥ ३ ॥
पूज कियो छठ पारणो, औषध अल्प आहार।
पिण ते समो न परगम्यो, वमन हुवो तिण वार ॥ ४ ॥
तिण दिन तोनूं आहारना, त्याग किया तहतिक।
पुद्गल स्वरूप पिछाणियो, निर्मल स्वाम निरभीक ॥५॥

॥ ढाल ५६ मीं ॥

(राजा राघव रायरा राय पदेशी)

सातम आठम भिक्खु स्वाम जी. अल्प सो लियो अहारो। ततखिण त्याग कियो मन तीखे, हद पूजरो मन हुंशियारो ॥ भिक्खु स्वामी आप जिन मत अधिक जमायो ॥ १ ॥ खेतसीजी स्वामी कहे खांच कर, तरकै न करणा त्यागो। पूज कहे देही पतली पाड़णी, वारु विशेष चाहिजे वैरागो ॥ २ ॥ भाद्र शुक्ल नवमी दिन भिक्खु, कहे करूं आहार ना पचखाण। कहे खेतसीजी मुझ कर केरो, चर्म आहार लो पिछाण ॥ ३ ॥ अल्प आहार खेतसीजी आणियो, चाख किया पचखाणो। वारु मन राख्यो शिष्य

सुविनीत रो, पिण बहुल इछा मत जाणो ॥ ४ ॥ दशम दिन भारीमालजी विनवै, स्वामी आहार कीजै सुविहाणो । चाली चावल दश मोठ रे आसरे, चाख किया पच्चखाणो ॥ ५ ॥ इग्यारस आहार त्याग दियो मुनि, अमल पाणी उपरन्तो । मुझ हिव आहार लेतो मत जाणजो, कह्यो वयण अमोलक तन्तो ॥ ६ ॥ बारस दिन बेलो कियो पूज, तीन आहार तणा किया त्यागो । सखर संथारो कर्ण सूं स्वामी नो, बारु चढ़तो वैरागो ॥ ७ ॥ सामली हाट सूं उठ मुनीश्वर चलिया २ आयो । पकी हाट ने पका मुनीश्वर पको संथारो सुहायो ॥८॥ सयण शिज्यां कीधो सुखदाई. बारु पूज लियो विसरामो । इतले ऋष रायचन्दजी आय ने, रूड़ा वचन वदै अभिरामो ॥ ९ ॥ स्वामी कृपा कीजे दर्शण दीजिये, वढै ब्रह्मचारीजी विख्यातो । पूज स्हामुं जोवे नेत्र खोलने, हद मस्तक दीधो हाथो ॥ १० ॥ पूज ने कहै प्राक्रम हीण पड़िया, ऋषराय तणी सुण वायो । भिक्खु पहिलां तन तोल त्यारी था, सुण सिंह ज्यूं उभा मुनिरायो ॥ ११ ॥ भिक्खु कहे बोलावो भारीमाल ने, वले खेतसी जी ने विचारो । याद करंताई सन्त दोनूंई, झट आय उभा है तिवारो ॥ १२ ॥ नमोथुणो कियो अरिहन्त

सिद्धां ने, तीखं वच बोल्या तामो। बहु नर नारी सुणतां ने देखतां, संथारो पचख्यो भिक्खु स्वामो ॥ १३ ॥ शिष्य परम भक्ता कहे स्वामी ने, क्यूं न राख्यो अमल रो आगारो। पूज कहे आगार किसो हिवें, किसी करणी काया नी सारो ॥ १४ ॥ भाद्रवा सुदि बारस भली, तिथी सोमवार सुविचारो। अण-शण आदर्यो वेराग आणी ने, शुद्ध लेहलो दुघड़ियो सारो ॥१५॥ घणा जन आवन्ता गुण गावन्ता, बोलत बेकर जोड़ां। धिन २ हो थे मोटा मुनीश्वर कीधी बडां बडेरां री होडो ॥ १६ ॥ केई सनमुख आयां ने प्रणमें पाया, विकसत होवे विलासं। खांत करी ने स्वामी ने खमावता, हिवड़े आण हुलासं ॥ १७ ॥ धिन २ पूज रो धीरापणुं, धिन २ पूजरो ध्यानो। धिन २ स्वाम शूरा घणा सदरा, मन कियो मेरू समानो ॥ २८ ॥ आखी ए गुणसठमी ओपती, शुद्ध ढाले स्वाम संथारो। भल जय जशकर स्वाम भिक्खु नो, समरण महा सुखकारो ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

केका अभिग्रह पहवो कियो, यां शुद्ध मत काढ्यो सार।
छेहड़े आणशण आवसी, पको उतरसी पार ॥ १ ॥
इण विध अभिग्रह आदर्यो, भोला लोकां ताम।

बात सुणी कई पचखियो, अणशण भिक्खु स्वाम ॥२॥
द्वेषी था जिन धर्म ना, चित्त पाम्या चमत्कार।
जाण्यो ए मारग खरो, कई वांदे वारं वार ॥ ३ ॥
अति नर नारी आवता, गावत मुनि गुणग्राम ।
बाजार मांहि भमावता, सरावता धिन स्वाम ।

॥ ढाल ६० मी ॥

(स्वाम को सुजश घणो पदेशी)

स्वाम तणो संथारो सुणी हो, आवे लोक अनेक। कोड करी ने करै घणा हो, वारु वैराग विशेष ॥ स्वामी नो सुजश घणो ॥ १ ॥ कोई कहै संथारो सीझै स्वामी नो हो, त्यां लग काचा पाणी ना त्याग। कोई करै त्याग कुशील रा हो, वर चित्त आण वैराग ॥ २ ॥ केई अन्न आरम्भ न आदरै हो, केई करै हरी ना पचखाण ॥ ३ ॥ केई धर्म तणा द्वेषी हुन्ता हो, ते पण अचरज पाम्या तिणवार। अनमी कई आवी नम्या हो, स्वाम तणे संथार ॥ ४ ॥ पडिकमणो कीधां पछै हो, स्वाम भिक्खु सुविहाण। भारीमाल आदि शिष्य भणी हो, कहै वारु करो वखाण ॥ ५ ॥ शिष्य सुविनीत कहै सही हो, संथारो आपरे सोय। वखाण नो सूं विशेष छै हो, तब पूज्य बोल्या अव-लोय ॥ ६ ॥ किणहि आरजियां अणशण कियो हुवै

हो, तो करो वखाण त्यां जाय। मुझ अणशण माहें देशना हो, नहिं करो थे किण न्याय ॥ ७ ॥ वखाण कियो विस्तार सूं हो, शिष्य सुविनीत श्रीकार। भागवली भिक्खु तणो हो, मिलियो जोग उदार ॥८॥ परिणाम चढ़ता पूज रा हो, इण विध निकली रात। दिन तेरस हिव दीपतो हो, प्रगटियो प्रभात ॥९॥ गाम २ रा आवैं घणा हो, दर्शण करवा देख। जाणक मेलो मंडियो हो, वारु हर्ष विशेष ॥ १० ॥ गुण स्वामी ना गावता हो, आवता अति जन वृन्द। हिवड़े हर्ष हुलसावता हो, पामता परमानन्द ॥११॥ जश करमी था जीवड़ा हो, जय जश करता जन। धर्म पूज मुख पेखने हो, तन मन होय प्रसन्न ॥१२॥ धुर ही थी धर्म छाण ने हो, शुद्ध मग लियो सार। अन्त तांई उजवालियो हो, जिन मारग जयकार ॥१३॥ धोरी थे जिन धर्म ना हो, इम बोलै नर नार। शूर पणै सखरो कियो हो, स्वामी थें संथार ॥ १४ ॥ ऐ साठमी गुण आगली हो, रूड़ी ढाल रसाल। जय जश करण स्वामी तणो हो, वारु गुण विशाल ॥१५॥

॥ दोहा ॥

पाणी पीधो पूज जी, आफे चित उजमाल।
पोहर दिवस जाझो प्रगट, आयो थो तिण काल ॥ १ ॥

साध बैठा सेवा करे, आणी हर्ष अपार ।
श्रावक श्राविका स्वाम नो, देख रह्या दिदार ॥ २ ॥
भिक्खु रूप शुद्ध भाव सूं, ध्यावत निर्मल ध्यान ।
सकैतो जाणो स्वाम ने, उपनो अवधि सुज्ञान ॥ ३ ॥
साध श्राविक होवे सही, वैमानिक विख्यात ।
अवधि ज्ञान तसु उपजे, आगम वचन आख्यात ॥ ४ ॥
दिन चढ्यो पहोर देढ़ आसरे, सांभलतां सहु कोय ।
वचन प्रकाशे किण विधे, भल सुणिये भवि लोय ॥ ५ ॥

॥ ढाल ६१ मी ॥

हेमराज जी स्वामी कृत ।

(नमो अरिहंताणं नमो सिद्ध निरवाणं एदेशी)

साधु आवै साहमां जावो, मुनि प्रकाशे वाणं । वले साधवियां आवे वारै, स्वामी बोलै वचन सुहाणं ॥ भवियण नमो गुरु गिरवाणं, नमो भिक्खु चतुर सुजाणं ॥ १ ॥ के तो कह्यो अटकल उनमाने, के कह्यो बुद्धि प्रमाणं । के कोई अवधि ज्ञान उपनो, ते जाणे सर्वनाणं ॥ केई नर नारी मुख सूं इम भाखै, स्वामी रा जोग साधां में वसिया । इतले एक मुहूर्त्त आसरे, साध आया दोय तिसिया ॥ ३ ॥ विकसत २ साधु वांदे, चर्ण लगावै शीशं । नर नारी जाणे अवधि उपनो, साचो विश्वावीसं ॥ ४ ॥ स्वामी साधु आया जाणी, मस्तक दीधो हाथं । एटले दोय मुहूर्त्त आसरे, आयो साधवियां रो साथं ॥ ५ ॥ वैणी

रामजी साध वदीता, साथे खुशालजी आया। साध-
वियां वगतुजी जुमां डाहीजी, प्रणमे भिक्खु पाया
॥ ६ ॥ परचा ज्यूं ज्यूं आय पुगे छै नर नारी हर्षत
थावे। धिन हो धिन थे मोटा मुनीश्वर, आप तुले
कुण आवै ॥ ७ ॥ आया ते साधु गुण गावे, भांत २
प्रमाण चढ़ावे। थे मोटा उपगारी महिमा भारी,
सवरो सुजश सुणावे ॥ ८ ॥ थे पका २ पाखण्डो
हटाया, सूत्र न्याय वताया। दान दया आछा
दोपाया। वुद्धिवन्तां मन भाया ॥ ६ ॥ सावद्य निर्वद्य
भला निवेड़ा, कीधा वुद्धि प्रमाणं। सूत्र न्याय श्रद्धा
शुद्ध लीधो, धारो अरिहन्त आणं ॥ १० ॥ साधां
जाण्यो स्वामी सुतांने, घणी हुई छै वारं। आप कहो
तो वैठा करां हिव, जव भरियो कांय हुंकारं ॥ ११ ॥
वैठा कर साधु लारे वैठा, गुण स्वामी रा गावैं। वहु
नर नारी दर्शण देखी, मन में हर्षत थावै ॥ १२ ॥
आयो आउखो अण चिन्तवियो, वैठा २ जाणं।
सुखे समाधे वाह्य दिसत, चट दे छोड्या प्राणं ॥१३॥
अणशण आयो सात भगत नो, तीन भक्त संथारं।
सात पोहोर तिण माहे वरत्या, पको उतार्यो पारं
॥ १४ ॥ मांहडी सींवे दरजी पूगा, कहे सूई पग में
घाली। अचरज लोक पाम्या अधिको, चट स्वामी

गया चाली ॥ १५ ॥ सम्वत् अठारै साठे वर्षे, भाद्रवा सुद तेरस मंगलवारं । पूज पोंहता परलोक शिरियारी, गुण गावै नर नारं ॥ १६ ॥ दिन पाछलो दोढ पोहर आसरे, उण वेलां आऊखो आयो । दिवसे मरवो रात्रि जनमवो, कहै विरला ने थायो ॥१७॥

॥ दोहा ॥

संथारो कीधो सखर, सखर स्वाम श्रीकार ।
शुभ पणे सिभयो सखर, सखर सुजश संसार ॥ १ ॥
साधां तन वोसिरायनें, चिउं लोगस चित्त धार ।
कियो तदा शुद्ध काउसग्ग, इरु तिण दिन तज आहार ॥२॥
पूज तणो विरहो पड्यो, कठिण अधिक कहिवाय ।
याद कियां अरिहंत ने, समभावे सुख पाय ॥ ३ ॥
अहो अथिर संसार ए संजोग जठे विजोग ।
पूज सरीषा पुरुष था, पोंहता आज पर लोग ॥ ४ ॥
देख्या भिक्खु दिलकरी, वारु निसुणी वाण ।
याद करे ते अति घणा, जन गुण ग्राही जाण ॥ ५ ॥
चिउं तीर्थ आवी मिल्या, स्वाम तणे संथार ।
मास भाद्रवा रे मझे, अचरज ए अधिकार ॥ ६ ॥
प्रबल पुन्य ना पोरसा, प्रबल गुणागर जाण ।
पूज हुन्ता प्रगट पणे, परभव कियो पयाण ॥ ७ ॥

॥ ढाल ६२ मी ॥

(आनन्दा रे पदेशी)

स्वाम संथारो सीझियां गुणधारी रे, म्हेल्या मांढी रे मांहिं ॥ स्वाम सुखकारी रे ॥ तेरह खण्डी

मांहली तणी गु० महिमा कीधी अथाय स्वा ॥ १ ॥ रुपया सैंकड़ा लगाविया गु० अनेक उछालया लार भिक्खु आप भागी रे ॥ ए सावद्य किरतब संसार ना गु० तिणमें नहीं तन्तसार स्वा ॥ २ ॥ बात हुई जिसी वरणवे गु० समभावे सुविचार स्वा० तिण माहें पाप म ताणजो गु० दम्भ तजी दिलधार स्वा० ॥ ३ ॥ अति घन जन वृन्द आविया गु० आदरे सूंस अनेक स्वा० विविध वैराग वधावता गु० वारु आण विवेक स्वा० ॥ ४ ॥ पूज संथारो पेखने गु० गावे जन गुण ग्राम स्वा० धिन २ भिक्खू स्वामजी गु० नित्य प्रत लीजे नाम स्वा० ॥ ५ ॥ आदेज वचन सु ओपतो गु० स्वामी सिंघ सरूप स्वा० ख्यिावन्त स्वामी खरा गु० सखरा स्वाम सरूप ॥ ६ ॥ नीत स्वाम नी निरमली गु० प्रीत स्वाम गुण पूर स्वा० जीत लिया जन दुरमती गु० स्वाम वदीत सनूर ॥७॥ स्वाम बुद्धि ना सागरू गु० निरमल मेल्या न्याय स्वा० प्रत्यक्ष आरे पांचमें गु० जिन मत दियो जमाय ॥ ८ ॥ उद्यमी स्वामी अति घणा गु० स्वाम सुमति सुखदाय स्वा० स्वाम गुपति हद शोभती गु० निरमल स्वाम नरमाय ॥ ९ ॥ मणिधारी स्वाम महा मुनि गु० स्वाम प्रबल संतोप स्वा० जग तारक

स्वाम जाणजो गु० पूरण स्वाम नो पोप ॥ १० ॥ दिशावान स्वाम दीपतो गु० अधिकी बुद्धि उत्पात स्वा० मिथ्या तिमिर सुमेटवा गु० सूर्य स्वाम साक्षात ॥ ११ ॥ सखर भिक्खु नाम सांभली गु० पाखण्ड भय पामंत स्वा० जश भिक्खु नो जगत में गु० देश २ में दीपंत ॥ १२ ॥ स्वाम तिलक शासण तणो गु० स्वाम आज्ञा सु उवेख स्वा० स्वाम समी हद शोभता गु० स्वाम दर्मीसर देख ॥ १३ ॥ स्वाम सुदान दीपावियो, गु० स्वाम सुज्ञान सरद्ध स्वा० स्वाम सुजान शोभावियो गु० स्वाम सुमान मरद ॥ १४ ॥ द्रव्य भाव स्वाम देखाविया गु० स्वाम आस्रव ओल-खाय स्वा० पुन्य पाप ने परखने गु० स्वाम दिया सरधाय ॥ १५ ॥ स्वाम संवर अरु निरजरा गु० बंध मोक्ष पहिछाण स्वा० स्वाम जीवादिक जुजूआ गु० स्वाम देखाया सुजाण ॥ १६ ॥ स्वाम दया ओल-खाय ने गु० अति घन कोध उद्योत स्वा० स्वाम सावद्य निरवद्य सोधने गु० घण घट घाली जोत ॥ १७ ॥ शुभ जोगां ने स्वाम जी गु० ओलखाया हद रीत स्वा० आसता स्वाम नी आदर्यां गु० जाय जमारो जीत ॥ १८ ॥ इन्द्रीवादी ओलखावियो गु० कर कालवादी निकन्द स्वा० प्रज्यावादी पिछाणियो

गु० स्वाम साचेलो चन्द ॥ १६ ॥ आचार सरधा ऊपरे गु० स्वाम शोध्या शुद्ध न्याय स्वा० स्वाम सूत्र वच शिर धरी गु० व्रत अव्रत बताय ॥ २० ॥ सोध्या तो लाधे नहीं गु० स्वाम सरीषा साध स्वा० करोड़ो काम पड्यां चरचा तणो गु० आवेला भिक्खु याद ॥ २१ ॥ स्वाम भीखणजी सारीखा गु० भरत क्षेत्र रे मांहि स्वा० हुवा ने होसी वले गु० हिंवड़ां नहिं देखाय ॥ २२ ॥ एसा भिक्खु ऋष ओपता गु० याद करे नर नार स्वा० पूज गुणा रो पंजारो गु० स्वाम सकल सुखकार ॥ २३ ॥ स्वाम तणो नाम सम्भर्यां गु० आवे हर्ष अपार स्वा० तो प्रत्यक्ष नो कहिवो किसूं गु० पामे तन मन प्यार ॥ २४ ॥ शरियारी में स्वामजी गु० साटे वर्ष संथार, मास भाद्रवा में भलो गु० जीत गर्भ में जिवार ॥ २५ ॥ पञ्चम काले हूं ऊपना गु० पिण इक मुझ हर्ष पर्म स्वा० आप शुद्ध मग धार्यां पछे गु० जन्म थई पायो धर्म ॥२६॥ आशा पूरण आप छो गु० मेटण सकल संताप स्वा० स्मरण नित्य प्रति स्वाम नो गु० जपूं तुम्हारो जाप ॥ २७ ॥ व सठमी ढाल ओपती गु० समरया स्वाम सुजाण स्वा० जय जश करण भिक्खु भला गु० पूरण प्रीत पिछाण ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

चरण तयालिस विचरिया, जाझो कांयक जोय ।
चारित्र पाल्यो चूंप सूं, हर्ष हिये अति होय ॥ १ ॥
अधिक बल इद्रयां तणो, निरमल देह निरोग ।
भिक्खु सूरत अति भली, अरु तांसो उपयोग ॥ २ ॥
सत्तर चौमासा साम ना, बाह अधिक विशाल ।
सांभलजो भवियण सहु, चरम सहित चौमाल ॥ ३ ॥
आठ चौमासा आगे किया, असल नहिं अणगार ।
सतरा सूं साठा लगे, वरत्यो शुद्ध व्यवहार ॥ ४ ॥
किहां २ चौमासा किया, जूजुआ नाम सुजाण ।
संक्षेपे निरणय सहु, आंखू उज्झम आण ॥ ५ ॥

॥ ढाल ६३ मीं ॥

(सीता आवे रे धर राग पदेशी)

शहर केलवे पट चोमासा, सतरे इकवीसे सोय । पच्चीसे अड़तीसे गुणपच्चासे अठावने अवलोय ॥ भिक्खु भजले रे धर भाव ॥ १ ॥ चारु एक चौमासो वड़लु वरस अठारै विचार । राजनगर वीसे शुद्ध रीते, कियो घणों उपकार ॥ २ ॥ दोय चौमासा किया दीपता, पवर कंटाल्ये पिछाण । चौवीसे अठावीसे चारु, जन्म भूमि निज जाण ॥ ३ ॥ वगड़ी तीन चौमासा चारु, सतवीसै सुविशेष । तीसै अरु छतीसै त्यां द्रव्य दीख्या महोछव देख ॥ ४ ॥ गढ़ रिणत भंवर किलारी तलेटी, नगर माधोपुर न्हाल । दोय

चौमासा किया दीपता, इकतीसे अड़ताल ॥ ५ ॥
दोय चौमासा किया दीपता, प्रगट शहर पींपार।
चउतीसे पैंतालीसैं वर्षे, कियो घणो उपगार ॥ ६ ॥
एक चौमासो शहर आंवेट में, वर्ष पैंतीसे विचार।
सैंतीसै पादु सुखदाई, भिक्खु गुण भण्डार ॥ ७ ॥
सोजत शहरे कर्यो स्वामजी, वारु एक चौमास।
वर उपगार तेपने धर्म वृद्धि, हेम चरण तिण वास ॥
८॥ श्रीजी दुवारे तीन चौमासा, तसु पुर नम्प तयाल।
पवर पचासै छपनै पूरण, वर उपगार विशाल ॥ ६ ॥
पुर में दोय चौमासा प्रगट, स्वाम किया सुविहाण।
सैंतालीसे वर्ष सतावने, जुओ छोडायो जाण ॥ १० ॥
शहर खेरवे पांच चौमासा, छावीसै वतीसे छाण।
वर्ष इकताले अरु छयाले, बलि चौपने जाण ॥ ११ ॥
सात चौमासा पाली सहरे, तेवीसे तेतीसे थाट।
चालीसै चमाले बावने, पञ्चावने गुणसाट ॥ १२ ॥
सात चौमासा शरियारी में, उगणीसै बावीसै सार।
गुणतीसे गुणाल वयाल एकावने, साठे कियो संथार
॥ १३ ॥ पनरे गाम चौमासा प्रगट, स्वाम किया
श्रीकार। ज्ञान दिवाकर घण घट घाली, मेट्यो
भ्रम अंधार ॥ १४ ॥ श्री वर्द्धमान तणो शासण,
सखरो दीपायो स्वाम। बहु जीवां ने प्रतिवोधी ने,

पोंहता परभव ठाम ॥ १५ ॥ सुख कारण तारण भव सारण, विघन विदारण वीर। नरक निवारण जनम सुधारण, सखरा स्वाम सधीर ॥ १६ ॥ समता दमता खमता रमता, नमता जमता न्हाल। तमता भ्रमता वमता तन मन गमता वचन विशाल ॥ १७ ॥ आप उजागर गुण मणि आगर, साधर स्वाम सुजाण। वयण सुधावागर धर्म जागर, नागर नाथ निध्यान ॥ १८ ॥ भरम विहण्डन दुरमति खण्डन, महि मण्डन मुनिराज। कुमति निकन्दन मन आनन्दन, पूज भवो दधि पाज ॥ १९ ॥ सुमती करण अघ हरण स्वामजी, शिव वधू वरण सनूर। भव दधि तरण करण सुख सम्पति, चरण धरण चित्त शूर ॥ २० ॥ परम धरम भज भरम करम तज, शरम नरम उभ साज। शिव पद अचरम आप आराधण, रूडै भिक्खु ऋषराज ॥ २१ वर वायक पद लायक वारु, नायक नाथ निहाल बोधि पसायक धरम वधायक, दायक स्वाम दयाल ॥ २२ ॥ ज्ञान गम्भीरा सखर सधीरा, पट पीहरा तज खार। हिवड़ै स्वाम अमोलक हीरा, तोड़ जंजीरा तार ॥ २३ ॥ जप तपनी तरवारे झटको पाखण्ड पटको पैल। समय सुलटको गुण नो गटको मटको मन को मेल ॥ २४ ॥ ऐसा भिक्खु आप ओजागर

अवतरिया इण आर। स्वाम जिसा चौथै आरे पिण, विरला संत विचार ॥ २५ ॥ जन्म किल्याण कंटालयो जाणो, शरियारी चरम किल्याण। द्रव्य दीख्या महोछव वगड़ी में जोड़ै ए त्रिहुं जाण ॥ २६॥ स्वाम भिक्खु हिवड़े संभरियां, हियो तन मन हुलसाय। सूक्ष्म बुद्धि करी सुविचार्‌यां, विमल कमल विकसाय ॥ २७ ॥ भाद्र शुक्ल तेरस दिन भिक्खु, परभव कियो पयान। तिथे चउदश धरती धूजी अति, न्याय जाणै बुद्धिवान ॥ २८ ॥ तीन प्रकारे धरती धूजै, ठाणांग तीजै ठाण। भेद जुजूआ श्री जिन भाख्या, समझै सखर सयाण ॥ २९ ॥ घर में वर्ष पचीस आसरै, आठ भेष में तास। पछै संजम ले परभव पोंहता, चमालीस में वास ॥ ३० ॥ सर्व आउ सतंतर वरष आसरे, साध्यो भिक्खु स्वाम। जीव घणा समझाविया रे, कीधो उत्तम काम ॥ ३१ ॥ साध साधवी स्वाम छतां आसरे, एक सौ चार बोद्धि। देशव्रत दीधो वहुने, सखरी रीत सुशोध ॥ ३२ ॥ अड़ती सहंस आसरे कीधी, युक्ति न्याय सूं जोड़। मुरधर मेवाड़ ढूंढार हाडोती, विचर्‌या शिरमणि मोड़ ॥ ३३ ॥ राम नाम ज्यूं रटे स्वाम ने मुझ मन अधिक निहोर। हंसा मानसरोवर हरषे, चित्त जिम चन्द

चकोर ॥ ३४॥ चात्रक मोर पपइया घन विन, गरजो ध्यान गगन। राग विलासी राग आलापे, मुझ भिक्खु में मन ॥ ३५ ॥ पतिव्रता समरे जिम पिउ ने, गोप्यां रे मन कान्ह। तंबोली रा पान तणी पर, धरूं स्वाम नो ध्यान ॥ ३६ ॥ आशा पूरण आप तणा गुण, कह्या कठा लग जाय। सागर जल गागर किम मावै, किम आकाश मिणाय ॥ ३७ ॥ श्री वीर तणे पट स्वाम सुधर्मा, भिक्खु पट भारी-माल। रायचन्द ऋष तीजै पाटे, दाख्यो आगुंच दयाल ॥ ३८ ॥ आप तणा गुण हूं किम विसरूं, आप तणो आधार। स्मरण आप तणो नित्य समरूं, आप दयाल उदार ॥ ३९ ॥ नाम आपरो घट भींतर मुझ जपूं आपरो जाप। तुझ नामे दुख दोहग दूरा, कटै पाप सन्ताप ॥ ४० ॥ मन वंछित मिलिये तुझ स्मरण, साध्यां सेती सोय। भजन तुम्हारो भय भव भंजन, हर्ष अनोपम होय ॥ ४१ ॥ मंत्राक्षर जिम स्मरण मोटो, परख्यो म्हें तन मन। इह भव परभव में हितकारी, भिक्खु तणो भजन ॥ ४२ ॥ नमो २ भिक्खु ऋष निरमल, मोक्ष तणा दातार। स्मरण स्वाम तणो शुद्ध साध्यां, शिव सुख पामें सार ॥ ४३ ॥ हूंस घणा दिन सूं मुझ हूंती, आज फली

मन आश। भिक्षु यश रसायण नामें, ग्रंथ रच्यो सुविलास ॥ ४४ ॥ विस्तार रच्यो भिक्खु मुनिवर नो, सुणियो तिण अनुसार। भिक्षु दृष्टन्त हेम लिखाया, देखी ते अधिकार ॥ ४५ ॥ वेणीरामजी हेम कृत वर, भिक्खु चरित सुपेख। इत्यादिक अवलोकी अधिको, ग्रंथ रच्यो सुविशेष ॥ ४६ ॥ अधिको ओछो जे कोई आयो, विरुद्ध आयो हुवे कोय। सिद्ध अरिहन्त देव री साखे, मिच्छामि दुक्कड़ं मोय ॥ ४७ संवत उगणीसै आठै आसोज, एकम सुदि सार। शुक्रवार ए जोड़ रची, बीदासर शहर मझार ॥ ४८ ॥ तेसठमी ढाले स्वामी समर्या, कर्म काटण रे काम। कर जोड़ी ऋष जीत कहै, नित्य लेऊं तुम्हारो नाम ॥४९॥

॥ कलश ॥

मतिवन्त सन्त महन्त महा मुनि, तन्त भिक्खु ऋष तणा। गुण सघन गाया परम पाया, हद सुहाया हियै घणा ॥ तज जंत्र मंत्र सुतंत्र लौकिक, भज ए मंत्र मनोहरु। सुख सद्म पद्म सुकरण जय जश नमो भिक्खु मुनिवरु ॥

॥ सम्पूर्णम् ॥